श्यामला

संस्कृत

कक्षा 10

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉंच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Al-pha Numeric Code दिया गया है।

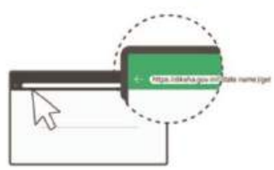

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

State Council of Educational Research & Training Chhattisgarh, Raipur

For Free Distribution

प्रकाशन वर्ष :– 2019

संचालक :– एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

कार्यक्रम समन्वयक :– डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मार्गदर्शक :– डॉ. पूर्वा भारद्वाज, दिल्ली

विषय समन्वयक :– बी. पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक

लेखक समूह :– श्री बी. पी. तिवारी, श्री ललित कुमार शर्मा,
श्री रतिराम पटेल, डॉ. राजकुमार तिवारी,
श्री पीलाराम साहू, श्री पुरूषोत्तम देशमुख
श्री त्रिपुरारि कुमार ठाकुर

R6B4GA

चित्रांकन :– राजेन्द्र ठाकुर

आवरण एवं पृष्ठसज्जा :– रेखराज चौरागड़े, सुरेश कुमार साहू

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्रस्तावना

उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना है। संस्कृत शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना व मानवीय मूल्यों का सतत् विकास करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुरुप छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में ज्ञानात्मक अवबोधात्मक अनुप्रयोगात्मक एवं विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभूतियों में बिलासाबाई एवं स्वामी आत्मानंद को स्थान दिया गया है। पाठ्यपुस्तक में गद्यपाठ, पद्यपाठ, संवाद पाठ, कथापाठ, वैज्ञानिकपाठ, पर्यावरण–पाठ वार्तालाप पाठ को विशेष महत्त्व दिया गया है। पाठों में सरल संस्कृत अभ्यास प्रश्न व क्रियाकलाप (गतिविधि) को शामिल किया गया है। छात्र संस्कृत को व्यवहारगत बनाकर संस्कृत में सम्भाषण कर सकें ऐसा प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में राष्ट्रीय स्तर के एन.सी.ई.आर.टी. आदि की पाठ्यपुस्तकों का सहयोग व मार्गदर्शन लिया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पाठ्यपुस्तक को स्वरुप प्रदान करने में जिन विशेषज्ञों की सहभागिता रही है परिषद् उनके प्रति आभार प्रकट करती है। निश्चय ही यह पुस्तक छात्रोपयोगी सिद्ध होगी। नवीन पुस्तक को और अधिक प्रभावी बनाने में विद्वजनों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और

प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

भूमिका

भाषायी इतिहास की दृष्टि से संस्कृत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषाओं में एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिकयुग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। इसकी महिमा को देखकर इसे देवभाषा कहा गया है। यह भाषा भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है।

संस्कृत भाषा का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वेद आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक मात्र साधन है। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें संस्कृत भाषा का योगदान सर्वोपरि रहा है।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य :–

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना, जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर छात्र समझ सकें एवं मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दे सकें।
2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रो ंमें अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं प्राचीन एवं नवीन रचनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिकमूल्यों का विकास कराना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए दशम कक्षा की श्यामला संस्कृत सामान्य पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें प्राचीन रचनाओं के साथ–साथ आधुनिक रचनाओं का भी समावेश किया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में पाठ का आरंभ वार्तालाप से किया गया है। जिससे छात्रों को विषय प्रवेश में सरलता एवं रोचकता का अनुभव हो। छात्रों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में शब्दार्थ दिये गये है इससे छात्रों को संस्कृत के नवीन शब्दों के अर्थ जानने में सुविधा हो। कतिपय पाठों में श्लोकों का अर्थ बोध कराया गया है ताकि छात्र श्लोकों के भावों को सरलता से समझ सके। पाठों में यथा स्थान चित्रों का समावेश किया गया है फलस्वरुप छात्र विषयवस्तु की अवधारणा से अवगत हो सके तथा अपनी बेहतर समझ बना सके।

पाठ्यपुस्तक के अंत में व्याकरणखण्ड है। उसमें छात्रों की बोधक्षमता को दृष्टिगत रखते हुए संक्षेप में व्याकरण की विविध विधाओं को रखा गया है, जिससे छात्र कौशलात्मक प्रश्नों को हल करने प्रवीणता अर्जित कर सकें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को छात्रों के अनुरुप सृजित करने का भरपुर प्रयास किया गया है, तथापि इसे और अधिक छात्रोपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

पाठ्यक्रम

(अ) व्याकरण खण्ड

1. शब्द रुप :–

1. अजन्त :– जनक, कवि, शिशु, सखि। प्रीति, कुमारी, पुत्री,स्वसृ। ज्ञान, द्वार,उदर।
2. हलन्त :– भवत् विद्वस्, सरित्, जगत्।
3. सर्वनाम :– अस्मद् युष्मद्, यत्, तद् किम्।
4. संख्यावाची :– 101 से 150 तक

2. धातु रुप :–

वृत्, रुच्, नृत्, क्रुध्, लिख् मिल्, कृ, कथ्, भक्ष्। (प्रचलित पाँच लकारों में)

3. सन्धि :–

1. व्यंजन सन्धि :– अनुस्वार, परसवर्ण और जश्त्व।
2. विसर्ग सन्धि :– उत्व, सत्व, रुत्व, लोप।

4. समास :–

समास एवं समास के भेद।

5. प्रत्यय :–

1. कृदन्त :– शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।
2. तद्धित :– त्व, तल्, ठक् स्त्री प्रत्यय (टाप्, ङीप्)

6. अव्यय :–

अव्यय परिचय, पहचान एवं प्रयोग।

7. उपसर्ग :–

उपसर्ग परिचय एवं प्रयोग।

8. कारक प्रकरण :–

उपपदविभक्तियों का प्रयोग (विशेषविभक्ति प्रयोग)

1. द्वितीया विभक्ति :– अभितः, परितः सर्वतः, उभयतः प्रति, निकषा।
2. तृतीया विभक्ति :– सह, साकं, सार्धं, समं (के साथ) सदृशः अलम् (निषेधार्थ)
3. चतुर्थी विभक्ति :– नमः स्वस्ति,स्वाहा, अलं (समर्थ अर्थ)। दा, रुच्, क्रुध् इर्ष्य धातु।
4. पंचमी विभक्तिः– बहिः विना, ऋृते, तरप्। भी, त्रा, प्र–भू धातु।
5. षष्ठी विभक्ति :– सम,सदृश, तुल्य (समान) तमप्।
6. सप्तमी विभक्ति :– कुशलः निपुणः प्रवीणः। स्निह, अभिलष् धातु।

9. वाच्य –प्रकरण :– वाच्य परिचय एवं परिवर्तन। (लट्लकारों में)

10. पत्र लेखन :–

1. प्राचार्य को अवकाश, स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र, अंक सूची द्वितीय प्रति के लिए पत्र एवं शुल्क मुक्ति हेतु पत्र।
2. पुस्तक प्राप्ति हेतु प्रकाशक को पत्र।
3. पारिवारिक पत्र।

11. अपठित अंश :– गद्य या पद्य अपठित अंश।

12. अशुद्धि शोधन :– वर्तनी एवं वाक्य रचनागत अशुद्धियों का शुद्धिकरण।

13. निबंध रचना :– 10 सरल संस्कृत वाक्यों में निबंध लिखना।

(विषय – सदाचार, महापुरुष, पर्व, क्रीड़ा, कवि, मेरा प्रदेश, पर्यावरण, ग्राम्य जीवन, दिनचर्या संबंधित)

(ब) पाठ्यपुस्तक खण्ड

स्वीकृत नवीन पाठ्यपुस्तक श्यामला **कक्षा 10 वीं**

(स) प्रायोजना कार्य

(क) मौखिक कार्य :–

1. **श्लोकोच्चारण** :– उचित गति, यति, लय आदि के साथ श्लोकों का उच्चारण।
2. **गद्य वाचन** :– उचित आरोह अवरोह एवं भाव भंगिमा के साथ वाचन।
3. **समाचार वाचन** :– किसी दिन का समाचार एकत्रित कर वांछित शैली में समाचार वाचन।
4. **चित्राभिव्यक्ति** :– किसी चित्र, दृश्य आदि को देखकर अभिव्यक्ति।

(ख) लिखित कार्य :–

1. **दृश्य वर्णन** :– किसी चित्र, दृश्य आदि के आधार पर कहानी या अनुच्छेद लिखना।
2. **शब्दकोश निर्माण** :– पुष्प, फल, वृक्ष, पशुपक्षी, वादन, वस्त्र, परिधान दिन, माह, ऋतु आदि के नामों का संस्कृत में संकलन करना तथा सरल संस्कृत में वाक्य निर्माण करना।
3. **भित्ति पत्रिका** :– समाचार संकलित कर भित्ति पत्रिका बनाना।
4. **अन्त्याक्षरी संकलन** :– श्लोकों एवं सूक्तियों द्वारा वर्णमाला अनुक्रम में अन्त्याक्षरी की रचना करना।
5. **समय गणनाः** – दिन, सप्ताह, माह आदि के नामों का लेखन करना।
6. **चित्र संकलन** :– संस्कृत के महाकवियों एवं महापुरुषों के चित्रों का संकलन करना।

अनुक्रमणिका

स.क्र.	पाठ		पृष्ठ क्रमांक
	अभ्यर्थना	–	01
1.	वार्तालापः	– संवाद पाठः	02–09
2.	लोष्ठश्रृगालयोः मित्रता	– लोककथा गद्यपाठः	10–15
3.	क्रियाकारककुतुहलम्	– पद्यपाठः	16–21
4.	बिलासा	– गद्यपाठः	22–25
5.	यक्षयुधिष्ठिरसंवादः	– पद्यपाठः	26–30
6.	प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्	– संवादगद्यपाठः	31–37
7.	सुभाषितानि	– पद्यपाठः	38–42
8.	स्वामी आत्मानंदः	– गद्यपाठः	43–46
9.	ओदनं सूक्तम्	– पद्यपाठः	47–51
10.	परिवारः लघु एव वरम्	– संवादपाठः	52–58
11.	विचित्रः साक्षी	– गद्यपाठः	59–65
12.	हेमन्तवर्णनम्	– पद्यपाठः	66–69
13.	यात्रामंगलम् प्रति	– गद्यपाठः	70–74
14.	व्याकरण खण्ड	–	75–184

QYYVBN

vH;Fkuk

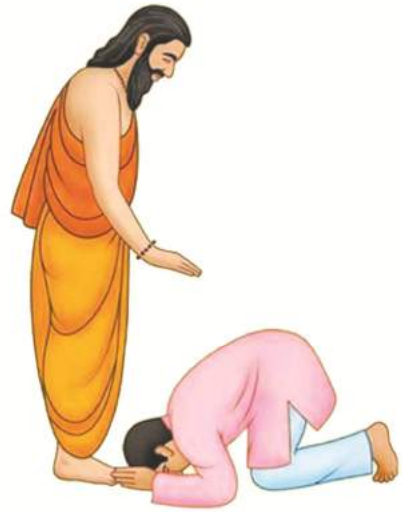

lg ukoorq lg ukS HkuDrq lgoh;Z djokogSA
rstfLo ukoa/khreLrq ek fof}"kkog AA 1AA
l³xPN/oa lon/oa la oks eukafl tkurke~A
noka Hkkxa ;Fkk iwoZ latkukuk mikl rs AA 2AA
x#cZ gek x#fo".kq x#nsok eg'ojk%A
x# lk{kkr~ ijcze rLeS Jhxjo ue% AA 3 AA
loZ HkoUrq lf[ku% loZ lUrq fujke;k%A
loZ Hknzkf.k Ik';Urq ek df'pn n%[k HkkxHkorAA 4AA

HkkokFkZ

ge yksx ,d lkFk pysa lkFk&lkFk Hkkstu djsa ge yksx lg;ksx iwoZd viu cy &ijkØe dk mUur djsaA gekjk iBu&ikBu rstLoh gks] ge yksx vkil esa dHkh }s"k u djsa vFkkZr lnk feydj jgsaA AA 1 AA
ge yksx lkFk&lkFk vkxs c<+s pysa vkil esa iesa ls cksysa ge lc ,d nljs ds eu dks vPNh rjg ls le>sa] tSls nork vkjs gekjs iwoZt ,d nljs ds Hkkx dks le>rs gq, viuk v'k dks xg.k djrs Fks oSls gh ge Hkh djsaA AA 2AA
x# cgek g] x# fo".k g] x# no g] x# eg'oj ¼f'ko½ g] x# lk{kkr~ ijcze gS mu x# dks ueLdkj gSA AA 3 AA
lHkh lq[kh gks] lHkh fujksx gks] lHkh dY;k.k n[ks] dksbZ n%[k dk Hkkxh u gks AA 4 AA

iFke% ikB%

okrkyki% ¼[k.M&v½

1- fe=L; ifjp;%

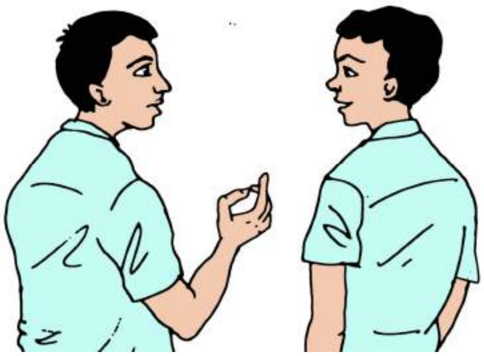

Lkjkoj% & uek ue%] Hkor% fd uke vfLr\
foHko% & ee uke foHko% vfLrA
l jkoj% & fd ro fi;fo"k;%\
foHko% & lLdre bfr ee fi;fo"k;%A
l jkoj% & Hkoku d= xPNfr\
foHko% & vg txnyij xPNkfeA
l jkoj% & dFke\
foHko% & cLrjL; lkUn;l n"V xPNkfeA
l jkoj% & cLrj cgfu n'kuh;kfu LFkykfu lfUrA fd n'kuh;LFky n"Ve bPNfl\
foHko% & vg rhjFkx<iikr n"Ve bPNkfeA

2- d{kk;k Nk=k.kk lEHkk"k.ke

Ok'khe% & unhe! Ro fd djkf"k\
Uknhe% & vg lLdr iBkfeA
Ok'khe% & 'o% lk;dky Hkoku d= fefy";fr\
unhe% & 'o% lk;dky vg Loxg fefy";kfeA
Ok'khe% & unhe! Hkoku lR; onfr fde\
unhe% & Hkoku t'kij xfe";fr] ij'o% vkxfe";frA
Ok'khe% & vg r foLer%A
uhjt% & fd'ku ! v| ee xge vkxPNrA lE;d ifB";ko%A
fd'ku% & HkoUr% ee xge vkxPNUrA lo fefyRok ØhfM";ke%A

3- x#&f'k";;k% laokn%

x# & Hkor% fd uke vfLr\

f'k";% & egkn;! Eke uke lathoA vfLrA

x# & Hkoku drq vkxPNfr\

f'k";% & vg jk;iqjuxjkr vkxPNkfeA

x# & ro firq% fd uke vfLr\

f'k";% & egkn;! Eke firq% uke egUnz% vfLrA

x# & Ro dL;k d{kk;k iBfl\

f'k";% & vkeA vg n'kE;k d{kk;k iBkfeA

4- m|ku okrkyki%

j.k/khj% & j.kohj! Ro d= xPNfl\

j.kohj% & vge m|ku ifr xPNkfeA

j.k/khj% & fdeFke\

j.kohj% & Hke.kkFke\

j.k/khj% & ikr%dky Hke.k eáe vfi jkprA

j.kohj% & rfg Hkoku pyrA

j.k/khj% & ck<e! vgefi pykfeA

5- i;kojj.kL; j{k.ke

itk & Hkk fi;! Ro fd Ik';fl\

fi;k & ,rku o{kku i';kfeA

itk & ,rku o{kku d vkjkfiroUrq\

fi;k & vLekd iootk% vkjkfiroUrqA

itk & vLekde vfi dÙkO; orr]
o; vfi ikniku jki;keA

fi;k & Ro lR; dFk;flA

itk & fd Ro Qykfu [kkfnre bPNfl\

fi;k & vkeA

itk & rfg Roe vfi ,d iknie vkjki;A

6- ØhMkfo"k; lEHkk"k.ke

ioj% & i[kj! Ro d= xPNfl\

i[kj% & vge m|ku ifr XkPNkfeA

ioj% & fdeFke\

i[kj% & ØhMkFkeA

ioj% & ikr%dky ØhMu eáe vfi jkprA

i[kj% & rfg Hkoku e;k lg ,o pyrA

ioj% & ufg] vg Lo fi=k lg miou xPNkfeA

i[kj% & mfpre!] 'o% vkok ifrfnu ikr% ØhMuk; m|ku ifr xfe";ko%

7- ekrk&i=;k% lEHkk"k.ke

ekrk & ekfgr! fd djkf"k Roe\

i=% & lLdr iBkfe ekr%A

ekrk & Ro;k Hkkstu dr fde\

i=% & vke

ekrk & vki.k xPNfl fde\

i=% & ekr% 'kh?k xPNkfeA fde vku;kfu rr%A

8- uxj& Hke.ke

ijkx% & Hki'k! Ro Hke.kk; d= xfe";fl\

Hki'k% & dkjckuxj ifr xfe";kfeA

ijkx% & dnk xfe";fl\

Hki'k% & xh"ekodk'k vg xfe";kfeA

ijkx% & du ;kuu\

Hki'k% & jy;kuuA

ijkx% & dkjckuxj fdeFk ifl)e\

Hki'k% & v= jkf"V;&rkifo|rdUnefLrA vr,o ifl)eA

9- o|&jkxh lEHkk"k.ke

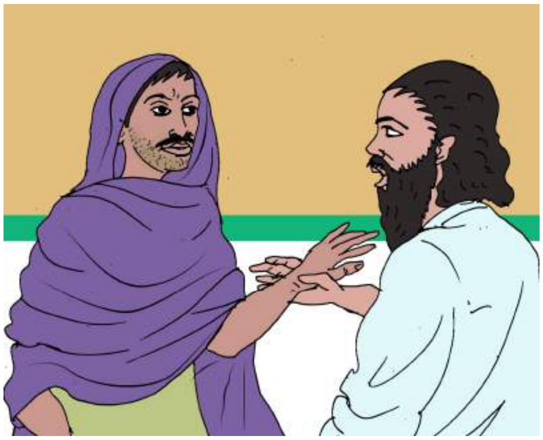

o|% & Hkk edy! Ro dFke vfl\

jkxh & vg d'kyh ukfLeA

o|% & fde vHkor\

jkxh & Toj.k ihfMrk·fLeA

o|% & vg r Rok Tojk"kf/k nkL;kfeA

jkxh & /kU;okn% egkn;k%A

10- lLdr0;kdj.kfo"k; okrkyki%

ef.kdk & Ro fd iBfl\

Hkkjrh & vg lLdr iBkfeA

ef.kdk & lLdrL; d% v/;k;%\

Hkkjrh & doy 0;kdj.ke ,oA

ef.kdk & 0;kdj.k ,o ro #fPk%A

Hkkjrh & 0;kdj.k r eg;e vrho jkprA

ef.kdk & 0;kdj.k r Hkk"kk;k% vk/kkjHkr HkofrA

Hkkjrh & Ro lR; dFk;flA

ef.kdk & v/kuk vg pfyre bPNkfeA

Hkkjrh & mifo'kA i; ihRok xPNA

ef.kdk & {kE;rke bnkuh xPNkfeA

'kCnkFkk%

Hkoku	¾	vki
'o%	¾	vku okyk dy
ij'o%	¾	vku okyk ijlk
foLer%	¾	Hkwy x;k
lE;d	¾	vPNh rjg l
dr%	¾	dgk l\
vke	¾	gk
fdeFke	¾	fdlfy,
ØhMue	¾	[kyuk
rfg	¾	rk
Hke.kkFke	¾	?keu d fy,
Ckk<e	¾	vPNk
vkjkfiroUr% ¼vk$jki.k$Dror½	¾	jki.k fd;k
jki;ke ¼ykVydkj mÙkei#"k cgopu½	¾	jki.k dj
;kuu	¾	okgu l ¼lk/ku l½
v/kuk	¾	vHkh@vc@bl le;
bnkuhe	¾	vc] bl le;

vH;kl%

1- lLdr Hkk"k;k mÙkjr &

¼d½ foHko% d iikr n"Ve bPNfr\

¼[k½ j.k/khjk; fd jkpr\

¼x½ vLekd dÙk0; fde\

¼?k½ dkjckuxj fdeFk ifl)e\

¼M-½ HkkjR; fde vrho jkpr\

2- v/kkfyf[krkuk 'kCnkuk ey'kCn&foHkfDropu&fy³xkfu fy[kr &

	'kCn#ie	ey'kCn%	fy³xe	foHkfDr%	opue
;Fkk&	Hkor%	Hkor	ifYyx	"k"Bh	,d
1-	cLrj	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	d{kk;k	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
3-	lo	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
4-	dL;k	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
5-	fi=k	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
6-	;kuu	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

3- v/kkfyf[krkuk inkuk /kkrydkji#"kopukfu fy[kr&

	ine	/kkr%	ydkj%	i#"k%	opue
;Fkk&	xPNfr	xe	YkV	iFke	,d
1-	bPNkfe	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	fefy";fr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
3-	vkxPNr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
4-	jkpr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
5-	vkjki;	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

4- fjDrLFkkukfu ij;r &

1-	cLrj	&	¼d½ ØhfM";ke%
2-	lo fefyRok	&	¼[k½ xPNfl
3-	Ro d=	&	¼x½ rhjFkx<iikre
4-	Toj.k	&	¼?k½ vkjkfiroUr%
5-	,rku o{kku	&	¼³½ ihfMrk·fLe

5- fjDrLFkkukfu ij;r &

1- vg --------------------d{kk;k iBkfeA
2- ØhMu ---------------------vfi jkprA
3- Roe vfi ,d --------------------------vkjki;A
4- vg r Ro -----------------------------nkL;kfeA
5- ----------------------------r Hkk"kk;k% vk/kkj% HkofrA

6- lLdrHkk"k;k vuokn d#r &

1- vkidk uke D;k g\
2- e lLdr i<rk gA
3- o'khe ijlk vk;xkA
4- vki ej lkFk gh pfy,A
5- cBk] i;inkFk ihdj tkvkA

7- idfriR;; iFkd d#r &

;Fkk & n"Ve ¾ n'k $ reu
1- foLer% ¾
2- fefyRok ¾
3- [kkfnre ¾
4- dre ¾
5- iBu ¾

8- v/kkfyf[kr"k okD;"k v0;;inkfu fpRok fy[kr&

1- Hkoku d= xPNfrA
2- jke% g;% fo|ky; xrokuA
3- v| ee xge vkxPNrA
4- jkgyu lg ,o ØhMrA
5- ;nk J;k ØhMfr rnk lhrk iBfrA

lLdr xhre ¼[k.M&c½

Hkkjr Hkkjr Hkor Hkkjre

Hkkjr HkkjrA Hkor HkkjreA

'kL=èkkjd 'kkL=èkkjd

'kL='kkL=èkkjd Hkor HkkjreA

Hkkjre ----------- A 1A

deuf"Bd èkeuf"Bd

deèkeuf"BdeA

Hkkjre----------- A 2A

efDrnk;d HkfDrnk;d

efDrHkfDrnk;deA

Hkkjre----------- A 3A

'kkfUrnk;d 'kfDrnk;d

'kkfUr'kfDrnk;deA

Hkkjre----------- A 4A

&&&&000&&&&

f}rh; ikB

yk"BÛkxky;k% fe=rk

vfLr yk"BÛkxky;k% e/;s fe=rkA ,dnk Ükxky% yk"Be vonr& fe=! Pkyr rMkxkr Lukrks vkxPNko%A yk"Beonr fe=! vg tykr fcHkfeA vg Luku u dfj";kfeA ;|g Lukfe rfg Toj.k ihfMrk Hkfo";kfeA Ükxky% vonRk&ek Lukr ij e;k lg xUr 'kDukflA rnuUrj yk"B rMkx xUr rRijeHkorA rMkx xRok Ükxky% lE;d Lkukuedjkr A rFkk p yk"Bkifj tyef{kirA tyikru yk"B xfyr tkreA Ükxky% vonr& fe=! vkxPNr] vkxPNrA ;nk yk"B tykr cfg% u vkxPNr rnk Ükxky% rMkxedFk;r& eg; ee fe= nfg]vU;Fkk eRL; nfgA rnuUrj rMkx% rLe eRL;ennkrA

Ükxky% eRL; uhRok r LFkk.kk lLFkkl; Hke.kk; p xr%A ;kor l% vkxPNfr rkor eRL; dkd% [kkfnrokuA rnk Ükxky% LFkk.keokp& eg; eRL; nfg vU;Fkk dk"B nfgA vr% LFkk.k% rLe dk"BennkrA l% dk"Beknk; dL;kf'pr o)k;k% xg xr%A rnxg dk"B

LFkkI; Hke.kkFk xr%A Ik o)k dk"B pfYydk;k Tokyf;Rok ^ofVdk Hkf¥tdk* bfr idoku ifprorhA ;nk Ükxky% HkfeRok U;or;r rnk I% vi';r ;r o)k rL; dk"B iTTokY; IkYykIu ofVdk fuehrorhA Ükxky% rkedFk;r& ee dk"BL; iR;idkj dk"B ok ofVdk nfgA o)k rLe ofVdk ik;PNrA ofVdk xghRok ou ifr ifLFkr%A I% LoofVdk vtkpkfjdk; ckfydk ink; vV.kkFk p xrokuA vtkpkfjdk ckfydk ofVdk fu"dkL; [kkfnrorhA ;nk Ükxky% vkxR; vi';rA rnk r= ofVdk ukIhrA Ükxky% vtkpkfjdk ckfydkedFk;r & ee ofVdk vtk ok nnkr rnk Ik ckfydk rLe ,dke tkennkrA

Ükxky% vtk xghRok fookgxg c)ok vVuk; ifLFkr%A ;nk I% iu% fookgxg vkxPNr rnk vtkeikI; mifLFkrku tuku viPNr & vg v= ,dk vtk c)ok xroku rke vtk d% uhroku\ ;; eá ee vtk o/k ok ;PNA Ükxkyk; r o/k nÙkoUr%A Ükxky% Lodk; IQy% vHkorA I% o/k uhRok LoxgexPNrA I% o/k /kkU;dVuk; funf'krokuA o/k% /kkU;dVu IIDrkA vuUrj Ükxky% ,d dDdVeknk; vkxPNrA rR{k.ko o/k% rL; f'kjfI elyigkj drorhA ru igkj.k Ükxkyk er% tkr%A

rnkijkUr o/k% Lofirxg xrorhA ;nk Ik ifjokj.k Ig eyu doUrh vkIhr rno r= fi=k fookgkFk fuf'pr% ojkxr%A ru oj.k Ig IkYykIu o/ok% ifj.k;% vHkorA ojL; KkfrfHk% tu% o/ok% LokxredouA rk I[ku fuoLkr% vkLrkeA

'kCnkFkk%

Ykk"B %	¾	feVVh dk <yk
fcHkfe	¾	Mjrk g
IE;d	¾	Hkyh Hkkfr
vf{kir	¾	fNMdk@Qdk
LFkk.k	¾	BB
ILFkkI;	¾	LFkkfir dj

uhr% ¼uh$Dr½	¾	y x;k
pfYydk;k	¾	pYg e
Tokyf;Rok	¾	t ykdj
ofVdk	¾	cMk
Hkf¥ t dk	¾	Hkf t ;k@[kk| oLr
U;or ;r	¾	ykVk fn;k x;k
iR; idkj	¾	cny e
v tkpkfjdk	¾	cdjh pjkus okyh
vVukFke	¾	?keu d fy,
c)ok	¾	ck/kdj
ifLFkr%	¾	iLFkku fd;k
/kkU;dVuk;	¾	/kku dVu d fy,
dDdVe	¾	exh dk
funf'kroku	¾	fun'k fn;k
I IDrk	¾	I yXu] tV xb
doUrh	¾	djrh gb
ifj.k;%	¾	fookg

vH;kl

1- fuEufyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr &

¼d½ d;k% e/; fe=rk vHkor\

¼[k½ rMkx xRok Ükxky% fdedjkr\

¼x½ Ükxky% rMkx fdedFk;r\

¼?k½ Ükxky% eRL; d= lLFkkfiroku\

¼M-½ Ükxky% LFkk.k fdeokp\

2- fuEufyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k fgUnhHkk"k;k fy[krA

¼d½ o)k fd ifprorh\

¼[k½ v tkpkfjdk ckfydk dk [kkfnrorh\

¼x½ Ükxky% v tkpkfjdk ckfydk fdedFk;r\

¼?k½ Ükxky% o/k fd funf'kroku \

¼M-½ ojL; Kkfrfhk% tu% dL; Lokxredou\

3- fjDrLFkkukfu ij;r &

¼d½ vg -------------------------fcHkfeA

¼[k½ tyikru -------------------fou"V tkreA

¼x½ dk"B LFkkl; -------------------------xr%A

¼?k½ l% LoofVdk ----------------ckfydk; ink;A

¼M-½ rk vtk d% ------------------------------------A

4- lfU/kfoPNn d#r &

1- yk"Beonr ¾

2- yk"Bkifj ¾

3- LFkk.keokp ¾

4- dk"Beknk; ¾

5- vtkennkr ¾

5- /kkriR;;;k% foHkkx d#rA

1- LukRok ¾

2- xUre ¾

3- lLFkkl; ¾

4- xr% ¾

5- [kkfnroku ¾

6- fuehrorh ¾

6- v/kkfyf[krkuk 'kCnkuk /kkr&ydkji#"k&opukfu fy[kr A

	'kCnk%	/kkr	ydkj%	i#"k%	opue
;Fkk&	pyr	py	ykV	iFke	,d
1-	vkxPNko%	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	fcHkfe	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
3-	dfj";kfe	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
4-	'kDukfl	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
5-	vonr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

7- v/kkfyf[krkuk inkuk ey'kCn&foHkfDr&opukfu p fy[kr &

	'kCnk%	ey'kCn%	foHkfDr%	opue
1-	rMkxkr	&&&&	&&&&	&&&&
2-	Toj.k	&&&&	&&&&	&&&&
3-	pfYydk;ke	&&&&	&&&&	&&&&
4-	rLe	&&&&	&&&&	&&&&
5-	f'kjfl	&&&&	&&&&	&&&&

8- fun’kku lkj.k mÙkjkf.k fy[kr &

Ükxky% eRL; uhRok r LFkk.kk lLFkkl; Hke.kk; p xr%A ;kor l% vkxPNfr rkor eRL; dkd% [kkfnrokuA rnk Ükxky% LFkk.keokp⪚ eRL; nfg vU;Fkk dk"B nfgA vr% LFkk.k% rLe dk"Bennkr A l% dk"BEkknk; dL;kf’pr o)k;k% xg xr%] rnxg dk"B lLFkkl; Hke.kkFk xr%A lk o)k dk"B pfYydk;k Tokyf;Rok ofVdk&Hkf¥tdk* bfr idoku ifprorhA ;nk Ükxky%HkfeRok U;or;r rnk l% vi’;r ;r o)k rL; dk"B iTTokyf;Rok lkYyklu ofVdk fuehrorhA Ükxky%rkedFk;r& ee dk"BL; iR;kidkj dk"B ok ofVdk nfgA o)k rLEk ofVdk ik;PNrA okfVdk xghRok ou ifr ifLFkr%A l% LoofVdk vtkpkfjdk ckfydk inRRk% vV.kkFk p xrokuA vtkpkfjdk ckfydk ofVdk fu"dkL; [kkfnrorhA ;nk Ükxky% vkxR; vi’;rA rnk r= ofVdk uklhrA Ükxky% vtkpkfjdk ckfydkedFk;r& ee ofVdk vtk ok nnkrA rnk lk ckfydk rLeA ,dke vtkennkrA

i'u & mijkYyf[kr&xn;k’ke/khR; Y;i] DRok] Dr] Dror bfr iR;;kUr’kCnku fy[krA

iR;;	**mnkgkj.k**
1- --------------------	--------------------
2- --------------------	--------------------
3- --------------------	--------------------
4- --------------------	--------------------
5- --------------------	--------------------

i'u 2- j[kkf³drkuke vO;;kuk lkFkdi;kx d#r &

i'u 3- ofVdkHkf¥tdk;k% fuek.kfof/k fy[kr&

i'u 4- Loxg fuferkfu 0;¥tukfu lLdrHkk"k;k fy[kr

i'u 5- vtk ok ÜkxkyL; fo"k; i¥pokD;kfu jp;rA

i'u 6- dk"Bfuferkfu i¥p oLrwuk ukekfu fy[krA

R11EI9

&&&&000&&&&

rrh;% ikB%

fØ;kdkjd&drgye

ikB%ifjp;& okD; jpuk d lefpr Kku l gh fdlh Hkk"kk ij vf/kdkj fd;k tkrk gA okD;&jpuk e dkjd vkj fØ;k dk lc/k lokf/kd egRoi.k gkrk gA blfy, Hkk"kk d xgu xEHkhj Kku d fy, dkjd vkj fØ;k&ink d ikjLifjd lc/k dk Kku gkuk vko';d gA lLdr e rk ;g Kku vkj Hkh vf/kd vko';d gA D;kfd mle fo'k"k ifjfLFkfr e fdlh fo'k"k foHkfDr d i;kx d vud fu;e gA Hkk"kk&Kku d fy, dkjd vkj fØ;k d vfrfjDr fØ;k d dky vFkkr ydkjk dk Kku gkuk Hkh vR;ko';d gA

iLrr ikB e ljy 'ykdk d ek/;e l dkjdk ,o fØ;k d ydkjk dk ck/k djk;k x;k gA vkjHk d lkr 'ykdk e Øe'k% lkrk dkjd vkj foHkfDr;k dk i;kx le>k;k x;k g vkj vfre ikp 'ykdk d ek/;e l ikpk ydkjk dk ck/k djk;k x;k gA

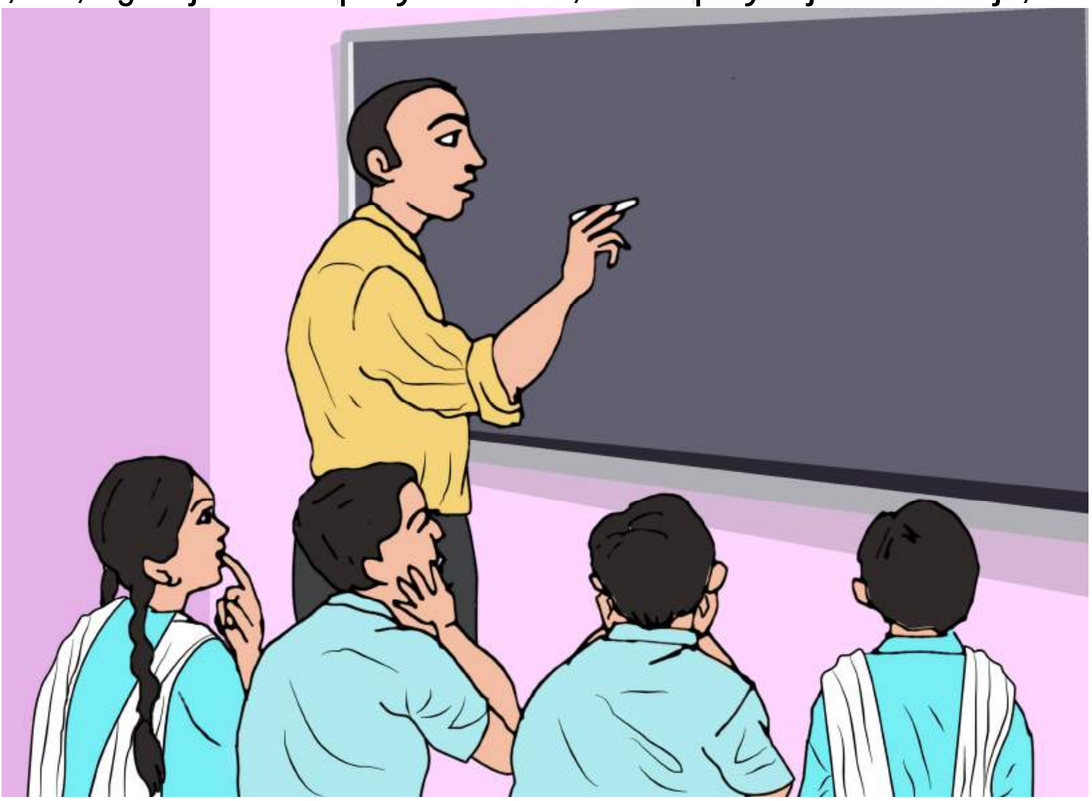

m|e% lkgl /k;] cf)% 'kfDr% ijkØe%A
"kMr ;= orUr r= no% lgk;drAA 1AA

fou;k o'kek[;kfr] n'kek[;kfr Hkkf"kreA
lEHke% Lugek[;kfr] oijk[;kfr Hkk tueAA 2AA
exk% ex% lxeuo tfUr] xko'p xkfHkLrjxkLrjMXkA

e[kk'p e[k¨ lf/k;¨ l/khfHk¨ lekuk'khy&0;lu"k l[;eAA 3AA

fo|k fooknk; /kua enk;] 'kfDr% ijs"kka ifjihMuk;A
[kyL; lk/kksfoijhrern] Kkuk;] nkuk; p j{k.kk;AA 4AA

Øk/kkr Hkofr lekg%] lekgkr LefrfoHkze%A
LefrHkz'kkn&cf)uk'kk cf)uk'kkr i.k';frAA 5AA

vylL; drk fo|k] vfo|L; drk /kueA
v/kuL; drk fe=e] vfe=L; dr% l[keAA 6AA

'ky 'ky u ekf.kD;] ekfDrd u xt xtA
Lkk/kok u fg lo=] pUnu u ou ou AA 7AA

ikikfUuokj;fr ;kt;r fgrk;
xá fuxgfr x.kku idVhdjkfrA

vkinxr p u tgkfr nnkfr dky]
lfUe=y{k.kfen ionfUr lUr% AA 8AA

fuUnUr uhfrfui.kk% ;fn ok Lrq oUr]
y{eh% lekfo'kr xPNr ok ;Fk"VeAA 9AA

v|o ok ej.keLr ;xkUrj ok]
U;k;;kr iFk% ifopyfUr in u /khjk%AA 10AA

viBn ;k·f[kyk% fo|k% dyk% lok% vf'k{krA
v tkukr ldy o|] l o ;kX;rek uj%AA 11AA

nf"Vir U;lr ikn] oL=ir tyç ficrA
lR;ir onr okp] eu%ir lekpjrAA 12AA

jkf=xfe";fr Hkfo";fr lqiHkkre] HkkLokun";fr gfl";fr idtJh%A
bRFk fofpUr;fr dk'kxr f}jQ] gk gUr! gUr! Ukfyuh xtmTtgkjAA 13AA

'kCnkFkk%

m|e% ¾ ¼mr$;e$½ m|kxA

lkgl ¾ mRlkg

/k;e ¾ /khj t

orUr ¾ ¼or /kkryVydkj iFke i#"k cgopu½ jgr gA

lgk;dr ¾ lgk;rk dju okykA

vk[;kfr ¾ ¼vk [;k yV iFkei#"k ,d opu½ dgrk gA

Hkkf"kre ¾ ¼Hkk"k$Dr½ ckyhA

lHke% ¾ m}x] gMcMhA

Luge ¾ ie dk

oi% ¾ 'kjhj

lf/k;% ¾ ¼'kkHkuk /kh% ;"kk r&cgchfg½ cf)eku

l³xe ¾ lkFkA

vucrfUr ¾ ¼vu$ot yV iFke i#"k cgopu½ ihN pyr gA

l[;e ¾ fe=rkA

leku'khy0;lu"k ¾ ¼'khy p 0;lu p 'khy0;lu½ & }U} lekl] leku 'khy&0;lu ;"kk &r"k &cgchfg lekl½ ftud LoHkko vkj yxko ,d leku gk] mueA

enk; ¾ en] ?ke.M] vgdkj d fy,A

ij"kke ¾ nljk dkA

ifjihMuk; ¾ ¼ifjr% ihMue bfr ifjihMue½ gj idkj l d"V d fy,A

lEekg% ¾ vKkuA

LefrfoHke% ¾ ¼Lefr% foHke%&"k"Bh rRi#"k½ Lej.k 'kfDr dk u"V gkukA

i.k';fr ¾ ¼i u'k yV iFke i#"k ,d opu½ u"V gkrk gA

dr% ¾ dgkA

vfo|L; ¾ ¼vfo|ekuk fo|k ;L; l%&vfo|% rL;&cgczhfg½ fo|kghu]e[k dkA

v/kuL; ¾ u /ku ;L; l% v/ku% rL;&cgczhfg nfjnz dkA

'ky ’ky ¾ iR;d ior ijA

ekf.kD;e ¾ ghjk

ekfDrde ¾ ekrhA

fuokj;fr ¾ ¼fu o f.kp] fuokfj$yV iFke i#"k ,d opu½ jkdrk gA

;kt;r ¾ ¼;t f.kp] ;kft yV iFke i#"k ,dopu½ yxkrk gA

fuxgfr ¾ ¼fu xg] yV iFke lk#"k ,d opu½ fNikrk gA xáe&¼xg$;r f}rh;k ,d opu½ xlr ckr dkA

vkinxre ¾ foifÙk e iM g, dkA

tgkfr ¾ NkMrk g

LroUr ¾ Lrfr vFkok i’kalk djA

lekfo’kr ¾ le vk fo’k ykV iFke i#"k ,d opu½ vk,A

v|o ¾ ¼v|$,o of) Loj lf/k½ vkt ghA

;XkkUrj ¾ nlj ;x e cgr fnuk ckn A

;Fk"Ve ¾ ¼b"Ve vufrØE; bfr v0;;hHkko½ bPNkuqlkj

ifopyfUr ¾ gVr gA

vf[kyk% ¾ leLrA

o|e ¾ ¼ofnr ;kX; ½ tkuu ;kX; ckrk dkA

o ¾ ghA

nf"Vire ¾ ¼n"V;kire&rrh;k rRi#"k½ Nkudj vFkkRk Hkyh Hkkfr n[kdjA

U;lr ¾ ¼fu vl fof/kfy³ iFke i#"k ,d opu½ j[kuk pkfg,A

oL=ire ¾ oL= l Nuk gvkA

lR;irke ¾ lR; l 'k)

eu% ire ¾ ifo= eu l

lekpjr ¾ ¼le vk pj fof/k fy³ iFke i#"k ,d opu½ Hkyh&Hkkfr 0;ogkj djuk pkfg,A

l iHkkre ¾ ¼l$iHkkre&de/kkj;½ lUnj ikr% dkyA

mn";fr ¾ ¼mr$b.k$yV iFke i#"k ,d opu½ mn; gkxA

dk'kxr ¾ ¼dk'kxr &llre rRi#"k½ deynyk d e/; e fLFkrA

fofpUr;fr ¾ ¼fo$fpUr$'kr iR;;] llreh ,d opu½ fopkj djr g,A

ufyuhe ¾ defyuh dk

mTtgkj ¾ ¼mr$g$fyV iFke i#"k ,d opu½ m[kkM fn;kA

vH;kl%

1- mfpr fodYi fpur &

1- **oi% vk[;kfr% &**

¼d½ Hkktue ¼[k½ Luge ¼x½ o'ke ¼?k½ Hkkf"kre

2- [kyL; fon;k dLe Hkofr\

¼d½ Kkuk; ¼[k½ fooknk; ¼x½ j{k.kk; ¼?k½ nkuk;

3- d u lo= Hkofur%\

¼d½ ekf.kD;kfu ¼[k½ pUnue ¼x½ lk/ko% ¼?k½ ekfDrdkfu

2- v/kkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr&

¼d½ U;k;;kr iFk% d u ifopyfUr\

¼[k½ lk/kk% 'kfDr% fdeFk Hkofr\

¼x½ d% o'ke vk[;kfr\

¼?k½ dLekn cf)uk'kk Hkofr\

3- LrEHk eyu d#r &

1- nf"Vir U;lr	¾	okpe
2- oL=ir ficr	¾	ikne
3- lR;irk onr	¾	tye

4- 'ky 'ky u ¾ ekfDrde

5- xt xt u ¾ pUnue

6- ou ou u ¾ ekf.kD;e

4- ^ikikfUuokj;fr ;kt;r fgrk; xá fuxgfr x.kku idVhdjkfrA
vkinxr p u tgkfr nnkfr dky] lfUe=y{k.kfen ionfUr lUr%AA

mDr'ykdku lkj.k v/kkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjrA

i'uk % &

1- lfUe=L; ,d y{k.k fy[krA

2- ^xg; fuxgfr* bfr okD;L; Hkkokfk fy[krA

3- ^bn ionfUr lUr%* bfr okD;L; fgUnhHkk"k;k vuokn fy[krA

4- ^nnkfr* bfr fØ;kinL; drin fde vfLr\

5- ^xre* bfr in idfriR;;'p fy[krA

6- 'ykd i;Dre vO;;in fy[krA

7- 'ykd fyf[krkfu yVydkjL; /kkr: ikf.k fpRok fy[krA

i'u 5- v/kkfyf[krkuk lLdrHkk"k;k vuokn d#rA

1- fo|k Kku d fy, gkrh gA

2- vkyl h eu"; dk fo|k ikIr ugh gkrh gA

3- lHkh ior e e.kh ugh gkr gA

4- vPN fe= x.kk dk idV djr gA

5- /khj i#"k U;k; d ekx l fopfyr ugh gkr gA

R1J6LJ

&&&&000&&&&

R1L7KH

prFk‰ ikB‰

fcykl k

jruijL; tuinkUrxr 'krkf/kdo"kio ^yxjk* bfr xkekr LoiRU;k lg thodkiktUkkFk ^ijl* ukEu% doR;% fuxr%A rk vjiku|k% rV vfr"BrkeA vjik;k% rV ,d% y?kxke% vklhrA ijl vjiku|k ifrfnu eRL;k[kV djkfr LeA dkykUrj.k rL; Hkk;k clk[kk ,dk LoLFkk ckyke vtu;rA lk ckfydk yko.;orh vklhrA yko.;u rL;k% ^fcykl k* bfr ukedj.keHkorA

fcykl k 'k'kodky ckyk cky% lg ØhMfr LeA rL; ckydkuk ØhMud ØhMu p jkpr LeA fcykl k vnE;&lkgfl dk vklhrA ,dnk lIr cky uhRok oDd% iyk;u dou vklhrA rnk fcykl k oDd n.Mu rkMf;Rok ckyd eDr dRok ekrj lei;rA ckyd% lg fcykl k eYy&dk'ky f'k{kr LeA r lkgl n"Vok tu% rL;k% nyk;xkej{k.kL; nkf;Ro inÙkeA

;nk o"kkZdky vjiku|k tylykou tkreA rnk fcyklk ukd;k tuku lrkj;fr LeA ,oeo lk ukdkpkyu·fi ikj³xrk tkrkA lk ykduR;xhr;k% vfi fl)k vklhrA xkeL; lo"k dk;Øe"k lk vxljklhrA

dkyUrj fcyklk;k% fookg% c'kh ukEuk ;odu lg vHkorA fcyklk ifrfnu ^pkj&rUn* bfr oU;Qykfu lxg.kkFk xPNfr LeA rFkk p c'kh efg"kpkj.kk; ou ifr vxPNrA ;nk lk;dky fcyklk iR;k lkd xg ifr U;or;fr Le rnk lglk vk[kVk; Hkerk% jkK% dY;k.klk;L;kifj ,d% O;k?k% vkØe.k drokuA r foykD; fcyklk O;k?ke dUru igk;] jkK% ik.kku vj{k;rA vu;k dY;k.klk;% fcyl;k iHkkfork HkRok vij fnol vjiku|k% };k% rV;k% ^tkxhj* fcyklk; nÙkokuA rFkk p jktk jruij iR;kxr%A vuUrj rk [kMxu vydR; ^efgyk&lukifr* bfr in U;;kt;rA

fcyklk Loi;Ruu xkeL; fodkl% drorhA rL;k% o/keku iHkko n"Vok ifrof'ku% jkT;kfu rL;k% {k= vkØe.k droUr%A r% lg fcyklk lkglu ;)e vdjkrA lk jkT;j{kk dorh ohjxfr ikIrorhA jktk dY;k.klk;% eRL;k[kVdkuk fuoklLFky fcyklk;k% lEekukFk ^fcyklkije bfr ukEuk ifFkreA oreku bn fcyklij NÙkhlx<L; U;k;/kkuh vfLrA

fcyklk Lodk;.k u doy Lolekt vfir leLr&NÙkhlx<ikUr lEekuhrkfLrA lEifr NÙkhlx<lodkj.k eRL;ikyu{k= ikRlkgukFk r;k ukEuk ^fcyklkckbZ dofVu* bfr ijLdkj% ifro"k% nh;rA vfi p r;k ukEuk fcyklij fcyklkrky%] fcyklk dU;k&Lukrdkùkj&egkfo|ky;% fcyklkpr"iFk% iHkr;% xkjokfUork% lfUrA ,oeo NÙkhlx<L; iT;k fcyklk lkglh&'kk;&defu"Bk{k= vkn'kHkrkfLrA

'kCnkFkk%

fuxr% ¾ fudyk
vtu;r ¾ tUe fn;k
yko.; ¾ lnj
ØhMude ¾ f[kykuk

oDdk ¾ HkfM+;k
eYydk'ky ¾ ;) dk'ky
tylykou ¾ ck<
lrkj;fr ¾ ikj&yxkuk
ikj³xrk ¾ d'ky ¼n{k½
vxljk ¾ vkx vku okyh
U;or;fr ¾ ykVrh gA
vk[kVk; ¾ f'kdkj d fy,
foykD; ¾ n[kdj
igk; ¾ igkj djd@okj djd
iR;kxrk ¾ ykV vk;k
vydR; ¾ lEekfur djd
dorh ¾ djrh gb
lEifr ¾ vHkh
pr"iFk ¾ pkjkgk

vH;kl

1- v/kkfyf[kr kuk i'ukuke mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr&

¼d½ ijl d= eRL;k[kV vdjkr\
¼[k½ tu rL;k nyk; dL; nkf;Ro inÙke\
¼x½ fcykl;k fookg du lg vHkor\
¼?k½ jktk fcykl dfLeu in vfu;kt ;r\
¼³½ eRL;ikyu{k= d ijLdkj nh;r\

2- fun’kku lkj.k mRrjkf.k fy[krA

^^fcykl Loi;Ruu xkeL; fodkl% drorhA rL;k% o/keku iHkko n"Vok ifrof’ku% jkT;kfu rL;k% {k= vkØe.k droUr%A r% lg fcykl lkglu ;)e vdjkrA lk jkT;j{kk dorh ohjxfr iklrorhAjktk dY;k.klk;% eRL;k[kVdkUkk fuokl LFky fcykl;k% lEekukFk ^fcykl ije* bfr ukEuk ifFkreA oreku bn fcykl ij NÙkh lx<L; U;k;/kkuh vfLrA

v- fjDrLFkkukfu ij;r &

¼d½ lk jkT;j{kk dorh ------------------------iklrorhA

¼[k½ fcykl ij --------------------------------U;k;/kkuh vfLrA

c- j[kkf³drinkuk iR;; iFkd d#rA

l- mDrkuPNnku lkj.k rrh;k"k"B;k% foHkDrhuk 'kCnkuk fpur opu´p fy[kr&

n- ^^lk jkT;j{kk dorh ohjxfr iklrorhA okD;A**

¼d½ ^lk* bfr louke 'kCn% dL; lKk 'kCn&LFkku i;DRk%A

¼[k½ ^^iklrorh** bfr fØ;kinL; drin fy[krA

3- lf/k foPNn d#r &

eRL;k[kVe ¾

dkyknuUrje ¾

ekrjelei;r ¾

0;k?kkifj ¾

04 mnkgj.kku lkj.k fØ;kinkfu ifjor;r &

mnkgj.k&ckyd% ØhMfr LeA ckyd% vØhMrA

¼d½ fcykl lUrkj;fr LeA --A

¼[k½ c’kh ou ifr xPNfr LeA--A

¼x½ lk j{kfr LeA --A

¼?k½ xkeL; fodkl% djkfr LeA --A

¼³½ ckfydk uR;fr LeA --A

&&&&000&&&&

R1T2N7

R1V3HA

i¥pe% ikB%

;{k&;f/kf"Bj&lokn%

iLrr vorj.k egkHkkjr* l fy;k x;k g ftld jpf;rk egf"k on0;kl th g egkHkkjr ,d yk[k 'yksdk e fuc) gA vr% bl ^'kr&lkgLh&lafgrk** Hkh dgr gA ,d ckj vKkr okl d le; ?ker g, ik.Mok dk l;kl yxhA rc udy ty dk ryk'k djr g, ,d tyk'k; d ikl igp fdUr ;{k u ikuh ihu l euk dj fn;kA mUgku dgk&ej i'uk d mRrj nu d Ik'pkr gh ikuh ih ldr gA fiikIkdy udy ,o vU; Hkkb fcuk mÙkj fn; ikuh ih; vkj eR; dk iklr g,A ;f/kf"Bj u /k;iod ;{k d i'u dk mÙkj fn;kA iLrrk'k e ;{k d Ik'u vkj mÙkj ;f/kf"Bj d gA lHkh i'ukÙkj ykdki;kxh gA

1- dufLoPNkf=;k Hkofr dufLof}Unr egrA
dukf}rh;okUHkofr jktu du p cf)ekuAA

2- Jru Jkf=;k Hkofr ri lk foUnr egrA
/kR;k f}rh;okUHkofr jktu cf)ekUo) lo;kAA

3- fdfLon x:rj Hke% fdfLonPprj p [kkrA
fdfLoPNh?krj ok;k% fdfLon cgrj r.kkrAA

4- ekrkx:rjkHke% [kknl;Pprj% firkA
eu% 'kh?krj okrkfPpUrk cgrjh r.kkrAA

5- /kkU;kukeRRke fdfLo)ukuk L;kfRdeRreeA
ykHkkukeÙke fd L;kRl[kkuk L;kfRdeRreeAA

6- /kkU;kukeRRke nk{; /kukukeRre JreA
ykHkkukeRRke J;% l[kkuk rf"V:RrekAA

7- dufLonkoRrk ykd% dufLoUu idk’krA
du R;tfr fe=kf.k du Loxa u xPNfrAA

8- vKkuukoRrk ykdLrelk u idk'krA
ykHkkRk R;tfr fe=kf.k l³xkRLoxa u xPNfrAA

9- ri% fd y{k.k iksDr dk ne'p idhfrr%A
{kek p dk ijk iksDrk dk p gh ifjdhfrrkAA

10- ri% Lo/keofrRo eulk neu ne%A
{kek }U}lfg".kRo ghjdk;fuorueAA

'kCnkFkk%

dUkfLor	¾	fdld }kjk
foUnr	¾	iklr djrk gA
Jru	¾	on l
Jkf=;%	¾	onk dk fo}ku
/kR;k	¾	/k; l
Xk:rje	¾	c<dj
mPprje	¾	Åpk
[kkr	¾	vkdk'k l
Ckgrje	¾	cgrk;r
nk{;e	¾	d'kyrk ¼prjkb½
J;%	¾	dY;k.k
ikDre	¾	dgk x;k
ne%	¾	neu
gh	¾	yTtk
}} lfg".kRoe	¾	l[k n[k] ykHk&gkfu vkfn e leA
vdk; fuorue	¾	u dju ;kX; dk; dk R;kx nukA

vH;kl%

1- v/kkfyf[krkuk i'ukukeeÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr&

¼d½ du Jkf=;k Hkofr\

¼[k½ [kknl;Pprj% d%\

¼x½ ykHkkukeÙke fde\

¼?k½ du u idk'kr\

¼³½ ri% fd y{k.ke\

2- fjDrLFkkukfu ij;r &

¼ekrk] /kkU;kuke] l[kuke] neUke] ykHkkr½

1- ---------------R; tfr fe=kf.kA

2- ---------------x: rjk Hke%A

3- ----------------mRre nk{;eA

4- -----------------rf"V:RrekA

5- Eku lk --------------------ne%A

3- lLdrHkk"k;k vUkokn d#r&

1- on d v/;;u l thou dk Kku gkrk gA

2- ekrk Hkfe l c<dj gA

3- ok; l 'kh?krj eu gkrk gA

4- ykHk l fe= dk R;kx nrk gA

5- vKku l llkj vkoRr gA

4- leyu d#r &

[k.M ^v*	[k.M ^c*
1- ekrk	cgrjh r.kkr
2- eu%	'kh?krj okrkr
3- fpUrk	x:rjk Hke%
4- rf"V%	ykHkkR; tfr
5- fe=kf.k	l[kkuke mRrek

5- v/kkfyf[krkuk 'ykdkuk ek/;eu fun'kku lkjeÙkjkf.k fy[kr&

^^vKkuukoÙkk ykdLrelk u idk'krA

ykHkkÙ; tfr fe=kf.k l³xkRLox u xPNfrAA

ri% Lo/keofrRo eulk neu ne%A

{kek }U} lfg".kRo ghjdk;fuorueAA**

i'uk% &

v- 1- dukoRrk ykd%\

2- ijk {kek dk ikDrk\

c- j[kkf³dr inkuk ey'kCn&foHkfDr&opukfu p fy[kr&

l- ^idk'kr* bfr 'kCnL; 0;Ùifr ¼mi lxey/kkr% /kkr#i¥p½ fy[krA

n- fgUnh&Hkk"k;k vuokn d#rA

1- l³xkRLoxi u xPNfrA

2- ghjdk;fuorueA

&&&&000&&&&

R22XPU

"k"B% ikB%

ik.kH;k-fi fi;% lân

iLrr ukV;k'k egkdfo fo'kk[knÙk }kjk jfpr ^eæk jk{kl e* uked ukVd d iFke v³d l mn/kr fd;k x;k gA uUno'k dk fouk'k dju d ckn mld fgrf"k;k dk [kkt&[kkt dj idMoku d Øe e pk.kD;] vekR; jk{kl ,o mld dVfEc;k dh tkudkjh ikIr dju d fy, pUnunkl l okrkyki djrk gA fdUr pk.kD; dk vekR; jk{kl d fo"k; e dkbZ ljkx u nrk gvk pUnunkl viuh fe=rk ij dk;e jgrk gA mld e=h Hkko l iLUu gkrk gvk Hkh pk.kD; tc ml jktn.M dk Hk; fn[kkrk g] rc pUnunkl jktn.M Hkkxu d fy; Hkh lg"k iLrr gk tkrk gA bl idkj viu lân d fy, ik.kk dk Hkh mRlx dju d fy, rRij pUnunkl viuh lân&fu"Bk dk ,d Toyur mnkgj.k iLrr djrk gA

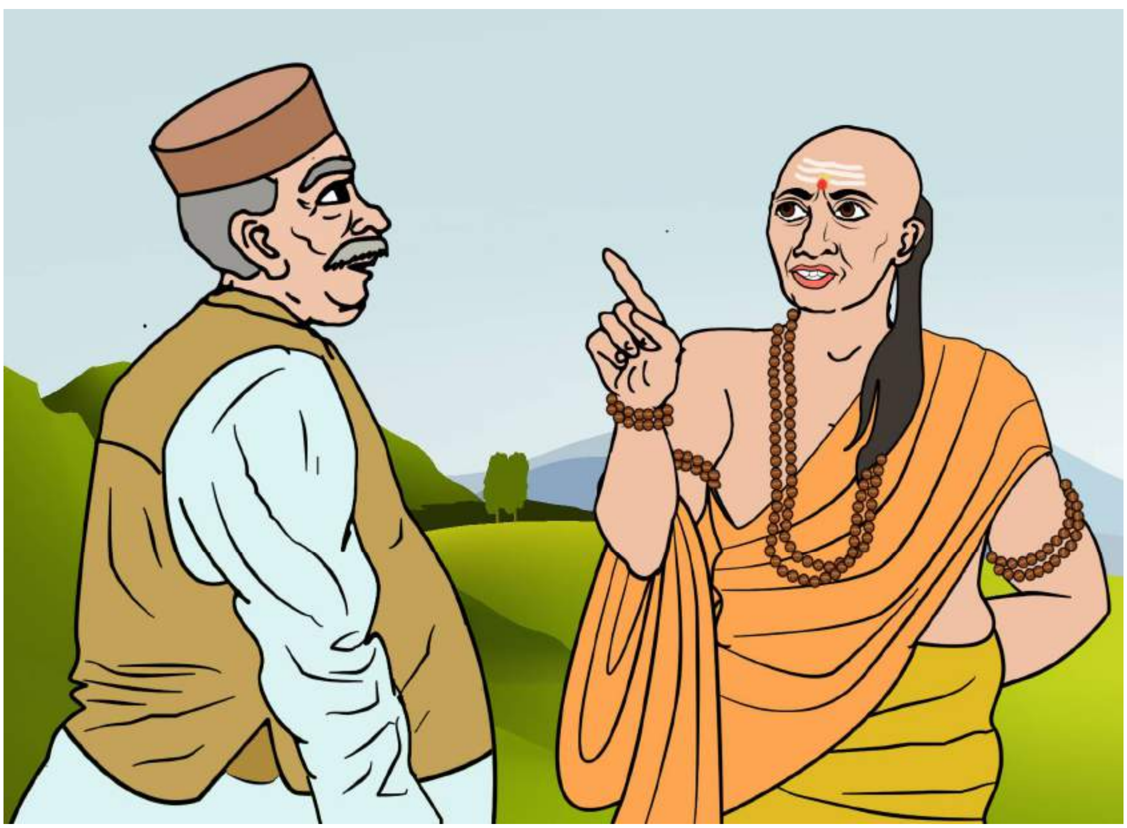

pk.kD;% & oRl! ef.kdkj Jf"Bu pUnunklfenkuh æ"VfePNkfeA

f'k";% & rFkfr ¼fu"ØE; pUnunklu lg ifo';½ br% br% Jf"Bu ¼mHkk ifjØker%½

f'k";% & ¼mi lR;½ mikè;k;! v; J"Bh pUnunkl%A

pUnunkl% & t;Rok;%

pk.kD;% & Jf"Bu! Lokxr rA vfi iph;Ur l0;ogkjk.kk of)ykHkk%\

pUnunkl% & ¼vkRexre½ vR;knj% 'kduh;%A ¼idk'ke½ vFk fdeA vk;L; i lknu v[kf.Mrk e of.kT;kA

pk.kD;% & Hkk Jf"Bu! ihrkH;% iÑfrH;% ifrfi;fePNfUr jktkuA

pUnunkl% & vkKki;r vk;%] fd fd;r p vLeTtukfn";r bfrA

pk.kD;% & Hkk Jf"Bu! pUæxIrjkT;fen u uUnjkT;eA uUnL;o vFklEcUèk% ihfreRikn;frA pUæxIrL; r HkorkeifjDy'k ,oA

pUnunkl% & ¼lg"ke½ vk;! vuxghrk·fLeA

pk.kD;% & Hkk Jf"Bu! l pkifjDy'k% dFkekfoHkofr bfr uu Hkork i"V0;k% Le%A

pUnunkl% & vkKki;r vk;%A

pk.kD;% & jktfu vfo#)ofÙkHkoA

pUnunkl% & vk;! d% iuj/kU;k jkKk fo#) bfr vk;.kkoxE;r\

pk.kD;% & Hkokuo rkor iFkeeA

pUnunkl% & ¼d.kk fi/kk;½ 'kkUr ikie] 'kkUr ikieA dhn'kLr.kkukefXuuk lg fojk/k%\

pk.kD;% & v;ehn'kk fojk/k% ;r Roe|kfi jktkiF;dkfj.k%
vekR;jk{klL; xgtu Loxg j{kflA

pUnunkl% & vk;! vyhderrA dukl;uk;.k vk;k; fuofnreA

pk.kD;% & Hkk Jf"Bu! vyek'kd;kA Hkhrk% iojktti#"kk%
ikjk.kkfePNrkefi xg"k xgtu fuf{kl; n'kkUrj otfUrA
rrLrRiPNknu nk"keRikn;frA

pUnunkl% & ,o u bneA rfLeu le; vklhnLenxg vekR;jk{klL;
xgtu bfrA

pk.kD;% & ioe ^vure*] bnkuhe *vklhr* bfr ijLijfo#) opuA

pUnunkl% & vk;! rfLeu le; vklhnLenxg vekR;jk{klL; xgtu bfrA

pk.kD;% & vFknkuh D0k xr%\

pUnunkl% & u tkukfeA

pk.kD;% & dFk u Kk;r uke\ Hkk Jf"Bu! f'kjfl Hk;e] vfrnj
rRifrdkj%A

pUnunkl% & vk;! fd e Hk; n'k;fl\ lUrefi xg vekR;jk{klL;
xgtu u lei;kfe] fd iujLkUre\

pk.kD;% & pUnunkl! ,"k ,o r fu'p;%\

pUnunkl% & ck<e] ,"k ,o e fu'p;%A

pk.kD;% & ¼Loxre½ lk/k! pUnunkl lk/kA

lyHk"oFkykHk"k ijlonu tuA

fd bn n"dj d;kfnnkuh f'kfouk foukAA

'kCnkFkk%

ef.kdkjJf"Bue	&	ef.k dk 0;kikjh
fu"ØE;	&	fudydj
milR;	&	ikl tkdj
ifjØker%	&	nkuk ifjHke.k djr g
iph;Ur	&	c<r g
lO;ogkjk.kke	&	0;kikjk dk
vkRexre	&	eu gh eu
'kduh;%	&	'kdk dju ;kX;
v[kf.Mrk	&	ck/kkjfgr
of.kT;k	&	0;kikj
ihrkH;%	&	ilUu tuk d ifr
ifrfi;e	&	midkj d cny fd;k x;k midkj
vifjDy'k%	&	n[k dk vHkko
vkKki;r	&	vkn'k n
vFklEcU/k%	&	/ku dk lEcU/k
ifjDy'k%	&	n[k
i"V0;k%	&	iNu ;kX;
voxE;r	&	tkuk tkrk g
vfo#)ofÙk%	&	fojk/kjfgr LoHkko okyk
fi/kk;	&	cUn dj
jktkiF;dkfj.k%	&	jktkvk dk vfgr djuoky
vyhde	&	>B

vuk;.k	&	n"V d }kjk
ikjk.kke	&	uxj d ykxk d
fuf{kl;	&	j[kdj
otfUr	&	tkr g
iPNknue	&	fN ikuk
vekR;%	&	eU=h
vlUre	&	u jguoky
ck<e	&	gk
lonu	&	lei.k ij
tu	&	llkj e

vH;kl%

1- v/kkfyf[kr i'ukuke mÙkjkf.k lLÑrHkk"k;k fy[kr &

¼d½ pUnunkl% dL; xgtu Loxg j{kfr Le\

¼[k½ r.kkuk du lg fojk/k% vfLr\

¼x½ d% pUnunkl æ"VfePNfr\

¼?k½ ikB vfLeu pUnunklL; ryuk du lg Ñrk\

¼M-½ ihrkH;% iÑfrH;% ifrfi; d bPNfUr\

¼p½ dL; ilknu pUnunklL; okf.kT;k v[kf.Mrk\

2- LFkyk{kjinkfu vk/kkR; i'ufuek.k d#r

¼d½ **f'kfouk** fouk bn n"dj dk; d% d;krA

¼[k½ ik.kH;k·fi fi;% **lâr**A (

¼x½ **vk;L;** ilknu e okf.kT;k v[kf.MrkA

¼?k½ ihrkH;% iÑfrH;% **jktku%** ifrfi;fePNfUrA

¼M-½ **r.kkuke** vfXuuk lg fojk/kk HkofrA

3- fun'kkulkj lfU/k@lfU/kfoPNn d#r

¼d½ ;Fkk d% $ vfi & dk·fi

ik.kH;% $ vfi & -----------

----------- $ vfLe & lTtk·fLeA

vkReu% $ ----------- & vkReuk·f/kdkjln'ke

¼[k½ ;Fkk lr $ fpr & lfPpr

'kjr $ pUæ% & -----------

dnkfpr $ p & -----------

4- v/kkfyf[krokD;"k fun'kkulkj ifjoru d#r

;Fkk ifrfi;fePNfUr jktku%A ¼,dopu½ ifrfi;fePNfr jktkA

¼d½ l% iÑr% 'kkHkk i';fr ¼cgopu½

¼[k½ vg u tkukfeA ¼eè;ei#"kdopu½

¼x½ Ro dL; xgtu Loxgj{kfl\ ¼mÙkei#"kdopu½

¼?k½ d% bn n"dj d;kr\ ¼iFkei#"kcgopu½

¼M-½ pUnunkl æ"VfePNkfeA ¼iFkei#"kdopu½

¼p½ jkti#"kk% n'kkUrj otfUrA ¼iFkei#"kdopu½

5- dk"Bd"k nÙk;k¶ in;k¶ 'k) fodYi fofpR; fjDrLFkkukfu ij;r&

¼d½ ---------------- fouk bn n"dj d¶ d;krA ¼pUnunkIL; @ pUnunkIu½

¼[k½ ---------------- bn oÙkkUr fuon;kfeA ¼xjo @ xjk½½

¼x½ vk;L; ---------------- v[kf.Mrk e of.kT;kA ¼iIknkr @ iIknu½

¼?k½ vye ---------------- A ¼dygu @ dygkr½

¼M-½ ohj¶ ---------------- cky j{kfrA ¼Igu @ Igkr½

¼p½ ---------------- Hkhr¶ ee Hkkrk Ikikukr virrA ¼dDdj.k @ dDdjkr½

¼N½ Nk=k¶ ---------------- i'u iPNfrA ¼vkpk;e @ vkpk;.k½

6- v/kknÙk e¥t"kkr¶ Iefprinkfu xghRok foykeinkfu fy[kr&

vknj¶ vIR;e x.k¶ i'pkr rnkuhe r=

¼d½ vuknj¶ -----------------------

¼[k½ nk"k¶ -----------------------

¼x½ ioe -----------------------

¼?k½ IR;e -----------------------

¼M-½ bnkuhe -----------------------

¼p½ v= -----------------------

7- mnkgj.keuIR; v/kkfyf[krkfu inkfu i;T; i¥pokD;kfu jp;r&

;Fkk& fu"ØE; & f'kf{kdk iLrdky;kr fu"ØE; d{kk ifo'kfrA

¼d½ miIR; ---

¼[k½ ifo'; ---

¼x½ æ"Ve ---

¼?k½ bnkuhe ---

¼M-½ v= ---

R2BTRH

&&&&000&&&&

lIre% ikB%

lHkkf"krkfu

1- **lok fo|k% ijk ikDrk% lLdr fg egf"kfHk%A**

rf}|kfu/k; l0; lLdr dke/kuorAA

vFk& egf"k;k u iodky l gh lLdr Hkk"kk e leLr fo|kvk dh jpuk dj nh gA fdUr mu fo|k:ih [ktkuk dk iku d fy, dke/ku d leku lLdr Hkk"kk dh lok vko';d gA

2- **ok;uk 'kk/kdk% o{kk% jkxk.kkeigkjdk%A**

rLekn jki.ker"kk j{k.k p fgrkogeAA

vFk& o{k ok; dk 'k) djr g vkj jkxk dk nj Hkxku e lg;kxh gkr gA blfy, o{kk dk jki.k vkj j{k.k ik.khek= d fy, fgrdkjh gA

3- **RoD'kk[kki=ey'p i"iQyjlkfnfHk%A**

iR;³x#idofUr o{kk% lfnHk% le lnkAA

vFk& lUrk d leku gh o{k viuh Ropk 'kk[kk iRr ey] i"i Qy jl vkfn lHkh vxk l ikf.k;k dk midkj djr gA

4- **d"kkf¥pnfi oLruk xE;r lf³xuk x.k%A**

o|ukfirgUr.kk gLr"k {kfjdk ;FkkAA

vFk& fdlh Hkh oLr dk x.k mld lxoky l le>k tkrk g vFkkr oLr d /kkj.kdÙkk ij fuHkj djrk gA tl Njh dk x.k mi;kx o|]ukb vkj gR;kj d gkFk e n[kdj gh irk pyrk gA

5- **;PND; xflr 'kLr xLr ifj.kePp ;rA**

fgr p ifj.kke ;Ùknk| HkfrfePNrkAA

vFk& tk 0kLr [kkb tk ld vkj [kku ij Hkyh&Hkkfr ip ld vkj ip tku ij fgrdkjd gk ,'o; dh bPNk dju oky 0;fDr dk ogh oLr [kkuh pkfg,A

6- vuUrikj fdy 'kCn'kkL= LoYi rFkk;cgo'p fo/kuk%A

lkjUrrk xkg;eikL; QYx gl;Fkk {kkjfeok·Ece/;krAA

vFk%& 'kkL= dk ikj dgh fuf'pr ugh g vkj eu"; dh vk; de g blfy, lkj xg.k dj lkj ghu dk mlh idkj NkM nuk pkfg,] ftl idkj gl ty l n/k xg.k dj yr g vkj ty NkM nr gA

7- 'kL=grk u fg grk fjiok HkofUr] iKkgrkLrfjio% lgrk HkofUrA

'kL= fugfUr i#"kL; 'kjhjed iKk dy¥p foHko¥p ;'k'p gfUrAA

vFk%& 'kL=k l ekj x; 'k= ugh ejr ijUr cf) l ekj x; 'kL= okLro e ekj tkr gA 'kL= l rk 'k= dk ejdj ek= 'kjhj gh u"V fd;k tk ldrk g ijUr cf) l mldk o'k dy] oHko vkj ;'k vkfn lc dN u"V gk tkrk gA

8- fnukUr ficr nX/ke] fu'kkUr p ficr i;%A

HkktukUr ficr rØe fd o|L; i;ktueAA

vFk%& fnol d vr ¼'kke½ e n/k ihuk pkfg,] jkf= d vr e ¼lcg½ ty ihuk pkfg,] Hkktu d vr e NkN ihuh pkfg,A ,lk dju l o| dh vko';drk ugh gA

9- vkpk;kRikneknÙk ikn f'k";% Loe/k;kA

dkyu ikneknÙk ikn lcgepkfjfHk%AA

vFk%& f'k"; viu thou dk ,d Hkkx viu vkpk; l lh[krk g] ,d Hkkx viuh cf) l lh[krk g ,d Hkkx le; l lh[krk g rFkk ,d Hkkx og viu lgikfB;k l lh[krk gA

10- ukfLr fo|kle p{k% ukfLr lR;le ri%A

ukfLr jkxle n%[k ukfLr R;kxle l[keAA

vFk%& fo|k d leku vk[k ugh g] lR; d leku ri ugh g] jkx d leku n%[k ugh g] vkj R;kx d leku dkb l[k ugh gA

'kCnkFkk%

ijk ikDrk%	¾	igy dgh x;hA ¼ ijk&v0;; 'kCn½
Ekgf"kfHk%	¾	egku _"k;k d }kjk ¼Ekgf"kfHk%&egf"k bdkjkUr i- 'kCn r-c-o½
fu/k;	¾	[ktku d fy, ¼ fu/k; & bdkjkUr i- prFkh ,dopu ½
l0;e	¾	j{kk dju d fy,
'kk/kdk%	¾	'k) dju oky gA ¼'kk/kdk% & i- cgopu½
vigkjdk%	¾	nj Hkxkr gA
fgrkoge	¾	fgrdkjh
Rod	¾	Ropk Nky
iR;³x%	¾	lEi.k v³xk l ¼ifr + v³x ¾ iR;³x% r-c-o ½
lnfHk%	¾	lTtuk l ¼lnfHk% & r-c-o ½
lf³xuk	¾	lx oky l ¼ lf³xuk & r- ,dopu ½
xE;r	¾	le>k tkrk gA ¼ xE;r & vkReuin i-i- ,dopu ½
o|%	¾	fpfdRld ¼ o|% & i- i- ,dopu½
ukfir%	¾	ukb ¼ ukfir% & i- i- ,dopu ½
gUr.kke	¾	gR;kjk d ¼gUr.kke & gu èkkr "k"Bh c-o-½
gLr"k	¾	gkFkk e ¼ gLr"k & gLr 'kCn i- lIreh c-o-½
'kL=grk%	¾	'kL=k l ekj x,A ¼'kL=grk% & 'kL= + gu + Dr c-o- ½
iKkgrk%	¾	cf) l ekj x,A ¼iKkgrk% & i + K + gu + Dr c-o- ½
lgrk%	¾	Hkyh idkj ekj tkr gA ¼lgrk% & l + gu + Dr c-o- ½
fnukUr	¾	fnu d vr e ¼'kke½ ¼fnu + gUr ¾fnukUr nh?k Loj lfèk ,o lIreh ,dopu ½
i;%	¾	ty
i;ktue	¾	vk'k;] mnn';

ikne ¾ prFk Hkkx

Loe/k;k ¾ viuh cf) l ¼Loe/k;k & rrh;k ,dopu L=hfy³x½

lcgepkfjfHk% ¾ viu lgikfB;k d lkFkA ¼ lcgepkfjfHk% & rrh;k c-o-i-½

jkxlee ¾ ykyirk d leku

vH;kl%

1- **v/kkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k fy[kr&**

¼d½ lLdr dhn'ke vfLr\

¼[k½ lLdregf"kfHk% fd ikDre\

¼x½ o{kk% d"kk 'kk/kdk%\

¼?k½ d jkxk.kke vigkjdk%\

¼³½ o{kk% ikf.kuk dFk midofUr\

2- **j[kkf³dr&inkfu vk/kR; lf/kfoPNn d#r &**

¼d½ egf"kfHk% lokfo|k% ikDrk%A

¼[k½ rFkk;cgo'p fo/uk%A

¼x½ lk;% fu'kkUr ficrA

¼?k½ 'kLr xflr ;PND;eA

3- **,"k 'kCn"k dk fHkUu%**

¼d½ lLdr] xE;r] fØ;r] n';rA

¼[k½ ØhMfr] /kkofr] ficfr] nnfrA

¼x½ iBfUr] pyfUr] /kkoUrh] glfUrA

¼?k½ o/keku] oreku] loeku]'kfDrekuA

4- v/kkfyf[kr 'ykd ifBRok inÙki'ukuke mÙkjkf.k fy[kr&

vkpk;Rikneknr ikn f'k";% Loe/k;kA

dkyu ikneknÙk ikn lcgkpkfjfHk%AA

1- dLekr ikne vknÙk\

2- d% cgepkfjfHk% ikne vknÙk\

3- c) ;k* bfr ink; 'ykd d% 'kCn% i;Dr%\

4- nÙk bfr inL; fd foykein i;Dre\

5- prFkk'k% bR;Fk d% 'kCn% i;Dr%\

6- f'k"; bfr drinL; fØ;kin fde\

5- fjDrLFkkukfu ij;r &

¼d½ LoYi rFkk ------------------cgo'p fo/uk%A

¼[k½ fnukUr p nX/k ----------------------------A

¼x½ -------------------- l[k u vfLrA

¼?k½ d"kkf¥pnfi -------------------------xE;rA

¼M-½ o{kk% -------------------------'kk/kdk%A

&&&&000&&&

R2KPT5

v"Ves ikBs

Lokeh vkRekuUns

^;= tho% r= f'ko%^ bfr e=L; lk/kds R;kxefr'p Lokeh vkRekuUns lno tukuk dY;k.kkFk lefirs vklhrA ls bn'kks lUrs vklhr ;r ;L; /;;okD; lo= i'kflre vklhrA ;Fkk &

^ijx.k ijek.ku iorhdR; fuR;eA

futgfn fodlUrs lfUr lUrs fd;UrsAA*

rL; firs uke /kuhjkes ekrs uke HkkX;orh p vklhrA rk /keijk;.kk vkLrkeA Lokeh vkRekuUnL; tUe 06 vDVcj 1929 re o"k vHkorA vkRekuUnL; ckY;dkYkL; uke ryUns vklhrA ls 27 vxLr 1989 re o"k fuok.k ikl; cãyhu'pkHkorA

rL; y{;eklhr &

^ u Rog dke; jkT; u p Lox ukiuHkoeA

dke; ns[k& rIrkuk ikf.kukekfruk'kueAA*

rL;kutk'·fi rL;kudj.k droUrsA rL;PN;k rL; fe=s 'kHkfpUrd'p jk;ij foodkuUn fo|kihB LFkkfireA r= ch-,M- if'k{k.kL;kfi lefprk uokpkjh 0;oLFkk orrA cLrjouikUrj ukjk;.kij vc>ekM{k= jked".kfe'kukJes LFkkfirsA vL; lfpou iT;ikn& Lokfeuk fuf[kykRekuUnu vio urRo inÙkeA vuu vkJe.k f'k{kk&fpfdRlk&

df"k& tu lok&d"kdif'k{k.k dUn&;okif'k{k.kdUn&pfyrfpfdRlk&foi.ku{k="k p vfr lEiUukfu lokdUnkf.k l´pkfyrkfu lfUrA vk/;kfRed{k=·fi vL; i;kl% i'kflr%A

Lokeh fooodkUkUn% jk;ij f}o"ki;Ur le; 0;rhrokuA ;u bn uxj ifjireHkorA Lokeh foodkuUn& tUe'krkCnh&o"k HkO; Lekjd fuekr l% vkRekun% ik.ki.kuk;rrA v;e vkJe% vk/;kfRedn'kuL; dUnefLrA vkJeo ^ikyhfDyfud* bfr vk"k/kky;% xUFkkYk;% p LFkkfir%A r=o LFkkfir Bkdjjked".knokYk; Loxkiekfu vkUkUnkfu ilrkfuA

Lokeh vkRekun% vrho ifrHkk'kkyh oDrk y[kd'pkfi vklhrA vk/;kRe&lEcU/khuk vU;& fo"k;kuk p iopu% l% n'k [;kfr yC/kokuA rL; f}[k.MkRed ^xhrk&rÙofpUrue^ bfr xFk% vrho leukgj% vfLrA /ken'ku{k= vL; egkHkkxL; dr;% ikBd"k oKkfudn"V;fHkof) dofUrA

LokehvkRekuUnL; lxBudk'kye vioe vklhrA rL; fun'ku lj{k.k p e/;ikUr] egkjk"V&mMhlk&jkTkLFkku&NÙkhlx< cgo% jked".kfoodkuUn&vkJek% ifrf"BrkA v; egki#"k%'k'kodkykno e/kkoh ifrHkklEiUu'p vklhrA lu 1938 re o"k vL; firk egkRek xkfU/kuk LFkkfir cfu;knh&if'k{k.kfo|ky; o/kk;k f'k{kd&#i.k fu;DrA ifr jfookj firk&i=k xkf/ku% n'kukFk lokJee vxPNrkeA r= cky% ryUn% xkfU/ku% Hke.k& lgk;d'pklhrA v=o rL; ckyeufl lokHkkouk&cht LQfVreA fi=k lg cjcUnkxke vL; 'k'ko Nk=thou p 0;rhreA ru lokl ijh{kkl iFke J.;keÙkh; ifrHkk& ifrLFkkfirkA 1951 re o"k ukxij&fo'ofo|ky;u ,e-,llh- ¼fo'k)xf.kr½ mikf/k Lo.kind p inRÙkA lokPpk³d ikl; dfEct fo'ofo|ky;L; ^jXyj Qykf'ki* iklroku lkA

vuUrj Hkkjrh;& i'kkldh;&lok&ijh{kk;kefi lQyrk iklroku ijUr ekf[kd& &ijh{kk R;DrokuA rnuUrj ru Lothou Jhjked".k&foodkuUn&pj.kk lefireA

'kCnkFkk%

bn'k%	¾	,lk
fd;Ur%	¾	fdru
dke;	¾	pkgr g
iuHkoe	¾	iu tUEk@¼ek{k½
vkfr	¾	n%[k
ifjir%	¾	ifo= gvk
LQfVre	¾	vdfjr gvk
vioe	¾	tk io e u gvk gk
ifrf"Brk%	¾	LFkkfir g,
0;rhre	¾	fcrk;k
iklroku	¾	iklr fd;k

vH;kl% i'uk%

1- v/kkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr &

1- vkRekuUnL; fir% uke fde\
2- vkRekuUnL; tUe dnk vHkor\
3- vkRekuUnL; ckY;dkyL; uke fde vklhrA
4- jked".kfe'ku vkJe% d= LFkkfir%\
5- vkRekuUnu fyf[krxUFkL; uke fde\
6- Lokehfoodkuknu% jk;ij dfr o"k 0;rhroku\

2- v/kkfyf[krkuk inkuk fgUnhHkk"k;k vuokn d#r &

1- ekr% uke HkkX;orh vklhrA
2- uRog dke; jkT;eA
3- v= lokdUnkf.k l´pkfyrkfuA
4- bn uxj ifjireHkorA
5- l% n'k [;kfr yC/kokuA

3- v/kkfyf[krkuk inkuk lLdrHkk"k;k vuokn d#r &

1- e Lox ugh pkgrk gA
2- vkRekuUn d firk dk uke /kuhjke FkkA
3- ukjk;.kij cLrj ouikUr e gA
4- Lokeh vkRekun dk lxBu dk'ky vio FkkA
5- mud }kjk thou lei.k fd;k x;kA

4- fjDrLFkkukfu ij;r &

1- vkRekuUnL; ------------ lo= i'kfl re vklhrA
2- ----------------------re o"k vkRekuUn% cgeyhu% vHkorA
3- jk;ij foodkUkUn&fo|kihB ---------------------------------A
4- --------------------------urRo inÙkeA
5- dfEc t fo'ofo|ky;L; -------------------------Qykf'ki iklroku lkA

5- v/kkfyf[krkuk inkuk ey'kCn&foHkfDr&fy³xkfu fy[kr &

'kCn#ie ;Fkk&	ine lekt	ey'kCn% lekt	foHkfDr% lIreh	fy³xe ifYy³x
1-	HkDrL;	&&&&	&&&&	&&&&
2-	HkkX;oR;k%	&&&&	&&&&	&&&&
3-	bPN;k	&&&&	&&&&	&&&&
4-	ikUrj	&&&&	&&&&	&&&&
5-	o/kk;ke	&&&&	&&&&	&&&&

6- v/kkfyf[krkuk inkuk /kkrydkji#"kopukfu p fy[kr&

;Fkk&	ine vklhr	/kkr% vl	ydkj% Yk³x	i#"k% iFke	opue ,d
1-	orr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	lfUr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
3-	dofUr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
4-	vxPNr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
5-	dFk;fUr	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

7- v/kkfyf[krkuk v0;;kuk okD;i;kx d#r &

1- lo= 2- p 3- bne 4- lEifr 5- lg

8- ikB fufgrku iR;;ku fpRok okD; i;kx d#r&

&&&&000&&&

uoe% ikB%

vknu lDre

iLrr lDr vFkoon l fy;k x;k gA pkoy id tku d ckn Hkkr curk gA mle /kku dVu] QVdu] Hkl k fudkyu vkj ml idku dh db ifØ;k, gkrh gA bu lcdk :id vydkj dh lgk;rk l o.ku fd;k x;k gA ;K djuoky dk bl Hkkr d ek?;e l lHkh ykd iklr gk tkr g] ;g dgdj mldh efgek crkb xb gA

p{kel y dke my[kye AA1AA

fnfr%'kiefnfr%'kixkgh okrkikofud AA2AA

v'ok% d.kk xkoLr.Myk e'kdkLr"kk% AA3AA

b;eo ifFkoh dEHkh Hkofr jkè;ekuL;knuL; |kjfi/kkue AA4AA

_r gLrkoutu dY;k·ilpue AA5AA

_ro%iDrkj vkrok% lfeU/kr AA6AA

RkL;knuL; cgLifr% f'kjk cã e[ke AA7AA

|kokifFkoh Jk= l;kpUæel kof{k.kh

llr_"k;% ik.kkikuk% AA8AA

vknuu ;Kop% lo ykdk% lekl;k% AA9AA

'kCnkFkk%

p{k%¾ vk[k] ely¾ ely] dke%¾ bPNk ;k vfHkyk"kk] my[kye ¾ vk[kyh] fnfr%¾ vljk dh ekrk] 'kie¾ li] vfnfr%¾ nok dh ekrk] 'kixkgh¾ li idMu okyh] vikfoud ¾ Hkl dk vyx dju okyk] r.Myk%¾ pkoy] e'kdk%¾ ePNj] r"kk%¾Hkl k] dEHkh¾ LFkkyh] jk/;ekuL;¾ iduokyk] |k¾|ykd] vfi/kkue¾ <Ddu] _re¾ iFoh dk leLr ty] voutue¾ i{kkyu d fy,] dY;k¾ NkVk rkykc ;k ugj mi lpue¾

/kkou /kku d ckn fudyu okyk ty] _rq¾ olUrkfn Ng _r,] lkDrkj¾ idkuoky ;k jlkb;] vkrokh¾ _r lc/kh fnu vkj jkr] lfeU/kr¾ lfe/kk, ¼b/ku½] vknuL;¾ Hkkr dk] cgLifr¾ _Xofnd nork] f'kj¾ f'kj@eLrd] |kokifFkoh¾ vkdk'k vkj Hkfe] Jk=¾ nkuk dku] vf{k.kh¾ nkuk vk[k] ik.kkikuk¾ 'okl vkj fu'okl] ;Kop¾;K djuoky] lekl;k¾ iklr djr g A

vUo;

p{kq ely dke my[kye AA1AA

'kie fnfr 'kixkgh vfnfr vikofud okr AA2AA

d.kk v'ok r.Myk xko r"kk e'kdk AA3AA

b;eo ifFkoh dEHkh Hkofr jkè;ekuL; vknuL; vfi/kkue |k AA4AA

gLrkoutu _re milpue dY;k AA5AA

iDrkj _ro lfeU/kr vkrok AA6AA

RkL; vknuL; f'kj cgLifr e[ke cã AA7AA

Jk= |kokifFkoh vf{k.kh l;kpUæelk ik.kkikuk llr_"k;% AA8AA

;Kop vknuu lo ykdk lekl;k AA9AA

HkkokFk

1- p{k g ely vkj bPNk g vk[kyh ¼ftle ely l /kku dVk tkrk gA½

2- li g fnfr] li idMuokyh g vfnfr vkj ¼Hkl dk pkoy l½ vyx dju okyh g gokA

3- pkoy g xk; : i] (mld d.k g v'o : Ik vkj Hklk g ePNj : IkA

4- ¼pkoy idku d fy,½ ;gh IkFoh ik= cru g vkj idk, tk jg Hkkr ¼d ik=½ dk <Ddu g |ykdA

5- gkFk /kku d fy, _r ;kuh iFoh dk leLr ty gA /kkou ;kuh /kku d ckn fudyk tk ty g og NkVk&ekVk rkykc gA

6- ¼pkoy dk idkuokyh½ jlkb;k g olUrkfn Ng _r, vkj bU/ku g _r l lEcfU/kr fnu vkj jkrA

7- ml vknu ;kuh Hkkr dk eLrd g cgLifr vkj e[k g cgeA

8- ¼ml vknu d½ nkuk dku g |kokifFkoh ;kuh vkdk'k vkj HkfeA nkuk vk[k g l; vkj pUnekA ik.k o viku ok; lkr _f"k gA

9- ;K dju oky vknu d ek?;e l leLr ykd dk iklr djr g A

vH;kl%

1- v/kkfyf[kr ikuk Ik'ukuke mRrjkf.k ILdrHkk"k;k fy[krA

¼d½ nokuk ekrk vfnfr% fd djkfr \

¼[k½ okr% fd djkfr r.MyL; \

¼x½ dL; fi/kku djkfr |k% \

¼?k½ r.MyL; ikddk; dk% dofUr\

¼M½ l;% pUæ'p vknuL; dk Lr%\

¼p½ vknuu dLe lo ykdk% lekI;k% \

2- fHkUuidfrd in fpur &

¼d½ elye] my[kye] 'kie] dY;k] dEHkh

¼[k½ fnfr%] vfnfr%] dUrh] vtuh] 'kdfu%

¼x½ f'kj%] e[ke] oL=e] gLre] ikne]

¼?k½ cgLifr%] |ykd%] iFoh] o#.k%] 'kfu%

¼M-½ ;Kop%] _ro%] olUr%] f'kf'kj%] xh"e%

3- dk"Bdk\rxr"k 'kCn"k mi;Drk foHkfDr ;ktf;Rok fjDrLFkkukfu Ikj;r &

¼d½ v l jk.kk --------- fnfr% 'kiefLrA ¼ekr½

¼[k½ r.Myk% ---------- IkP;UrA ¼dEHkh½

¼x½ jkè;ekuL; vknuL; iDrkj% lfUr ---------- A ¼_r½

¼?k½ --------- e[ke cã vfLrA ¼vknu½

¼M-½ ik.kkikuk% ---------- lIr_"k;% lfUrA ¼ok;½

4- LFkyinkU;f/kdR; Ik'ufuek.k d#rA

¼d½ my[ky elyu vUu dVV;rA

¼[k½ r.Myk% xko% bo lfUrA

¼x½ gLri{kkyukFke _re vfLrA

¼?k½ cgLifr% nokuk x#% eU;rA

¼M-½ on"k |kokifFkoh ;xyno#i.k of.krkA

5- v/kkfyf[krkuk Ik'ukuke mRrjkf.k ekrHkk"k;k fy[krA

¼d½ vkiu vk[kyh vkj ely dk i;kx dgk dgk n[kk g \

¼[k½ gok vukt d lkFk D;k D;k djrh g \

¼x½ vukt d Hkl dk dku Ik x.k e'kd l feyrk g \

¼?k½ viu vkl ikl vkiu fdu fdu ykxk dk jlkb; d #Ik e n[kk g \

¼M-½ mi;Dr eU=k e 'kjhj d fdu fdu vxk dk mYy[k vk;k g \

6- rp IkR;;kUrkuk uohukuk 'kCnkuk fuek.k d#rA

;Fkk & Ikp $ rp & IkDrk

Ukh $ rp & -------

d $ rp & -------

nk $ rp & -------

op $ rp & -------

J $ rp & -------

7- NRRkhlx< dk /ku dk dVkjk dgk tkrk gA viuh Hkk"kk e /ku dh jkikb] funkb] dVkb d xhrk dk lxg dhft,A

8- Hkkr cgr lkj ykxk dk fi; Hkktu gA d{kk d cPp viu fi; Hkktuk dh lph cuk, vkj mud lLdr 'kCn fy[kA

&&&&000&&&

R3FDX6

n'ke% ikB%

ifjokj% y?k ,o oje

rhoxfr l c<rh gb tu l[;k n'k dh ,d ie[k leL;k gA bl leL;k dh of) d dkj.kk e fuj{kjrk Hkh ,d ie[k dkj.k gA f'k{kk dk ipkj&ilkj dj] NkV ifjokj d egRo dk crk;k tk ldrk gA iLrr ikB e lj y ,o gn;Li'kh ifjlokn d ek/;e l cM ifjokj e vku okyh leL;kvk ,o dfBukb;k dk mn?kkfVr djr g, NkV ifjokj d egRo dk fpf=r fd;k x;k gA

¼Tojihf Mr% ekgu% lk;³d 'k;kuk·fLrA rfLeUuo d{k xfg.kh xgdef.k lYkXuk vfLrA ekguL; llrdU;k% }k i=k p lfrA½

Ekkgu % & v| ek Hk'k f'kjkonuk ck/krA jk=k vfi u l[ku 'kf;rk vfLEkA jkf/kd xgdk; ifjR;T; br ,o vkxPNA

jkf/kdk & Ro okj&okj ek vkgo;fl] fdeg djkfe\ vklUu fg nhiekfydkioA xg"k n'k#l;dkf.k vfi u lfUrA fd ,oeo ee thou ;kL;frA bfr fopk; fopk; xgu refl fueXu e eu%A

xkfoUn‰& ¼ifo’;½ firoj! vg fo|ky;kr vkxrk·fLeA 'o% vg fo|ky; u xfe";kfeA ee gLr ';keifVdk y[kuofrdk·fi ukfLrA ,d iLrdefi u orr iBukFke vH;kl&ifLrdkuk r dk dFkkA

f0k|k & ee d{kk/;kfidk ek ifrfnu fo|ky;'kYdir; HkRl;frA lok% ee lgikfBU;% ekeo y{khdR; glfUrA lokfHk% Nk=kfHk% fo|ky;'kYd nÙkeA ek lkUr d{kkif´ tdk;k% ee uke dfr";frA

deyk & ekr%! Ikfrfnueo eg; d{kk/;kfidk fo"k;k/;kidk'p fo|ky;x.ko'k /kkjf;r dFk;fUrA vg r ,d efyu oL= ifj/kk; f0k|ky; ;kfeA ifrfnueo e d{kk;k% cfg% fu"dklu fØ;rA d{kkxok{kkr ,o ikB;eku fo"k; vg Ük.kkfeA

';kek & ekr%! n'keh d{kk r e;k mÙkh.kkA u i"k;fl ek fo|ky; lkEireA xgeo mifo"Vk vg fd dfj";kfeA nfg e f='kr#l;dkf.k vg lfpde.k% if'k{k.k ikIr if'k{k.kky; ;kL;kfeA

xkikyk%& firk%! nfg e 'kr#l;dkf.k ee Hkfxuh fo|k eg; } ØhMud Øre vki.k ;kL;frA

fueyk& firk% ee ik'o fp=dekH;kl ifLrdk ukfLrA nfg e i´pfo'kfr#l;dkf.k v|o rk ØhRok vg fo"k;k/;kid;k nÙk xgdk; dfj";kfeA

jkf/kdk& Lokfeu! b; e i=h euksjek fd;r dkykr #X.kkorrA fdf´pnfi u [kknfr] 'k;kuk ,o fnu ;ki;frA fpfdRlk; vkrjky; xUr /ku&0;oLFkk vfi ukfLrA

lhrk & ee l[;% j'khnk;k% ifj.k;kRlo% vklUuk orrA ee vU;k% l[;% r lgL=k.kk #l;dkuke vfHkUkoku migkjku nkL;fUrA nkL;kfe fdeg rL;A f}'kr #l;dkuk 0;oLFkk fouk dk·fi migkj% vki.kkr u ylL;rA

dforkk & ekr%! th.kkfu e lokf.k oL=kf.kA nhi&ekfydkiof.k r uooL=kf.k ifj/kk; y{ehi tu dfj";kfeA

lhek & fir%! Ukxj lo= nhiekfydkio.k% 'kHkkxeu vfXuØhMudkuk iVkiV'kCn% J;rA vLekd xg u 'kkf/kr u /koyhdrA ee l[khfHk% r iHkru /ku0;;u Øhrkfu vfXuØhMudkfuA bnkuh r vgefi i´p'kr#l;dkuke vfXuØhMudkfu Øre bPNkfeA

ekgu% & u Ik';Fk ;; ee voLFkkeA Toj.k oir e 'kjhjeA ,dr% #X.kkoLFkk] vijr% LokFk ifjrk ;; lo LoeukjFkku ,o Ik';FkA lR;eokP;r& ^^fNn"ouFkk% cgyh HkofUrA**

¼ekguL; vfHkUu fe=e vfuy% LoHkk;;k lg ifo'kfr } dU; efgek] xfjek pkfi ifo'kr%A lo vfHkoknu dofUrA½

vfuy%& fe=oj! ueLr! 'kHk r nhikRlo% HkorA uxj lo= nhi&egkRloL; pkdpD; n';rA Ro dFk Eykue[k% 'k;kuk·flA vLekd Hkkr tk;kfi dFk r".kheifo"VkA vfi d'kfyu% HkoUr%A

ekgu%& Hkkroj! vfLeu g"kkYykle; dkrjopukfu cok.k% vLekd Hkfxuh i=ku] dU;dk% p dFk n%[k&lkxj fueTt;flA lLkj n%[kkfu l[kkfu p pØor ifjorUrA vkRecy u R;kT;e vkiRLofiA

ekgu%& fe=! ifjokj ,o ee n%[kL; dkj.keA ee ,"kk i=h ';kek fookg;kX;k ltkrkA

vfuy%& fe=oj! Uk r opk·fHkUkUnkfeA fpUrk r f'k{kknh{kkdr p dj.kh;kA ;fn vU;Fkk u eU;l rfg ogr ifjokj% ,o ;"enh; n%[kdkj.keA oR;k r HkoRln'keo vFkkiktu fØ;r e;kA

Jfr%& Hkkroj! ee r dU; i=le ,o LrA ,dk r fpfdRlk{k= vk;on& ikB;Øe v/;;u djkfrA vijk lLdr Lukrdkùkj ikB;Øe iBfrA vkok LoLFkk ilUUkk Lo } dU;d·fi pA vLekd lnu lkuUneA

jkf/kdk& Hkfxfu! vkokH;k fu;kft rifjokjfo"k; dnkfi u fpfUrreA vfLeu fo"k; ioe vkok u ifjrkA

vfuy% & xrL; 'kkpu u dj.kh;eA y?kifjokjfo"k; vU;ku ij;u Loifjokje vfi idkjkUrj.k ij;A eRlkeF;kulkj.k vg lg;kxk; rRij%A bnkuhe vLeku xgxeuk; vkKki;rA

ekgujkf/kd & xPNr Hkoku iun'kuk;A

¼JR;fuyk i=hH;k lg Loxg ifr xPNr%½

'kCnkFkk%

lk;³d	¾	iy³x ij
Hk'k	¾	cgr
f'kjkonuk	¾	fljnn
br ,o	¾	;gh
vkgo;fl	¾	cykr gk
vklUu	¾	fudV
;kL;fr	¾	tk;xk] chrxk
Xkgurefl	¾	xgu v/kdkj eA
';keifVVdk	¾	LyV@iVVh
Yk[kuofrdk	¾	ifly
'kYdir;	¾	'kYd iVku d fy,
HkRl;fr	¾	MkVr g
Yk{khdR;	¾	y{; djd
d{kkif´ tdk;k%	¾	d{kk d jftLVj e l
dfr";fr	¾	dkVx
ifj/kk;	¾	igudj
;kL;kfe	¾	tkÅxh
xok{kkr	¾	f[kMdh l
ikB;eku	¾	i<k; tk jg
i"k;fl	¾	re Hktr gk
mifo"Vk	¾	cBh gb
lfpde.k%	¾	flykb d dke dk
ØhMud	¾	f[kyku

vki.k ¾ ndku@ ckt kj
fp=de ¾ fp=dkj d dke dh
ØhRok ¾ [kjhndj
fd;r ¾ fdru
#X.kk ¾ chekj
vkrjky;e ¾ vLirky
ifj.k;kRlo% ¾ fookgkRlo
th.kkfu ¾ QV ijku
vfXuØhMudkuke ¾ iVk[kk dk
'kkf/kre ¾ lkQ fd;kA
/koyhdre ¾ lQnh nh xbA ikrk x;k
oir ¾ dkIk jgk gA
fNn"ouFkk% cgyh HkofUr ¾ dfe;k e cgr vuFk gkr gA
LoeukjFkku ¾ viuh bPNkvk dk
pkdpD;e ¾ pdkpd] pdkpk/k
Hkkr tk;k ¾ HkkHkh] Hkk tkb
ifjorUr ¾ ?ker g
vkiRLofi ¾ foifÙk e Hkh
[ky ¾ fuf'pr gh
vfHkUkUnkfe ¾ lger g
dj.kh;k ¾ djuh pkfg,
;"enh;e ¾ rEgkjh
oR;k ¾ ukdjh l@ i'k l
'kkpue ¾ 'kkd
idkjkUrj.k ¾ vyXk&vyx <x ;k ek/;e l

vH;kl%

1- lLdrHkk"k;k mÙkjr &

¼d½ ekgu% d;k onu;k ihfMr% vklhr\
¼[k½ fd io vklUu orr\

¼x½ xkfoUn¼ du dkj.ku fo|ky; xUr u bPNfr\

¼?k½ dk lfpde.k¼ if'k{k.k ikIr ok´Nfr\

¼³½ xkiky¼ fdeFk #I;dkf.k ;kpr\

¼p½ nhiekfydkiof.k dL; 'kCn¼ J;r\

¼N½ llkj dkfu&dkfu pØor ifjorUr\

¼t½ d¼ ifjokj¼ ,o oje\

2- v/kkfyf[krkuk 'kCnkuk ey'kCn&foHkfDropu&fy³xkfu fy[kr &

	'kCn#ie	ey'kCn¼	fy³xe	foHkfDr¼	opue
;Fkk&	fo|ky;kr	fo|ky;	ifYyx	i´peh	,d
1-	ir;;	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	lokfHk¼	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
3-	d{kk;k¼	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
4-	eg;e	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
5-	Hkk;;k	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
6-	vkok	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

3- v/kkfyf[krkuk i'ukukeÙkjkf.k fy[kr&

1- ^DRok vkj Y;i* dk i;kx dj okD; cukb;A

2- ^milx vkj iR;;* e vrj mnkgj.k lfgr fyf[k,&

3- ^rji ,o rei* iR;; dk i;kx dj lkFkd 'kCn dk fuek.k dhft,A

4- lg]lkd] lk/k] le dk i;kx dj okD; cukb;A

4- fuEukfdr"k rRi#"klekl fpur &

TojihfMr¼] f'kjkonuk] d{kk/;kfidk] ifrfnue] fo|ky;x.ko'k¼] vH;klifLrdk] nhiekfydk] nhikRlo¼A

5- v/kkfyf[kr"k in"k dnUrrf) r&'kCnku iFkd d#r &

'kCnk & xRok] eeK] ioDrk fyf[kr] ifBre] okRlY;e] u"V] Hkonh;% y?kre] ift rA

1-	dnUrk	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
		&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
2-	rf) rk	&&&&	&&&&	&&&&	&&&&
		&&&&	&&&&	&&&&	&&&&

6- v/kkfyf[kr in"k lf/kfoPNn dRok ukekfu fy[kr &

	ine	lf/k&foPNn	uke
¼d½	egrhg	&&&&	&&&&
¼[k½	'k;kuk·fLr	&&&&	&&&&
¼x½	rfLeUuo	&&&&	&&&&
¼N½	fNn"ouFkk	&&&&	&&&&
¼³½	r".khe ifo"Vk	&&&&	&&&&

&&&&000&&&

R3Y61G

,dkn'k% ikB%

fofp=% lk{kh

iLrr ikB Jh vkeidk'k Bkdj }kjk jfpr dFkk dk lEikfnr v'k gA ;g dFkk cxyk d ifl) lkfgR;dkj cfdepUn pVth }kjk U;k;k/kh'k :i e fn, x, Qly ij vk/kkfjr gA lR;klR; d fu.k; gr U;k;k/kh'k dHkh&dHkh ,lh ;fDr;k dk i;kx djr g ftll lk{; d vHkko e Hkh U;k; gk ldA bl dFkk e Hkh fo}ku U;k;k/kh'k u ,lh gh ;fDr dk i;kx dj U;k; dju e lQyrk ikb gA

d'pu fu/kuk tu% Hkfj ifjJE; fdf¥pn foÙkeikftrokuA l% Loi= ,dfLeu egkfo|ky; io'k nkr lQyk tkr%A rÙku;% r=o Nk=kokl fuolu vè;;u lyXu% leHkrA ,dnk l firk rutL; #X.krkekd.; 0;kdyk tkr%A i= n"V p ifLFkr%A ijeFkdk';u ihfMr% l cl;ku fogk; inkfrjo ikpyrA

inkfrØe.k lpyu lk; le; vl;lk xUr0;kn nj vklhrA fu'kkUèkdkj ilr fotu in'k in;k=k u 'kHkkogkA ,o fopk; l ik'ofLFkr xke jkf=fuokl dÙk df¥pn

xgLFkeikxr%A d#.kkijk xgh rLe vkJ; ik;PNrA fofp=k noxfr%A rL;keo jk=k rfLeu xg d'pu pkj% xgkH;Urj ifo"V%A r= fufgrkedk e¥t"kke vknk; iykf;r%A pkjL; iknèofuuk ic)k·frfFk% pkj'kd;k reUo/kkor vxg.kkPp] ij fofp=ke?kVrA pkj% ,o mPp% Økf'krekjHkr ^^pkjk·; pkjk·;e** bfrA rL; rkjLoj.k ic)k% xkeokflu% Loxgkn fu"ØE; r=kxPNu ojkdefrfFkeo p pkj eRok vHkR l;uA ;|fi xkeL; vkj{kh ,o pkj vklhrA rR{k.keo j{kki#"k% re vfrfFk pkjk·;e bfr i[;kI; dkjkxg ikf{kirA

vfxe fnu l vkj{kh pk;kfHk;kx r U;k;ky; uhrokuA U;k;k/kh'kk cfdepUn% mHkkH;k iFkd&iFkd fooj.k JrokuA lo oÙkeoxR; l r funk"ke veU;r vkjf{k.k p nk"kHkk tueA fdUr iek.kkHkkokr l fu.kr uk'kDukrA rrk rk vfxe fnu miLFkkre vkfn"VokuA

vU;|% rk U;k;ky; Lo&Lo&i{k iu% LFkkfiroUrkA rno df'pn r=R;% depkjh lekxR; U;on;r ;r br% Øk'k};kUrjky df'pTtu% dukfi gr%A rL; er'kjhj jkteekx fud"kk orrA vkfn';rk fd dj.kh;fefrA U;k;k/kh'k% vkjf{k.ke vfHk;Dr p r 'ko U;k;ky; vkurekfn"VokuA

vkn'k ikI; mHkk ikpyrkeA r=kiR; dk"BiVy fufgr iVkPNkfnr ng LdUèku ogUrk U;k;kf/kdj.k ifr ifLFkrkA vkj{kh l i"Vng vklhr] vfHk;Dr'p vrho Ñ'kdk;%A Hkkjor% 'koL; LdUèku ogu rRÑr n"dje vklhrA l Hkkjonu;k ØUnfr LeA rL; ØUnu fu'kE; efnr vkj{kh reokp&^j n"V! rfLeu fnu Ro;k vg pkfjrk;k e¥t"kk;k xg.kkn okfjr%A bnkuh futÑR;L; Qy HkkM-{oA vfLeu pk;kfHk;kx Ro o"k=;L; dkjkn.M ylL;l** bfr ikP; mPp% vglrA ;FkkdFk¥fpn mHkk 'koekuh; ,dfLeu pRoj LFkkfiroUrkA

U;k;k/kh'ku iuLrk ?kVuk;k% fo"k; oDrekfn"VkA vkjf{kf.k futi{k iLrrofr vk'p;e?kVr l 'ko% ikokjdeilk; U;k;k/kh'kefHkok| fuofnroku& ekU;oj! ,ru vkjf{k.kk vèofu ;nDr rn o.k;kfe ^Ro;k vg pkfjrk;k% e¥t"kk;k% xg.kkn okfjr%] vr%

fu tÑR;L; Qy HkM-{oA vfLeu pk;kfHk;kx Ro o"k=;L; dkjkn.M ylL;l* bfrA U;k;k/kh'k% vkjf{k.k dkjkn.Mekfn'; r tu llEeku eDrokuA vr,okP;r &

n"djk.;fi dekf.k efroHko'kkfyu%A
uhfr ;fDr lekyEC; yhy;ks idqorAA

'kCnkFkk%

Hkfj & vR;f/kd
mikf troku & dek;k
fuolu & jgr g,
ilr & Qyu ij
fotu in'k & ,dkUr in'k e
'kHkkogk & dY;k.kdkjh
xgh & xgLFk
noxfr% & HkkX; dh yhyk
iykf;r% & Hkkx x;k]
ic)% & tkxk gvk
Rofjre & 'kh?kxkeh
ifLFkr% & pyk x;k
vFkdk';u & /kukHkko d dkj.k
inkfrjo & iny gh
il% & i#"k dk
fufgrke & j[kh gb
vUo/kor & ihN&ihN x;k
Økf'kre & fpYyku
rkjLoj.k & Åph vkokt e
vHkR l;u & Hkyk&cjk dgk
i[;kl; & LFkkfir djd
pk;kfHk;kx & pkjh d vkjki e
uhroku & y x;k
voxR; & tkudj
nk"kHkk tue & nk"kh

miLFkkre	&	mifLFkr gksu d fy,
vkjf{k.ke	&	lfud
vkfn"Voku	&	vkKk nh
LFkkfiroUrk	&	LFkkiuk dh
r=R;%	&	ogk dk
U;on;r	&	ikFkuk dh
Øk'k};kUrjky	&	nk dkl d eè;
vkfn';rke	&	vkKk nhft,
miR;	&	ikl tkdj
dk"BiVy	&	ydMh d r[r ij
fufgre	&	j[kk x;k
iVkPNkfnre	&	diM l <dk gvk
ogUrk	&	ogu djr g,
Ñ'kdk;%	&	detkj 'kjhjokyk
Hkkjor%	&	Hkkjokgh
Hkkjonu;k	&	Hkkj dh ihMk l
ØUnue	&	jku dk
fu'kE;	&	lu djd
efnr%	&	i lUu
HkM-{o	&	Hkkx djk
pRoj	&	pkdkj txg] pcrjij
ylL; l	&	iklr djkx
ikokjde	&	ycknk
vilk;	&	nj djd
vfHkok|	&	vfHkoknu djd
vèofu	&	jkLr e
;nDre	&	tk dgk x;k
okfjr%	&	jkdk x;k
eDroku	&	NkM fn;k
lekyEC;	&	lgkjk ydj
yhy;o	&	[ky&[ky e
vkfn';	&	vkn'k ndj

vH;kl%

1- vèkkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLÑrHkk"k;k fy[kr&

¼d½ fu/ku% tu% dFk foÙke mikftroku\

¼[k½ tu% fdeFk inkfr% xPNfr\

¼x½ i lr fu'kkUèkdkj l fde vfpUr;r\

¼?k½ oLrr% pkj% d% vklhr\

¼M-½ tuL; ØUnu fu'kE; vkj{kh fdeDroku\

¼p½ efroHko'kkfyu% n"djkf.k dk;kf.k dFk lkèk;fUr\

2- j[kkfdr ineèkkR; i'ufuek.k d#r&

¼d½ i= n"V l% ifLFkr%A

¼[k½ d#.kkijk xgh rLe vkJ; ik;PNrA

¼x½ pkjL; iknèofuuk vfrfFk% ic)%A

¼?k½ U;k;k/kh'k% cfdepUn% vklhrA

¼M-½ l% Hkkjonu;k ØUnfr LeA

¼p½ mHkk 'ko pRoj LFkkfirorUrkA

3- lfU/k@lfU/kfoPNn p d#r&

¼d½ inkfrjo & -------------------- $ --------------------

¼[k½ fu'kkU/kdkj & -------------------- $ --------------------

¼x½ vfHk $ vkxre & --

¼?k½ Hkktu $ vUr & --

¼M-½ pkjk·;e & --------------------- $ ---------------------

¼p½ xg $ vH;Urj & --

¼N½ yhy;o & --------------------- $ ---------------------

¼t½ ;nDre & --------------------- $ ---------------------

¼>½ ic)% $ vfrfFk%& --

4- v/kkfyf[krkfu inkfu fHkUu&fHkUu iR;;kUrkfu lfUrA rkfu iFkd~ ÑRok fufnZ"Vkuk iR;;kuke/k% fy[kr&

ifjJE;] mikftroku] nkif;re] ifLFkr%] n"Ve] fogk;] i"Voku] ifo"V%] vknk;] Økf'kre] fu;Dr%] uhroku] fu.khre] vkfn"Voku] lekxR;] fu'kE;] ikP;] vilk;A

Y;i	Dr	Dror	reu
----------------	-------------------	---------------------	----------------------------
----------------	-------------------	---------------------	----------------------------
----------------	-------------------	---------------------	----------------------------

5- fHkUuiÑfrdk in fpur&

¼d½ fofp=k] 'kHkkogk] 'kd;k] e¥t"kk

¼[k½ d'pu] fdf¥pr] Rofjr] ;nDre

¼x½ i=k%] ru;%] 0;kdy] rut%

¼?k½ d#.kkij%] vfrfFkijk;.k%] ic)%] tu%

6- ¼d½ ^fud"kk* ^ifr* bR;u;k% 'kCn;k% ;kx f}rh;k&foHkfDr% HkofrA mnkgj.keu|lR; f}rh;k&foHkDr% i;kx ÑRok fjDrLFkkuifr d|#r&

;Fkk& jkte.kx fud"kk er'kjhj orrA

¼d½ ---------------- fud"kk unh ogfrA ¼xke½

¼[k½ ---------------- fud"kk vk"k/kky; orrA ¼uxj½

¼x½ rk ---------------- ifr ifLFkrkA ¼U;k;kf/kdkfju½

¼?k½ ekgu% ---------------- ifr xPNfrA ¼xg½

¼[k½ dk"Bd"k nÙk"k in"k ;Fkkfufn"Vk foHkfDr i;T; fjDrLFkkukfu ij;r&

¼d½ ---------------- fu"ØE; cfgjxPNrA ¼xg 'kCn ipeh½

¼[k½ pkj'kd;k vfrfFk% ---------------- vUo/kkorA ¼pkj'kCn f}rh;k½

¼x½ xgLFk% ---------------- vkJ; ik;PNrA ¼vfrfFk 'kCn prFkh½

¼?k½ rk ---------------- ifr ifLFkrkA ¼U;k;k/kh'k 'kCn f}rh;k½

7- vèkkfyf[krkfu okD;kfu cg|opu ifjorr;r&

¼d½ l cl;ku fogk; inkfrjo xUr fu'p; ÑrokuA

¼[k½ pkj% xke fu;Dr% jkt i#"k% vklhrA

¼x½ d'pu pkj% xgkH;Urj ifo"V%A

¼?k½ vU; |% rk U;k;ky; Lo&Lo&i{k LFkkfiroUrkA

&&&&000&&&

R4GX4R

R4QT6E

}kn'k% ikB%

geUr&o.kue~

*¼lLdr lkfgR; e ik;% dfox.k _rvk dk o.ku djr g fdUr geUr o.ku mUg vf/kd ugh :prkA vkfn dfo bl d viokn gA mUgku lLdr e/kj 'kyh e bl _r dk ekgd o.ku fd;k gA iLrr in;k'k ^okYehfd&jkek;.ke** d vj.;dk.M l mn/kr gA½*

v; l dky% lEikIr% fi;k ;Lr fi;onA

vydr bokHkkfr ;u loRlj% 'kHk% AA 1AA

uhgkj i#"kk ykd%] ifFkoh lL;'kkfyuhA

tykU;uiHkkX;kfu] lHkxk g0;okgu%AA 2AA

loeku n< l;l fn'keUrdlforkeA

foghufrydo L=h ukRRkjk fnDidk'krAA 3AA

idR;k fgedk'kk<;k njl;'o lkEireA

;FkkFkukek l0;Dr fgeoku fgeoku fxfj%AA 4AA

vR;Ur l[k l¥pkjk e/;kgk Li'kr% l[kk%A

fno lk% lHkkxkfnR;k'Nk;k lfyynHkkxk%AA 5AA

enl;k% luhgkjk% iV'khrk% lekgrk%A

'kU;kj.;k fge/oLrk fnolk HkkfUr lkEireAA 6AA

jfo lØkUr&lkHkkX;Lr"kkjk#.k'khry%A

fu% Üok lkU/k bokn'k'pUnek u idk'krAA 7AA

T;kRLuk r"kkjefyuk ik.kekL;k u jktrA

lhro pkri ';kek y{;r u r 'kkHkrAA 8AA

idR;k 'khryLi'kk fgefo)'p lkEireA

iokfr if'pek ok;% dky f}x.k'khry%AA 9AA

[ktji"ikdfrfHk% f'kjkfHk% i.kr.My%A

‘ ’kkHkUr fd¥pnkuek% 'kky;% dudiHkk% AA 10AA

vo';k;rekUu)k uhgkjre lk ork%AA

illrk bo y{;Ur foi"ik oujkt;% AA 11AA

'kCnkFkk%

i#"k%	¾	dBkj
lHkxk	¾	lUnj
g0;okgu%	¾	vfXu
loRlj%	¾	o"k] lky
uhgkj i#"k%	¾	vkl d dkj.k vdMk gvkA
vuiHkkX;kfu	¾	mi;kx d v;kX;
fgefo)%	¾	cQ l tek gvkA
vUrd lfork fnd	¾	nf{k.k fn'kk ¼nf{k.k fn'kk vUrd&;e dh fn'kk ekuh tkrh gA½
vkn'k%	¾	'kh'kk] ni.k
y{;r	¾	fn[kkb nrk gA
'kky;%	¾	cM /kku d ik/k
vo';k;	¾	vklA

lekl%

lL;'kkfyuh	¾	lL;u ¼vUuu½ 'kkyr ¼'kkHkr½ bfrA
g0;okgu%	¾	g0; ogrhfrA
fgedk'kk<;	¾	fgeL; dk'k% bfr fgedk'k% ru vk<;%A
luhgkjk%	¾	uhgkj.k lfgrk%
vo';k;&rekUu)k% u)k%A	¾	vo';k; p re'p bfr vo';k;rel rkH;k

vH;kl%

1- vèkkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLÑrHkk"k;k fy[kr&

1- geUr dky fd l [kkog Hkofr\
2- dhn'kk fno l k Hkofr geUr\
3- vfLeu _rk 'kky;% dkeoLFkk ifr i |Ur\

2- vèkkfyf[krku okD;ku lLd rHkk"k;k vuokn d#r &

1- bl _r l loRlj 'kkfHkr gkrk gA
2- bl le; /ki vPNh yxrh gA
3- geUr e mRRj fn'kk efyu fn[kkb nrh gA
4- 'khr d Mj l i{kh lkkuh e ugh ?kl r gA
5- bl le; o{k lk, l fn[kkb nr gA

3- vèkkfyf[krkux.k vH;kl dk;l d#r &

1- iFke 'ykd dk vUo; dhft,A
2- pkFk 'ykd e miek dk le>kb,A
3- bl o.ku d vk/kkj ij geUr dk o.ku dhft,A
4- vkBo 'ykd dk vFk fyf[k,A
5- dfo u 'kkfy /kku d fy, dku&dku l fo'k"k.k fn, g\

&&&&000&&&

R4ZP82

R59K9P

=;kn'k ikB

;k=k e³xyEifr

*¼fo"k; Ikko'k& vUrfj{k d Kku&foKku dh IkjEijk e Hkkjrh;k dk ;kxnku oUnuh; jgk gA bIh ijEijk dh ,d dMh **bIjk** }kjk i{kfir e³xy;ku gA bIjk d bI IQy vfHk;ku u vUrfj{k IEcU/kh 'kk/k d {k= e IEi.k fo'o e Hkkjr dk opLo LFkkfir fd;k gA iLrr ikB e exy;ku I IEc) ¼db rF;k dk mn?kkfVr fd;k x;k gA½*

5 uoEcj 2013 [kh"VkCnL; Ck/kokIj Io= e³xye e³xyfefr èofu Hkkjr 0;kIrk vkIhrA Hkkjrh;kuk nf"V bIjkILFkk;k e³xyØk;Øe vkIhrA Jhgfjdk Vk;k Irh'k/koukUrfj{kdUæ mifLFkrk tuk mYyfIrk IfUrA Ikk;% Ik/kIIroknu e³xy;kuL; iokgd HkkX IfØ;% vHkorA rr fue"kkuUrje ,o rL; IkQY;e vIkQY;e ok fu/kkfjre vkIhrA ij c/kokIj e³xye;% vHkor] ;nk eke fe'ku ekI vkfcVj fe'ku bR;L; IkFke pj.k IQy tkreA

e³xy;kuL; IQyijh{k.ku u doy HkkjrL; vfir ,f'k;kegk}hiL;kfi ifr"Bk of'odiVy Ief/krkA ;r v|kof/kIk;Ur u fg d'pu n'k Lodh; IkFkei;kI e³xyxg ifr ;kui"k.k IQyrkEk vyHkrA g"kL; fo"k;k·; ;r Hkkjr futiFke i;kI ,o Loy{; ikIRkokuA vefjdk] ;jki I?k] Ikfo;r:I bfr =;.k Ig Hkkjr prFk n'k vfLr ;L; f=o.k èo t e³xyxg IkfrHkkfr vfi pkL; n'kL; ikfof/kddk'ky Ikfrikn;fr A

lEifr lLkj·fLeu e³xyxg ifr ;kui"k.kL; ,di¥pk'kr ¼51½ i;klk% vHkouA r"k i;kl"k ,dfo'kfri;klk% ¼21½ ,o lQyk% tkrk%A i;kl·fLeu vefjdkn'kL; lkFke% i;kl% vfi foQy% tkr%A uklk pr"k"B;Rrjdkufo'kfr[kh"VkCn ¼1964½ ^ejhuj&4* fe'ku bfr ekè;eu e³xyxgd{k ikIrokuA

lkekU;r;k vUrfj{kL; vUo"k.kL; dk;Øe% vfr0;;lkè;% HkofrA ij¥p vLekd e³xydk;ØeL; bn of'k"V;e vfLr ;n= vrho U;u /kueo 0;;hHkreA vfLeu Øk;Øe i¥pk'knÙkjdkfV&#l;dkfu ¼450½ fuof'krkfuA ,rkon/kue U;ue vklhr vU;n'kh;ki{k;k A vfi p uklkk;k% ^ekou* fe'ku bR;L; 0;;hHkr/kuL; n'ke% Hkkx% orrA vrk·R;f/kd /ku r onf'kdpyfp=kfuek.k fuof'kr HkofrA Hkkjr% ^rjyekVj* bfr ifof/kuk e³xyd{kk;k e³xy;ku LFkkfirokuA rr% io u fg d'pu n'k% ,rkn'kk; dk;Øek; ^rjyekVj* bfr ifof/k i;DrokuA ;r% ik;% vL; lkfo/k% i;kx% pUæxgd{kkio'kk; fØ;r A

PSLV C-25 i{kid;kuu e³xy;ku if{kIrokuA e³xy;kuL; xfr% ifr fue"ke 22-57 fdyksehVj lkfjehre bfr vklhrA oKkfudk% xfrfu;U=k.k dRok lkfr fue"ke 4-6 fdyksehVj ifjfer droUr%A v; dk;Øe% dfBure% vklhrA ;r% v= vo/k;rk b;e vklhr ;r ;kuL; xfr ,rkoUeUn ek Hkor ;u rr ;ku e³xyL; vf/kdj.k èoLr HkorA vfi p ;kuL; ox% vfi ,rkn'k% rho% u L;kr ;u rr e³xyd{kkr cfg% vUrfj{k foylrRkke vklukr A vL; ;kuL; ekx% llr/kk ifjofrr%A

e³xy;kuu lk/k dfri;kfu i;kxkRedkfu midj.kkfu ;U=kf.k pkfi if"krkfuA r"k Nk;kxkgd;U=.k e³xyxg ;kuL; io'k ,o rL; xgL; fp=e vf/kxreA oLrr% vL; lk;kxL;kí';e r= thoukfLrRoL; vUo"k.keoA fd cãk.M ifFk0khxg ,o thok% fo|Ur bfr eyi'u%A vfi p fd e³xy thoue vklhr vkgkfLor Hkfo";fr ok\ RkL;k/kkjL;] ljpuk;k%] okrkoj.kL; r=LFkk% ; [kfutinkFkk% rL;kè;;ueA fd exyxg tyL; vfLrRoe vklhr\ fde= jDrxg ehFku vfLr ok u ok] ;r% rL;kfLrRoeo tfod fØ;kdyki fufn'kfr A ,r lk'uk% vfi 'kk/kuh;k%A

[ky vLekd e³xy;kudk;Øe% lexkUrfj{kkUo"k.kL; 'kk/kdk;ØeL; vkn'kHkr%A vL; lkQY;u vUrfj{k HkkjrL; iHkko% mRd"krk ikIukrA vuu vUrjh{k0;olk;L; volj% vk;kL;fr ;oku'pkfi lfØ;k% Hkfo";fUrA

'kCnkFkk%

fue"kkUkUrje¾ dN le; d ckn gh] ikfo'kr¾ io'k fd;k] of'odiVy¾ lEi.k fo'o e] lef/krk¾ c<k;k] vyHkr ¾ iklr fd;k] ifrHkkfr¾ fn[kkb nrk g] ikfof/kddk'kYke¾ rduhfd d'kyrk] [kh"VkCn ¾ lu] 0;;hHkre¾ [kp gvk] pUæd{kkio'kk; ¾ pUæek d d{kk e io'k d fy,] vdjkr ¾ fd;k] ,rkoUeUne¾ bruk /khek] foylrRoe ¾ [kk tkuk] vf/kxre¾ iklr gkuk] llr/kk ¾ lkr ckj] vkgkfLor¾ vFkok] vk;kL;fr¾ vk;xk] vfi p¾ vkj A

ifjHkkf"kd 'kCnkoY;k% ck/k%

1- **bljk &** ;g Indian Space Research Organisation ;kuh Hkkjrh; vUrfj{k vuqlU/kku laxBu dk lf{klr :i gA ftldk e[;ky; c³xyksj e gA lLFkku dk e[; dk;Z Hkkjr d fy, vUrfj{k lECU/kh rduhfd miyC/k djokuk g A

2- **eke&** (Mars Orbiter Mission ¾ exy df{k= fe'ku & Hkkjrh; e³xy;ku ifj;ktuk dk vkipkfjd uke A

3- **efjuj&9 &** iFke vUrfj{k foeku Fkk ftlu fdlh nlj xg ij nLrd nh A vefjdh vUrfj{k ;ku efjuj&9] 30 eb 1971 dk exy dh d{kk e io'k fd;kA

4- **ukLk&**National Aeronautics And Space Administration ;kuh jk"Vh; oekfudh vkj vUrfj{k icU/ku dk lf{klr :i g A ;g l;Dr jkT; vefjdk dh ljdkj dh 'kk[kk g tk vUrfj{k vUo"k.k] oKkfud [kkt rFkk oekfudh l'kk/ku l lEc) gA

5- **ekou&** (MAVEN) & Mars Atmostphere And Volatile Evolution dk lf{klr :i g A ukLk d }kjk ;g e³xy xg d ifjo'k dk vè;;u gr cuk;k x;k vUrfj{k 'kk/k;ku g A

6- **PSLV-C 25 –** Polar Satellite Launch Vehicle ;kuh /koh; mixg i{ki.k ;ku* dk lf{klr :i g A

7- **;ku d ekx ifjoRku e dfBurk d dkj.k &** exy;ku dh xfr fu;U=.k djuk dfBu dke Fkk] D;kkfd ;fn ;ku dh xfr exy d x#Rokd"k.k l de gk tkrh rk e³xy viuh vkj ;ku dk [khp yrk] ftll exy dh lrg l ;ku Vdjk dj u"V gk tkrkA vkj ;fn xfr vf/kd rho gk tkrh rk ;ku e³xy dh d{kk l ckgj gh gk tkrkA vr% ekeyk x#Rokd"k.k l rkyey cBku dk Fkk A

vH;kl %

1-v/kkfyf[kr kuk Ik'ukuke mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr &

d- e³xy;ku dr% foeDre\

[k- d% n'k% Lodh; iFkei;kl e³xyxgd{ke vyHkr\

Xk- HkkjrL; e³xydk;Øe dfr /kukfu 0;;hHkrkfu\

?k- dfr/kk e³xy;kuL; ekx% Ikfjofrr%\

Ä- d d n'kk% e³xyxgd{k ikIroUr%\

2- **dk"Bkr 'kCnku fpRok ;kt;r &**

vUrfj{k] ekou] HkkjrL;] vefjdk;k%] Hkek] eke] #lL;]
midj.kkfu] rykfu] vUrfj{kkUo"k.kL;] foeku;k=k;k%]

d- HkkjrL; e³xyfe'ku bR;L; uke ------------ vfLr A

[k- ^ejhuj&9* ------------ n'kL; lQy% i;kl% fo|r A

Xk- e³xy;kuu lk/k ------------- if"krkfu A

?k- e³xy;kudk;ØEk% lex ------------- Ikiì¥pL; vkn'kHkr% A

Ä- e³xyfe'ku bR;L; lkQY;u ---------- HkkjrL; iHkko% mRd"krk ikIL;fr A

3- **v/kkfyf[krkuk i'ukuk mÙkjkf.k lLdrHkk"k;k fy[kr &**

d- e³xyfe'ku bR;L; ekxL; Ikfjoru dk vo/k;rk\

[k- vLekd e³xy;kuL; dkfu ie[kkí';kfu\

Xk- fdeFk e³xydk;Øe% lex&vUrfj{kkUo"k.ki i¥pL; vkn'kHkr%\

?k- vUrfj{k vUo"kek.kk;k% lLFkk;k% fo"k; fy[kr A

Ä- xgifjokj e³xyxgL; dk fLFkfr% \

4-**ikB i;Drk I[;k ILdr fofy[; rnÙkjoÙkh I[;k vfi fy[kr&**

mnkgj.ke& 20&fo'kfr] 21&,dfo'kfrA

51] 21] 1971] 450]

5-d du lEc) vfLrA okD; fy[kr &

1-b l jk	1- /koh;kixgL; i{kid;kue
2-eke	2- jk"Vh;&oekfudh vUrfj{k&lkcU/k¥p
3-ejhuj&9	3- thoukfLrRolpde
4-ekou	4- ukl;k fufer 'kk/k;kue
5-PSLV C&25	5- Hkkjrh;kUrfj{k&vUklU/kku&lxBuu
6-ukl k	6- lrh'k/koukUrfj{kdUn.k
7-gfjdkVk	7- iFke lQy lk;kl
8-ehFku	8- ekl vkfcVj fe'ku bR;uu

&&&&000&&&

R5IGBC

व्याकरणखण्ड

शब्द रूप

मूल धातु, प्रत्यय, उपसर्ग, को छोड़कर सार्थक शब्द प्रातिपदिक कहलाते हैं। इन्हीं प्रातिपदिकों के अन्त में पद निर्माण के लिए सुप् और तिड्. प्रत्यय लगाए जाते हैं। संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के साथ लगने वाले कारक चिह्न को सुप् प्रत्यय तथा क्रिया रूप बनाने के लिए धातुओं के साथ लगने वाले प्रत्ययों को तिड्. प्रत्यय कहते हैं।

प्रातिपदिक शब्द दो प्रकार के होते है –

(i) अजन्त अर्थात् स्वरान्त (जिनके अन्त में स्वर होते हैं।)

जैसे – राम, हरि, गुरु, गौ आदि।

R5SCCZ

(ii) हलन्त अर्थात् व्यञ्जनान्त (जिनके अन्त में व्यञ्जन होते हैं।)

जैसे – वाच्, भगवत्, महत्, सरस्, सखिन् आदि।

अजन्त पुल्लिङ्ग

1. अकारान्त पुल्लिङ्ग

जनक (पिता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	जनकः	जनकौ	जनकाः
द्वितीया	जनकम्	जनकौ	जनकान्
तृतीया	जनकेन	जनकाभ्याम्	जनकैः
चतुर्थी	जनकाय	जनकाभ्याम्	जनकेभ्यः
पञ्चमी	जनकात्	जनकाभ्याम्	जनकेभ्यः
षष्ठी	जनकस्य	जनकयोः	जनकानाम्
सप्तमी	जनके	जनकयोः	जनकेषु
सम्बोधन	हे जनक!	हे जनकौ!	हे जनकाः

समान शब्द – राम, नृप, बक, भुजंग, छात्र, द्विज, नर, मानव आदि।

2. इकारान्त पुल्लिङ्ग

कवि

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः

समान शब्द – मुनि, विधि, रश्मि, अग्नि, कपि, गिरि, निधि आदि।

3. उकारान्त पुल्लिङ्ग

शिशु (बालक)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पञ्चमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	शिशोः	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो!	हे शिशू!	हे शिशवः

समान शब्द – बिन्दु, वायु, गुरू, बन्धु, भानु, बाहु, प्रभु, ऋतु, भानु, साधु आदि।

इकरान्त पुल्लिङ्ग

सखि (मित्र)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

प्रीति – प्रेम

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	प्रीतिः	प्रीती	प्रीतयः
द्वितीया	प्रीतिम्	प्रीती	प्रीतीः
तृतीया	प्रीत्या	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभिः
चतुर्थी	प्रीत्यै, प्रीतये	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभ्यः
पञ्चमी	प्रीत्याः, प्रीतेः	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभ्यः
षष्ठी	प्रीत्याः, प्रीतेः	प्रीत्योः	प्रीतीनाम्
सप्तमी	प्रीत्याम्, प्रीतौ	प्रीत्योः	प्रीतिषु
सम्बोधन	हे प्रीते!	हे प्रीती!	हे प्रीतयः!

समान शब्द – श्रुति, भूति, गति, स्तुति, प्रकृति, रूचि आदि।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

कुमारी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कुमारी	कुमार्यौ	कुमार्यः
द्वितीया	कुमारीम्	कुमार्यौ	कुमारीः
तृतीया	कुमार्या	कुमारीभ्याम्	कुमारीभिः
चतुर्थी	कुमार्यै	कुमारीभ्याम्	कुमारीभ्यः
पञ्चमी	कुमार्याः	कुमारीभ्याम्	कुमारीभ्यः
षष्ठी	कुमार्याः	कुमार्योः	कुमारीणाम्
सप्तमी	कुमार्याम्	कुमार्योः	कुमारीषु
सम्बोधन	हे कुमारि!	हे कुमार्यौ!	हे कुमार्यः

समान शब्द – पुत्री, नारी, जननी, पत्नी, विदुषी, पृथ्वी, रजनी, कदली, आदि।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग

स्वसृ (बहन)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

अजन्त नपुंसकलिङ्ग

1. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

ज्ञान

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सम्बोधन	हे ज्ञान!	हे ज्ञाने!	हे ज्ञानानि!

समान शब्द – (धन), वित्त, द्रविण (धन), वस्त्र (कपड़ा), पुष्प, (कुसुम फूल), उद्यान (बाग), पुण्य पाप, गगन (आकाश), गृह (घर), कमल, गीत, सत्य (सच)।

द्वार–दरवाजा

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	द्वारम्	द्वारे	द्वाराणि
द्वितीया	द्वारम्	द्वारे	द्वाराणि
तृतीया	द्वारेण	द्वाराभ्याम्	द्वारैः
चतुर्थी	द्वाराय	द्वाराभ्याम्	द्वारेभ्यः
पञ्चमी	द्वारात्	द्वाराभ्याम्	द्वारेभ्यः
षष्ठी	द्वारास्य	द्वारयोः	द्वाराणाम्
सप्तमी	द्वारे	द्वारयोः	द्वारेषु
सम्बोधन	हे द्वार!	हे द्वारे!	हे द्वाराणि!

उदर – पेट

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	उदरम्	उदरे	उदराणि
द्वितीया	उदरम्	उदरे	उदराणि
तृतीया	उदरेण	उदराभ्याम्	उदरैः
चतुर्थी	उदराय	उदराभ्याम्	उदरेभ्यः
पञ्चमी	उदरात्	उदराभ्याम्	उदरेभ्यः
षष्ठी	उदरस्य	उदरयोः	उदराणाम्
सप्तमी	उदरे	उदरयोः	उदरेषु
सम्बोधन	हे उदर!	हे उदरे!	हे उदराणि!

हलन्त पुल्लिङ्ग

भवत् – आप

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

विद्वस् – विद्वान, (पण्डित)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्धद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्धद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्धद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

हलन्त स्त्रीलिङ्ग

सरित् – नदी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सरित्, सरिद्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरितः

हलन्त नपुंसकलिङ्ग

जगत् – संसार

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगत्भ्याम्	जगत्भिः
चतुर्थी	जगते	जगत्भ्याम्	जगत्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगत्भ्याम्	जगत्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

सर्वनाम शब्द

अस्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वां)	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वां)	युष्मभ्यम् (वः)
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः (वां)	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (तत्) पुल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

यत् – (जो) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् नपुसंकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

तत् स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

किम् – (क्या) पुल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कास्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

शब्दरुपाभ्यासः

1. **उचित–पदैः रिक्त–स्थानानि पूरयत–**

(i) बालाः ––––––––– नमन्ति।
(क) जनकेन (ख) जनकम् (ग) जनकस्य (घ) जनके

(ii) –––––––– आज्ञां पालयन्तु।
(क) जनकेन (ख) जनकस्य् (ग) जनकाय (घ) जनकम्

(iii) बाला –––––––– सह गच्छति।
(क) जनकेन (ख) जनकस्य् (ग) जनके (घ) जनकस्य

(iv) –––––––––– पुत्रं पालयति।
(क) जनकस्य (ख) जनकम् (ग) जनकेन (घ) जनकः

(v) –––––––––– जलम् आनयतु।
(क) जनकम् (ख) जनकेन (ग) जनकाय (घ) जनकात्

2. **उचित–विभक्तिभिः रिक्त–स्थानानि पूरयत–**

(i) किं किं न करोति ––––––––– सन्तति पालनाय। (जनक)
(ii) ––––––––––– देवतुल्यः भवति। (जनक)
(iii) एषः ––––––––––– सदृशः अस्ति। (जनक)
(iv) ––––––––––– आज्ञा शिरोधार्या। (जनक)
(v) सर्वे ––––––––––– स्निह्यन्ति। (जनक)
(vi) एतत् –––––––––––– गृहम् अस्ति। (अस्मद्)
(vii) –––––––––– विश्वासं कुरूत। (युष्मद्)
(Viii) –––––––––––– महिलाः भोजनं पचन्ति। (तत्)

–––––000–––

संख्यावाची शब्द

101	एकाधिकं शतम्	126	षड्विंशत्यधिकं शतम्
102	द्व्यधिकं शतम्	127	सप्तविंशत्यधिकं शतम्
103	त्र्यधिकं शतम्	128	अष्टाविंशत्यधिकं शतम्
104	चतुरधिकं शतम्	129	नवशिंशत्यधिकं शतम्
105	पञ्चाधिकं शतम्	130	त्रिंशदधिकं शतम्
106	षडधिकं शतम्	131	एकत्रिंशदधिकं शतम्
107	सप्ताधिकं शतम्	132	द्वात्रिंशदधिकं शतम्
108	अष्टाधिकं शतम्	133	त्रयस्त्रिंशदधिकं शतम्
109	नवाधिकं शतम्	134	चतुस्त्रिंशदधिकं शतम्
110	दशाधिकं शतम्	135	पञ्चत्रिंशदधिकं शतम्
111	एकादशाधिकं शतम्	136	षट्त्रिंशदधिकं शतम्
112	द्वादशाधिकं शतम्	137	सप्तत्रिंशदधिकं शतम्
113	त्रयोदशाधिकं शतम्	138	अष्टात्रिंशदधिकं शतम्
114	चतुर्दशाधिकं शतम्	139	नवत्रिंशदधिकं शतम्
115	पञ्चदशाधिकं शतम्	140	चत्वारिंशदधिकं शतम्
116	षोडशाधिकं शतम्	141	एकचत्वारिंशदधिकं शतम्
117	सप्तदशाधिकं शतम्	142	द्विचत्वारिंशदधिकं शतम्
118	अष्टादशाधिकं शतम्	143	त्रिचत्वारिंशदधिकं शतम्
119	नवदशाधिकं शतम्	144	चतुश्चत्वारिंशदधिकं शतम्
120	विंशत्यधिकं शतम्	145	पञ्चचत्वारिंशदधिकं शतम्
121	एकविंशत्यधिकं शतम्	146	षट्चत्वारिंशदधिकं शतम्
122	द्वाविंशत्यधिकं शतम्	147	सप्तचत्वारिंशदधिकं शतम्
123	त्रयोविंशत्यधिकं शतम्	148	अष्टचत्वारिंशदधिकं शतम्
124	चतुर्विंशत्यधिकं शतम्	149	नवचत्वारिंशदधिकं शतम्
125	पञ्चाविंशत्यधिकं शतम्	150	पञ्चाशदधिकं शतम्

धातुरुप

जिन शब्दों से कार्य के होने या करने का बोध हो उसे क्रिया कहते है तथा उसके मूल रुप को धातु कहते हैं। संस्कृत में लगभग 2000 धातुएँ हैं तथा निरुक्त के रचयिता यास्क के कथनानुसार सभी नामों की उत्पत्ति आख्यात धातुओं से होती है। – सर्वाणि नामानि आख्यातजानि।

धातु से क्रिया रुप बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। इनकी संख्या अठारह है तथा इनका परस्मैपद व आत्मनेपद में विभाजन कर दिया गया है। नौ प्रत्यय परस्मैमद के है और नौ प्रत्यय आत्मनेपद के हैं। ये प्रत्यय प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के तीनों वचन अलग–अलग होते हैं।

संस्कृत की समस्त धातुओं को दस गणों में बाँट दिया गया हैं प्रत्येक गण की एक प्रमुख धातु (क्रिया) होती है, जिनके नाम पर उस गण का नाम रखा जाता है। जैसे किसी गण का प्रमुख धातु 'भू' है तो उस गण का नाम 'भ्वादिगण' है। दस गण निम्न प्रकार से है –

क्रमांक	गणों के नाम	धातुएँ
1	भ्वादिगण	भू आदि धातुएँ
2	अदादिगण	अद् आदि धातुएँ
3	जुहोत्यादिगण	हु आदि धातुएँ
4	दिवादिगण	दिव् आदि धातुएँ
5	स्वादिगण	सु आदि धातुएँ
6	तुदादिगण	तुद् आदि धातुएँ
7	रुधादिगण	रुध् आदि धातुएँ
8	तनादिगण	तन् आदि धातुएँ
9	क्र्यादिगण	क्री आदि धातुएँ
10	चुरादिगण	चुर् आदि धातुएँ

प्रचलित कुछ धातुओं के रुप पांच लकारों में दिये जा रहे हैं। संस्कृत में लकारों की संख्या 10 (दस) है।

1. वृत् (वर्त्) = होना, आत्मनेपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

(ग) लृटलकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

(ङ) विधिलिङ् (अनुज्ञा, चाहिए)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

2. रुच (अच्छा लगाना) आत्मनेपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
मध्यम पुरुष	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उत्तम पुरुष	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
मध्यम पुरुष	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचध्वम्
उत्तम पुरुष	अरोचे	अरोचावहि	अरोचामहि

(ग) लृटलकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
मध्यम पुरुष	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचै	रोचावहै	रोचामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थक) 'चाहिए' अर्थ में

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन
मध्यम पुरुष	रोचेथाः	रोचयाथाम्	रोचेध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

3. नृत् = नाचना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

(ग) लृटलकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

अथवा

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

4. क्रुध् = क्रोधित होना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उत्तम पुरुष	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
मध्यम पुरुष	अक्रुध्यः	क्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उत्तम पुरुष	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
मध्यम पुरुष	क्रुध	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उत्तम पुरुष	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
मध्यम पुरुष	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उत्तम पुरुष	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम्

5. लिख् = लिखना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाम्	अलिखाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

6. मिल् = मिलना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलावः	मिलामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिलः	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथः	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्यावः	मेलिष्यामिः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलान	मिलाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयुः
मध्यम पुरुष	मिलेः	मिलेतम्	मिलेत
उत्तम पुरुष	मिलेयम्	मिलेव	मिलेम

7. कृ = करना उभयपदी

(अ) परस्मैपद (क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम	कुर्याव	कुर्याम

(ब) आत्मनेपद (क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

1. कथ् = कहना उभयपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

(आ) आत्मनेपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
मध्यम पुरुष	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उत्तम पुरुष	कथये	कथयावहे	कथयामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
मध्यम पुरुष	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उत्तम पुरुष	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहे

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
मध्यम पुरुष	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

8. भक्ष् = खाना उभयपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षयः	अभक्षयताम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

(ङ) विधिलिङ् लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
मध्यम पुरुष	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

(आ) आत्मनेपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
मध्यम पुरुष	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
मध्यम पुरुष	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

———000———

सन्धि

परिभाषा – अत्यन्त समीपवर्ती दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से किसी नियम के अन्तर्गत होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते है।

सन्धि के प्रकार

वर्णों में होने वाली सन्धि निम्न तीन प्रकार की होती है –

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि) :– यदि स्वर के साथ स्वर का मेल हो तो स्वर सन्धि होता है।

(i) एक + अक्षरः = एकाक्षरः

2. व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि) :– यदि व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का अथवा व्यञ्जन के साथ स्वर का मेल हो और परिवर्तन व्यञ्जन में हो तो व्यञ्जन सन्धि होती है।

(i) व्यञ्जन का व्यञ्जन के साथ मेल –

जगत् + नाथः = जगन्नाथः

सत् + चरित्रः = सच्चरित्रः

(ii) व्यञ्जन का स्वर के साथ मेल –

वाक् + अस्ति = वागस्ति

अच् + अन्तः = अजन्तः

3. विसर्ग सन्धि :– यदि विसर्ग का मेल स्वर अथवा व्यञ्जन के साथ हो और परिवर्तन विसर्ग में हो तो विसर्ग सन्धि कहते हैं।

(i) विसर्ग के साथ स्वर का मेल

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

(ii) विसर्ग के साथ व्यञ्जन का

नमः + ते = नमस्ते

व्यञ्जन सन्धि

(क) अनुस्वार सन्धि – 'म्' का अनुस्वार (–ं) यदि पहले शब्द के अन्त में म् आए और उसके बाद कोई भी व्यञ्जन आए तो 'म्' को (–ं) अनुस्वार हो जाता है।

भारते षट्ऋतवः सन्ति। तेषु वसन्तः ऋतुराजः अस्ति। अस्य आगमने पुष्पाणां विकासः भवति। सर्वत्र सौरभाणां प्रसरः भवति। नदीषु सरःषु च विमलं जलं राजते। पुष्पाणां उपरि भ्रमराः गुञ्जन्ति। पिकः कुजति। पक्षिणां कूजनं सुखदं भवति। कोकिलाः मधुरगीतं गायन्ति। शरीरेषु नूतनं रक्तं सञ्चरति।

ऊपर दिए गए रेखांकित पदों में (–ं) अनुस्वार दिखाई दे रहा है। यह अनुस्वार पदान्त–मकार के स्थान में होता है।

यथा– (i) सर्वत्र पुष्पाणाम् विकासः भवति।

(ii) सर्वत्र सौरभाणाम् प्रसरः।

(iii) नदीषु विमलम् जलम् राजते।

(iv) पक्षिणाम् कूजनम् सुखदम् भवति।

(v) कोकिलाः मधुरगीतम् गायन्ति।

(vi) शरीरेषु नूतनम् रक्तम् संचरति।

क्रमशः इस प्रकार होंगे –

(i) सर्वत्र पुष्पाणां विकासः भवति।

(ii) सर्वत्र सौरभाणां प्रसरः।

(iii) नदीषु विमलं जलं राजते।

(iv) पक्षिणां कूजनं सुखदं भवति।

(v) कोकिलाः मधुरगीतं गायन्ति।

(vi) शरीरेषु नूतनं रक्तं संचरति।

पदान्त मकार कब अनुस्वार (–ं) होता है, पदान्त मकार तब अनुस्वार (–ं) होता है जब मकार के बाद व्यञ्जन होते है यथा – पुष्पाणां विकासः। यहाँ (–ं) अनुस्वार के पश्चात् 'व' व्यञ्जन है। अतः 'म्' के स्थान पर (–ं) हुआ यही अनुस्वार सन्धि है।

पर सवर्ण सन्धि

पद के अन्त में 'म्' को होने वाले अनुस्वार के बाद यदि किसी वर्ग का कोई भी वर्ण हो तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण विकल्प से हो जाता है।

यथा	त्वम् + करोषि	=	त्वं करोषि	त्वङ्.करोषि
	शीघ्रम् + चलति	=	शीघ्रं चलति	शीघ्रञ्चलति
	तम् + टीकते	=	तं टीकते	तण्टीकते
	गाम् + ददाति	=	गां ददाति	गान्ददाति
	त्वम् + पचसि	=	त्वं पचसि	त्वम्पचसि
	अयम् + जयसि	=	अयं जयसि	अयञ्जयसि
	नदीम् + तरति	=	नदीं तरति	नदीन्तरति
	अयम् + कथयति	=	अयं कथयति	अयङ्कथयति
	अहम् + करोमि	=	अहं करोमि	अहङ्करोमि

सन्धि–प्रयोगाः

(i) गङ्गा हिमालयात् उद्भवति।

(ii) सञ्जयः उवाच।

(iii) व्यजनं चलति।

(iv) अङ्.कितः पठति।

(v) कण्टकः पीडाम् उत्पादयति।

(vi) मनः चञ्चलम् अस्ति।

(vii) चम्पकः विकसति।

(viii) शालायां घण्टिका टनटनायते।

(ix) जलस्य बिन्दुम् अपि न नाशय।

(x) सः परीक्षायां उत्तमङ्कान् प्राप्नोत्।

इसका नियम इस प्रकार है–

(i) पदान्त अनुस्वार के आगे जो भी वर्गीय वर्ण हो तब अनुस्वार के स्थान में वर्ग का पाँचवाँ वर्ण होगा।

(ii) अपरान्त में केवल पांचवाँ वर्ण ही होता है।

यथा – अं + कितः = अङ्.कतः । सं + धिः = सन्धिः।

(iii) पदान्त में पाँचवाँ वर्ण अथवा अनुस्वार ही होता है।

(iv) यदि बाद में अवर्गीय वर्ण हो तब अनुस्वार ही होता है।

यथा – हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे।

जश्त्व सन्धिः

इसमें वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान पर तृतीय वर्ण में परिवर्तन होता है।

जब प्रथम वर्ण के पश्चात् कोई भी भिन्न वर्ण अथवा स्वर आए तो प्रथम वर्ण तृतीय वर्ण में परिवर्तित होता है –

क् को ग् –

दिक् + गजः	=	दिग्गजः
वाक् + अर्थौ	=	वागर्थौ
वाक् + ईशः	=	वागीशः
दिक् + अम्बरः	=	दिगम्बरः

च् को ज् –

अच् + अन्तः	=	अजन्तः
अच् + आदिः	=	अजादिः

ट् को ड् –

षट् + आननः	=	षडाननः
षट् + देवाः	=	षड्देवाः
सम्राट् + गच्छति	=	सम्राड्गच्छति
षट् + दर्शनम्	=	षड्दर्शनम्

त् को द् –

सत् + आचारः	=	सदाचारः
चित् + आनन्दः	=	चिदानन्दः
महत् + धनम्	=	महद्धनम्
चित् + रूपम्	=	चिद्रूपम्

प् को ब् –

सुप् + अन्तः	=	सुबन्तः
अप् + जः	=	अब्जः

यथा –

1. जगदीशः सर्वत्र वर्तते।
2. सा महद्दानं करोति।
3. वागीशः सर्वत्र पूजनीयः भवति।
4. शिवस्य नाम दिगम्बरः अस्ति।
5. शब्दरूपस्य अन्ते सुबन्तः भवति।

विसर्ग सन्धिः

1. उत्व विसर्ग –

विसर्ग से पहले और बाद में ह्रस्व 'अ' होने पर विसर्ग को 'उ' हो जाता है तथा पहले वाले 'अ' के साथ 'उ' को मिलाकर गुणसन्धि से 'ओ' होकर पूर्वरुप सन्धि से मिलकर 'अ' को (ऽ) पूर्वरूप हो जाता है। जैसे – अ + : + अ = अ + उ + अ = ओ + अ = ओऽ

प्रथमः + अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
रामः + अत्रः	=	रामोऽत्र
सः + अपि	=	सोऽपि
सः + अहम्	=	सोऽहम्
कः + अवदत्	=	कोऽवदत्
सिहः + अपि	=	सिहोऽपि
गजः + अपि	=	गजोऽपि
पुरुषः + अयम्	=	पुरुषोऽयम्

यथा :

1. वृक्षे काकः + अस्ति।

2. सेवकः + अत्र आगच्छति।

3. पिकः + अपि मधुरेण स्वरेण गायति।

4. मृगः + अस्ति तत्र।

5. एषः + अपि तथैव कथयति।

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो उसके बाद हश् वर्ण अर्थात् किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को 'उ' हो जाता है और अ+उ मिलकर गुणसन्धि से 'ओ' हो जाता है।

छात्रः + हसति	=	छात्रो हसति
मनः + रथः	=	मनोरथः
यशः + गानम्	=	यशोगानम्
मनः + हरः	=	मनोहरः
सः + रोचते	=	सो रोचते
कः + बुध्यते	=	को बुध्यते
छात्रः + नयति	=	छात्रोनयति
देवः + गच्छति	=	देवो गच्छति
कः + गच्छति	=	को गच्छति

सन्धि कीजिए –

एतत् उद्यानम् अस्ति। वृक्षे खगाः सन्ति। खगः कूजति। कोणे एकः मयूरः +नृत्यति। जनः + धावति। बालः + व्यायामं करोमि। एकः जनः + गच्छति। एकः वृद्धः जनः + ध्यायति।

सत्व, शत्व, षत्व विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद च् छ् परे होने पर विसर्ग को श्, ट्, ठ् विसर्ग को ष् तथा त् थ् क् परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है।

विसर्ग : = स्			विसर्ग : = श्		
नमः + कार	=	नमस्कार	कः + छात्रः	=	कश्छात्रः
नमः + ते	=	नमस्ते	कः + चित्	=	कश्चित्

रामः + तरति	=	रामस्तरति	कः + चौरः	=	कश्चौरः
पुरः + कारः	=	पुरस्कारः	चन्द्रः+ शोभते	=	चन्द्रश्शोभते
तिरः + कारः	=	तिरस्कारः	रामः+ शेते	=	रामश्शेते

विसर्ग (:) को ष्

धनुः + टंकारः	=	धनुष्टंकारः
रामः + षष्ठः	=	रामषष्ठः
रामः + टीकते	=	रामष्टीकते
रामः + ठक्कुरः	=	रामष्ठक्कुरः
दर्दुरः+टरटरायते	=	दुर्दरष्टरटरायते

रूत्व सन्धि

विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर अन्य कोई भी स्वर हो और उसके बाद कोई स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह् में से काई वर्ण हो तो विसर्ग को 'र्' हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है । जैसे –

निः + बलः	=	निर्बलः
कविः + यच्छति	=	कविर्यच्छति
रविः + उदेति	=	रविरुदेति
मुनिः + अयम्	=	मुनिरयम्
पितुः + इच्छा	=	पितुरिच्छा
पुनः + आस्ते	=	पुनरास्ते
प्रातः+ उदेति	=	प्रातरूदेति
प्रातः + गच्छति	=	प्रातर्गच्छति

सन्धि विच्छेद कीजिए –

(i) कविर्लिखति लेखम् ।

(ii) रामः पितुराज्ञां पालयति।

(iii) सूर्यरेव प्रकाशस्य स्रोतः अस्ति।

(iv) तत्र जनैर्गम्यते।

(v) शिशुरयं मेधावी अस्ति।

विसर्ग लोप सन्धि

यदि सः और एषः शब्द के परे 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर या व्यञ्जन हो तो सः और एषः शब्द के विसर्ग का लोप हो जाता है।

सः + गच्छति	=	स गच्छति
एषः + जयति	=	एष जयति
सः + पठति	=	स पठति
एषः + चलति	=	एष चलति

विसर्ग के पहले 'आ' होने पर और उसके बाद कोई स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह् वर्णो में से कोई वर्ण हो तो वहाँ विसर्ग का तो लोप हो जायेगा, साथ ही कोई सन्धि हो तो सन्धि भी नहीं होगी। जैसे –

शिष्याः + एते	=	शिष्या ऐते
नृपाः + अत्र	=	नृपा अत्र
जनाः + इच्छन्ति	=	जना इच्छन्ति
सुमनाः+ रोचते	=	सुमना रोचते
देवाः + जयन्ति	=	देवा जयन्ति
छात्राः + नमन्ति	=	छात्रा नमन्ति
पुरूषाः + यान्ति	=	पुरूषा यान्ति
सुमनाः + धन्याः	=	सुमना धन्या

नीचे लिखे वाक्यों में सन्धि कीजिए –

अस्मिन् वने अनेके मृगाः + वसन्ति। एकदा अनेके गजाः + आगच्छन्। तान् दृष्ट्वा मृगाः + अधावन्। न केवलं मृगाः + अधावन् अपितु खगाः + अपि उड्डयितुम अरभन्त। खगानां कोलाहलेन गजाः + अधावन्। गजानां धावितुं दृष्टवा मृगाः + अपि अधावन्।

––––000––––

समास

भाषा में कहीं–कहीं पदों की विभक्तियों का लोप करके शब्द को छोटा कर लिया जाता है। यह तभी संभव होता है, जब दो या दो से अधिक पदों को एक साथ जोड़ दिया जाता है। साथ ही जोड़ने की इस प्रक्रिया को ही 'समास' कहते है।

समास शब्द 'सम' (भली प्रकार) उपसर्ग लगाकर अस् (फेंकना) धातु से बना है और इसका अर्थ है संक्षेप। दो या दो अधिक पदों के मेल को 'समास' कहते है।

ध्यातव्य बातें :–

(i) समास करने पर समास हुए पदों के बीच की विभक्तियाँ नहीं रहती।

(ii) समस्त (समास युक्त) पद एक पद बन जाते हैं अतएव अंत में विभक्ति लगती है।

(iii) समास अलग करने को विग्रह कहते हैं।

(iv) समास जोड़ने को समस्त पद या सामासिक पद कहते है।

उदाहरण के लिए – देवस्य आलयः = देवालयः। यहाँ (1) देवस्य और (2) आलयः – ये दो पद हैं। इन दो पदों का समास करने पर 'देवालयः' शब्द बना है। समास होने पर दोनों पद के मध्य स्थित विभक्ति (देवस्य का षष्ठी विभक्ति) का लोप हुआ है तथा देव और आलयः को मिलाकर और संधि करके 'देवालय' इस समस्त पद के अंत में प्रथमा विभक्ति एकवचन की विभक्ति लगायी गई है। यहाँ 'देवालयः' सामासिक पद है तथा 'देवस्य + आलयः' समास विग्रह है।

समास के प्रकार

समास के मुख्य 4 भेद होते है –

(i) अव्ययीभाव

(ii) तत्पुरूष

(iii) द्वन्द्व

(iv) बहुब्रीहि

तत्पुरूष के अन्तर्गत दो समास और है (1) कर्मधारय (2) द्विगु।

इस प्रकार समास के कुल 6 भेद हो जाते हैं। इन छः भेदों का नाम निम्नलिखित श्लोकों में आ जाते है :–

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।

तत्पुरूष कर्मधारय येनाहं स्याम्बहुब्रीहिः।।

अव्ययीभाव समास में समास का प्रथम पद प्रायः प्रधान होता है, तत्पुरूष में प्रायः दूसरा, द्वन्द्व में प्रायः दोनो प्रधान रहते है एवं बहुब्रीहि में दोनों में से एक भी प्रधान नहीं रहता है, अपितु दोनों मिलकर एक तीसरे शब्द के ही विशेषण बन जाते है, अर्थात् इस समास में अन्य पद प्रधान होता है।

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में प्रथम पद अव्यय और प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

इस समास में निम्नलिखित बातें ध्यातव्य हैं :–

(i) इसका पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होता है और दूसरा शब्द संज्ञा होता है।

(ii) समस्त पद अव्यय जैसा बन जाता है अर्थात् समस्त पद का रूप नहीं चलता है।

(iii) अकारान्त समस्त पद नपुंसकलिंग एकवचन में ही रहता है।

(iv) अ–भिन्न स्वर अंत वाले समस्त पद भी अव्यय हो जाते है और उनके रूप नहीं चलते।

(v) इसके समस्त पद और विग्रह में अन्तर होता है, क्योंकि इसमें किसी विशेष अर्थ में अव्यय का प्रयोग होता है।

यथा :–

सामासिक पद	विग्रह	अर्थ
यथाकामम्	कामम् अनतिक्रम्य	जितनी इच्छा हो उतना
अनुहरि	हरेः पश्चात्	हरि के पीछे

इन उदाहरणों में पूर्व पद यथा और अनु अव्यय है। उत्तर पद 'काम' और 'हरि' संज्ञा पद है। सामासिक पद 'यथाकामम्' और 'अनुहरि', अव्यय बन गये है अर्थात् इनका रूप नहीं चलेगा।

'यथाकाम'—अकारान्त पुल्लिंग होते हुए भी नपुंसकलिंग एकवचन 'यथाकामम्' बन गया है; 'अनुहरि' अ—भिन्न अंत वाला पद है तथा अव्यय पद बन गया है। यथा और अनु अव्यय पदों के विशेष अर्थ क्रमशः 'अनतिक्रम्य' और 'पश्चात्' अर्थ में आने से समस्त पद और विग्रह पद में अंतर है।

उदाहरण :—

(i) अधिहरि	हरौइति	हरि में	विभक्ति के अर्थ में
(ii) उपनगरम्	नगरस्य समीपम्	नगर के समीप	समीप अर्थ में
(iii) निर्जलम्	जलस्य अभावः	जल का अभाव	अभाव अर्थ में
(iv) सचित्रम्	चित्रेण सहितम्	चित्र के साथ	सहित अर्थ में
(v) प्रतिगृहम्	गृहम्—गृहम्	घर—घर	पद की द्विरूक्ति या वीप्सा अर्थ में
(vi) यथासमयम्	समयम् अनतिक्रम्य	समय के अनुसार	अनुसार अर्थ में

2. तत्पुरूष समास

जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो, उसे तत्पुरूष समास कहते हैं।

इस समास के पहचान हेतु निम्नलिखित बातें दृष्टव्य है :—

(i) इसका उत्तर (दूसरा) पद प्रायः प्रधान होता है।

(ii) पूर्व पद उत्तर पद के अर्थ को निश्चित करता है।

(iii) प्रथम (पूर्व) पद जिस विभक्ति में होता है, उसी के नाम पर समास का नामकरण होता है जैसे—

द्वितीया तत्पुरूष, तृतीया तत्पुरूष आदि।

(iv) इस समास में जब दोनों पद की विभक्ति समान हो तो उसे समानाधिकरण तत्पुरूष (कर्मधारय समास) तथा दो पद की विभक्ति असमान हो तो उसे व्यधिकरण तत्पुरूष (द्वितीया, तृतीया तत्पुरूष आदि) समास कहते हैं।

यथाः— शास्त्रनिपुणः — शास्त्रेषु निपुणः — शास्त्रों में निपुण

यहां 'निपुण' उत्तर पद की प्रधानता है, किसमें निपुणता है? इस प्रश्न का उत्तर 'शास्त्र' निश्चित करता है। प्रथम पद शास्त्र सप्तमी विभक्ति (शास्त्रेषु) में है, समास होने पर इस विभक्ति का लोप होता है, इसी आधार पर यह 'सप्तमी तत्पुरूष समास' है। शास्त्रेषु (सप्तमी

विभक्ति) और निपुणः (प्रथमा विभक्ति) असमान विभक्ति के पद होने से व्यधिकरण तत्पुरूष है जबकि उदाहरणार्थ कृष्णः सर्पः (कृष्णसर्पः) समान विभक्ति (प्रथमा विभक्ति) के पद होने से समानाधिकरण तत्पुरूष अर्थात् कर्मधारय समास है।

उदाहरण :–

(i) द्वितीया विभक्ति –

ग्रामगतः –	ग्रामं गतः	ग्राम को गया हुआ।
कूपपतितः –	कूपं पतितः	कुएं में गिरा हुआ

(ii) तृतीया तत्पुरूष –

ज्ञानहीनः –	ज्ञानेन हीनः	ज्ञान से हीन
दानार्थः –	दानेन अर्थः	दान से प्रयोजन
मासपूर्वः –	मासेन पूर्वः	माह से पहले

(iii) चतुर्थी तत्पुरूष –

सञ्चारमार्गः–	सञ्चाराय मार्गः	सञ्चार के लिए मार्ग
यूपदारुः–	यूपाय दारु	यज्ञ के लिए लकड़ी

(iv) पञ्चमी तत्पुरूष –

वृक्षपतितः–	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
राजभयम्	राज्ञः भयम्	राजा से भय
पापमुक्त	पापात् मुक्तः	पाप से मुक्त

(vi) षष्ठी तत्पुरूष –

देवभाषा	देवानां भाषा	देवताओं की भाषा
विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	विद्या का घर
सूर्योदयः	सूर्यस्य उदयः	सूर्य का उदय
कार्यशाला	कार्यस्य शाला	कार्य की शाला

(vii) सप्तमी तत्पुरूष –

व्यवहारकुशलः	व्यवहारे कुशलः	व्यवहार में कुशल
दानवीरः	दाने वीरः	दान में वीर

शास्त्रप्रवीणः	शास्त्रे प्रवीणः	शास्त्र में प्रवीण
कर्मकुशलः	कर्मणि कुशलः	कर्म में कुशल

उपपद तत्पुरूष समास

जब तत्पुरूष का पहला पद कोई ऐसी संज्ञा या कोई ऐसा अव्यय हो जिसके न रहने से उस समास के द्वितीय पद का वह रुप नहीं रह सकता है, तब उसे उपपद तत्पुरुष समास कहते है। प्रथम पद उपपद होता है तथा द्वितीय (उत्तर) पद कृदन्त होता है, क्रिया रूप नहीं, परन्तु यह उत्तर पद ऐसा पद होता है जो प्रथम पद के न रहने पर असंभव हो जाए।

यथा :—

''कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।'' यहां समास में 'कुम्भ' और 'कारः' दो पद है। कुम्भ उपपद है कारः कृदन्त है यदि पूर्व में (कोई) उपपद नहीं हो तो 'कारः' अपने आप में अकेले प्रयुक्त नहीं हो सकता, केवल कुम्भ या अन्य उपपद के साथ ही इसे प्रयुक्त कर सकते हैं, जैसे —चर्मकारः, स्वर्णकारः, आदि।

उदाहरण :—

विग्रह	समस्त पद	अर्थ
धनं ददाति इति	धनदः	धन देने वाला
दिनं करोति इति	दिनकरः	दिन करने वाला
शम् करोति इति	शङ्.करः	शान्त करने वाला
हितं करोति इति	हितकरः	हित करने वाला
जले जायते इति	जलजम्	जल में उत्पन्न
वारि ददाति इति	वारिदः	जल देने वाला

नञ् तत्पुरूष समास

जब तत्पुरूष में प्रथम पद 'न' रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण रहे तो उसे नञ् तत्पुरूष समास कहते है। यह 'न' व्यञ्जन के पूर्व 'अ' (न + प्रियः = अप्रियः) में तथा स्वर के पूर्व 'अन्' (न् + आगतम् = अन्+आगतम् = अनागतम्) में बदल जाता है।

उदाहरण :–

विग्रह	समस्त पद
न स्वस्थः	अस्वस्थः
न सिद्धः	असिद्धः
न चरम्	अचरम्
न विद्या	अविद्या
न अर्थः	अनर्थः
न आदरः	अनादरः

3. कर्मधारय समास

विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते है।

इसमें निम्नलिखित बाते ध्यान देना चाहिए :–

(i) इसमें दोनों पद समान विभक्ति वाले होते हैं इसलिए इसे समानाधिकरण तत्पुरूष समास भी कहते है। यथा कृष्णः सर्पः –कृष्णसर्पः। यहां कृष्ण और सर्प समान विभक्ति के पद है।

(ii) इस समास में प्रथम पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है। कृष्ण विशेषण है सर्प विशेष्य है।

(iii) इस समास में उपमान और उपमेय पदों का भी समास होता है। उपमान पूर्व पद भी होता है (घनश्यामः) और उत्तर पद भी (मुखकमलम्)

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद	
नीलं गगनम्	नीलगगनम्	(विशेषण–विशेष्य)
महान् ज्ञानी	महाज्ञानी	
महत् काव्यम्	महाकाव्यम्	

वीरः पुरूषः	वीरपुरूष	
विस्तृता वाटिका	विस्तृतवाटिका	
सुन्दरी नारी	सुन्दरनारी	
पीतम् अम्बरम्	पीताम्बरम्	
लम्बम् उदरम्	लम्बोदरम्	
चन्द्रः इव मुखम्	चन्द्रमुखम्	(उपमान–उपमेय)
घन इव श्यामः घनश्यामः		
मुखमेव कमलम्	मुखकमलम्	(उपमेय–उपमान)
(मुखं कमलमिव)		
पुरूषः एव व्याध्रः	पुरूषव्याघ्रः	
(पुरूषः व्याध्रः इव)		

4. द्विगु समास

जिस समास का पहला पद संख्यावाची और उत्तर पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते है। द्विगु समास के सम्बन्ध में अधोलिखित बाते भी जानना चाहिए –

(i) द्विगु समास भी कर्मधारय के समान तत्पुरूष का एक भेद है, जब कर्मधारय में प्रथम पद संख्यावाची हो तो वहां द्विगु समास होता है।

(ii) यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है।

(iii) समाहार द्विगु एकवचनान्त होता है। (जैसे पञ्चपात्रम्, पञ्चपात्राणि नहीं।)

(iv) वट, लोक तथा मूल इत्यादि अकारान्त शब्दों के साथ समाहार द्विगु समास होने पर समस्त पद ईकारान्त स्त्रीलिंग हो जाता है, परन्तु पात्र, भुवन, युग इत्यादि से अन्त होने वाले द्विगु समास में नहीं। (यथा– त्रिलोकी, त्रिभुवनम्)

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद
त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवनम्
चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्

पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्
पञ्चानां मूलानां समाहारः	पञ्चमूली
पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पद या सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है उसे 'द्वन्द्व' समास कहते है।

द्वन्द्व समास के सम्बन्ध में ये बाते भी ध्यातव्य है :–

(i) इस समास का अर्थ करने पर बीच में 'और' अर्थ निकलता है।

(ii) जहां भिन्न–भिन्न (इतर–इतर) पद 'च' से जुड़े होते है वहाँ समास होने पर समस्त पद का वचन उनकी संख्या के अनुसार तथा लिङ्ग अंतिम पद के अनुसार होता है।

यथा – हरिहरौ (पुल्लिंग द्विवचन) सुखदुखं (नपुंसकलिंग द्विवचन)

(iii) जहां बहुत पदों का समाहार बोध हो वहां समस्त पद एकवचनान्त नपुंसकलिंग होता है। यथा – हस्तौ च पादौ च = हस्तपादम्।

(iv) एक विभक्ति वाले समान रूप के पदों में एक शेष रह जाता है, यथा – रामः च रामः = रामौ।

(v) स्त्रीवाची पद के साथ समस्त होने पर पुरूषवाची पद ही शेष रहता है।

यथा– माता च पिता च = पितरौ।

उदाहरण –

पिता च पुत्रश्च	–	पितापुत्रौ
पुत्रश्च कन्या च	–	पुत्रकन्ये
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	–	धर्मार्थकाममोक्षाः
पुत्रश्च पुत्री च	–	पुत्रौ
अजश्च अजा च	–	अजौ
बालिका च बालश्च	–	बालकौ
बालकश्च बालकश्च बालकश्च	–	बालकाः
गौश्च व्याघ्रश्च	–	गोव्याघ्रम
अहिश्च नकुलश्च	–	अहिनकुलम्

6. बहुब्रीहि समास

जिस समास में (समस्त होने वाले पदों को छोड़कर कोई) अन्य पद प्रधान हो, उसे बहुब्रीहि समास कहते है।

बहुब्रीहि समास के संबंध में ये बाते भी जानना चाहिए :–

(i) इसमें समस्त होने वाले सभी पद मिलकर किसी अन्य पद के विशेषण बन जाते है ।

यथा – 'पीतम् अम्बरं यस्य सः' यहां समस्त होने वाले दोनों पद (पीत और अम्बर) मिलकर किसी अन्य पद (विष्णु) की विशेषता बताते हैं।

(ii) समानाधिकरण तत्पुरूष समास के समस्त पदों में समान विभक्ति होती है तथा इसमें विशेषण विशेष्य का भाव होता है – यथा नीलम् अम्बरं तस्य सः = नीलाम्बरः– यहाँ नीलम् (विशेषण) और अम्बरं (विशेष्य) समान विभक्ति के पद है।

(iii) व्यधिकरण तत्पुरूष में असमान विभक्त्यन्त पद होते हैं तथा विशेषण विशेष्य भाव नहीं होता है। यथा – चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः।

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद	
दिक् अम्बरं यस्य सः	दिगम्बरः	(शंङ्करः)
श्वेतम् अम्बरं यस्या सा	श्वेताम्बरा	(सरस्वती)
नीलम् उत्पलं यस्मिन् तत्	नीलोत्पलम्	(सरः)
पीतं दुग्धं यया सा	पीतदुग्धा	(बालिका)
पीतं दुग्धं येन सः	पीतदुग्धः	(बालकः)
चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः	(कृष्णः)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः	(शिवः)

अभ्यासः

(1) अधोलिखितविग्रहाणां स्थाने समस्तपदानि लिखत –

विग्रह वाक्यानि	**समस्तपदानि**
(i) चन्द्रः इव मुखम्	चन्द्रमुखम्
(ii) चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	चन्द्रमुखी
(iii) पतितं पर्णम्	

____

(iv) पतितानि पर्णानि यस्यात् सः (वृक्षः)

____

(v) वृक्षम् आरूढ़ः

____

(vi) दश आननानि

____

(vii) आरूढ़ः वृक्षः येन सः

____

(viii) दश आननानि यस्य सः

____

(2) अधोलिखितसमस्तपदानां स्थाने विग्रहवाक्यानि लिखित –

(i) नतपृष्ठः ________________

(ii) नतपृष्ठम् ________________

(iii) निर्जनम् ________________

(iv) जनाभावः ________________

(v) जितेन्द्रियः ________________

(vi) गुरुवचनम् ________________

(vii) अहर्निशम् ________________

(viii) शीतोष्णम् ________________

(3) अधोलिखितकथायां रेखाङ्कितपदानि चित्वा तेषां विग्रहान् लिखत –

एकः अति दुष्टः वानरः आसीत्। प्रतिदिनं सः यथाशक्ति वृक्षे स्थितान् पक्षिणः तुदति स्म। उपनीडं गत्वा तेषां श्रमस्य उपहासं करोति स्म। एकः पक्षी अवदत् – भोः किमर्थम् उपहससि? अनुवृष्टिं नीडम् एव अस्मान् रक्षति। वयं परिश्रमं कुर्मः निर्विघ्नं च जीवामः । वानरः साट्टहासम् अवदत् – 'मूर्खाः यूयम्! अरे योगिनां कुतः गृहम्।' एवं कथयित्वा तेन दुष्टेन पक्षीणां नीडानि भग्नानि। एकः पक्षी अवदत् – योगिनः प्रतिजीवम् उपकारमेव कुर्वन्ति। किम् इदम् अनुरुपं साधुजनस्य?

(4) अधोलिखितसङ्केतान् आधृत्य वर्गपहेलिकायां रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा समस्तपदानि रचयत –

वामतः दक्षिणम्	उपरिष्टात् अधः
1. जनानाम् अभावः	1. निर्गता वाधा यस्या
2. वृक्षस्य समीपम्	3. वृक्षस्य मूलम्
6. द्वादश अक्षाः यस्मिन् तत्	4. अहिं मुड्.क्ते तम्
8. विमूढा धीः यस्य	5. न कातरः
9. शीतलं सलिलम्	7. जलं ददाति इति
11. पङ्कात् जायते इति	10. चित्रेण सहितम्
12. महान् देवः	13. देवस्य आलयः
15. अहः च रात्रिः च	14. फलानि च पुष्पाणि च
19. जले मग्नः	15. रूपस्य योग्यम्
20. पुस्तकानाम् आलयः	16. राज्ञः पुत्रः
21. सप्तानां पदानां समाहारः	17. नखैः भिन्नः
	18. सप्तानाम् अह्नां समाहारः

(5) कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) अनेन सदृशो महापुरूषः ––––––––––– नास्ति। (त्रिलोके/त्रिलोक्याम्)

(ख) सः –––––––––––– फलानि खादति । (यथेच्छया/यथेच्छम्)

(ग) रामः –––––––––––– धावति। (अनुमृगम्/अनृमृगः)

(घ) सः पंडितः ––––––––– अस्ति। (विद्याधनः/विद्याधनम्)

(ङ.) –––––––––––सरः दृष्टवा कः न प्रसीदति? (विकसितपङ्कजः/विकसितपंङकजम्)

–––––000–––––

प्रत्यय

वर्तमान कालिक

शतृ – शानच् प्रत्ययौ

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िये –

बालकः पठति।	बालकः पठन् अस्ति।
बालकौ पठतः।	बालकौ पठन्तौ स्तः।
बालकाः पठन्ति।	बालकाः पठन्तः सन्ति।
बालिका पठति।	बालिका पठन्ती अस्ति।
बालिके पठतः।	बालिके पठन्त्यौ स्तः।
बालिकाः पठन्ति।	बालिकाः पठन्त्यः सन्ति।
चक्रं चलति।	चक्रं चलत् अस्ति।
चक्रे चलतः।	चक्रे चलती स्तः।
चक्राणि चलन्ति।	चक्राणि चलन्ति सन्ति।

यहाँ हम क्या देख रहे हैं?

यहां हम देख रहे हैं कि पठति क्रिया के स्थान में 'पठन् अस्ति' (पढ़ रहा है अथवा पढ़ता हुआ इस अर्थ में) रूप का प्रयोग है।

इसी प्रकार लिखे कि किस क्रिया के स्थान में कृदन्त रूप प्रयुक्त है –

क्रीडति–क्रीडन्	लिखति–लिखन्	पचति–पचन्
चलति–चलन्	नृत्यति–नृत्यन्	गच्छति–गच्छन्

ऊपर लिखे गए रूप क्रीडन्, चलन् और लिखन् प्रथमा विभक्ति एकवचन पुल्लिंग में हैं और ये धातुएं परस्मैपद के है। इसी के साथ शतृ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। अब हम देखते है कि 'शतृ' प्रत्यय का 'ऋ' और 'श्' वर्ण का लोप होता है। 'अत्' धातु के पश्चात् जुड़ता है। तब यह शब्द बनता है। और इसके रूप तीनों लिंगों में बनते हैं।

पुल्लिंग में	गच्छतवत्	(गच्छन् गच्छन्तौ गच्छन्तः)
स्त्रीलिंग में	नदीवत्	(गच्छन्ती गच्छन्त्यौ गच्छन्त्यः)
नपुंसकलिंग में	जगत्वत्	(गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति)

(क) शतृ प्रत्यय से बनने वाले वाक्य –

जैसे – बालः पठति। बालः लिखति। पठन् बालः लिखति।

बालौ पठतः। बालौ लिखतः ।

पठन्तौ बालौ लिखतः।

बालाः पठन्ति। बालाः लिखन्ति।

पठन्तः बालाः लिखन्ति।

(ख) स्त्रीलिंग में

महिला पठति। महिला लिखति।

पठन्ती महिला लिखति।

महिले प्रसीदतः। महिले हसतः

प्रसीदन्त्यौ महिले हसतः।

महिलाः गायन्ति। महिलाः नृत्यन्ति।

गायन्त्यः महिलाः नृत्यन्ति।

(ग) नपुंसकलिंग में

चक्रं चलति। चक्रं भ्रमति।

चलत् चक्रं भ्रमति।

चक्रे चलतः। चक्रे भ्रमतः।

चलती चक्रे भ्रमतः।

चक्राणि चलन्ति। चक्राणि भ्रमन्ति।

चलन्ति चक्राणि भ्रमन्ति।

शतृ प्रत्यय का प्रयोग कर वाक्य बनाइये –

(i) बालकः धावति। बालकः पतति।

(ii) मेघाः वर्षन्ति। मेघाः गर्जन्ति।

(iii) चटका कूजति। चटका उड्डयति।

(iv) नमिता गायति। नमिता नृत्यति।

(v) फलानि पतन्ति। मालाकारः फलानि चिनोति।

(vi) वायुयाने आकाशं गच्छतः। वायुयाने आकाशे उड्डयतः।

शानच् प्रत्यय

नीचे लिखे वाक्य पढ़िये –

पुल्लिंग में

बालः पितरं सेवते।	पितरं सेवमानः बालः (प्रसीदति)
पुरूषौ प्रयतेते।	प्रयतमानौ पुरूषौ (प्रसीदतः)
जनाः धनं लभन्ते।	धनं लभमानाः जनाः (प्रसीदन्ति)

स्त्रीलिंग में

बाला सेवते।	सेवमाना बाला (प्रसीदति)
कन्ये पुरस्कारं लभेते।	पुरस्कारं लभमाने कन्ये (प्रसीदतः)
बालाः सहन्ते।	सहमानाः बालाः (प्रसीदन्ति)

नपुंसकलिंग में

पुष्पं वर्धते।	वर्धमानं पुष्पं (दृष्ट्वा प्रसीदति)
पुष्पे वर्धते।	वर्धमाने पुष्पे (दृष्ट्वा प्रसीदतः)
पुष्पाणि वर्धन्ते।	वर्धमानानि पुष्पाणि (दृष्ट्वा प्रसीदन्ति)

परस्मैपद के धातुओं के साथ शतृ प्रत्यय का प्रयोग होता है, वैसे ही इसी अर्थ में ही आत्मनेपद धातुओं के साथ शानच् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

शानच् प्रत्यय के 'श्' और 'च' वर्ण का लोप होता है। 'आन्' शेष रहता है। 'आन' 'मान' रूप में परिवर्तित होता है। इसके रूप –

पुल्लिंग में	बालवत्
स्त्रीलिंग में	लतावत्
नपुंसकलिंग में	फलवत्

नीचे लिखे धातुओं का उदाहरण के अनुसार तीनों लिंगों में 'शानच्' प्रत्यय के रूपों को लिखिए –

धातु	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
यथा– वर्त	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
वन्द्			
मुद्			
युध्			
कम्प्			
ईक्ष्			

भूतकालिक कृदन्त – क्त, क्तवतु प्रत्यय

'क्त' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

धातुएँ दो प्रकार की होती है –

1. अकर्मक 2. सकर्मक

रामः रावणम् अमारयत्।

यहाँ कर्ता कौन है? ————————————————

यहाँ कर्म क्या है? ————————————————

क्रिया का संबंध किसके साथ है? ————————————————

निश्चय ही यहाँ कर्ता राम है, कर्म रावण, क्रिया का संबंध (पुरूष और वचन) राम के साथ है।

जब 'क्त' प्रत्यय जुड़ता है तभी वाक्य का कर्मवाच्य में परिवर्तन होना चाहिए।

रामेण रावणः/मारितः/हतः

यहाँ (i) हतः/मारितः शब्द की विभक्ति और वचन किसके अनुरूप है? राम के/रावण के?

(ii) यहाँ 'रामेण' की विभक्ति और वचन क्या है?

(iii) यहाँ 'रामेणः' इसकी विभक्ति एवं वचन क्या है?

(iv) यहाँ 'हतः' की विभक्ति एवं वचन क्या है?

यहाँ हम सब देखते है कि कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है न कि कर्ता के अनुसार। कर्ता तो तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है।

अब ये उदाहरण पढ़े –

वाक्यानि	धातु	प्रत्यय
(i) बालकेन पाठः पठितः।	पठ्	क्त
(ii) नकुलेन कृष्णसर्पः दृष्टः।	दृश्	क्त
(iii) नीरजेन सुलेखः लिखितः।	लिख्	क्त
(iv) वानरेण फले त्रोटिते।	त्रुट्	क्त
(v) जनकेन ग्रामः रक्षित।ः	रक्ष्	क्त
(vi) भक्तेन पूजा कृता।	कृ	क्त
(vii) छात्रया रामायणं श्रुतम्।	श्रु	क्त
(viii) कालिदासेन सप्तग्रन्थाः रचिताः	रच्	क्त

1. रिक्त स्थान में प्रत्यय लिखिए –

(i) दृष्टः = दृश् + ———————————— प्रत्ययः

(ii) पठितः = पठ् + ———————————— प्रत्ययः

(iii) खादितः = खाद् + ——————————— प्रत्ययः

(iv) स्मृतः = स्मृ + ——————————— प्रत्ययः

(v) पृष्टः = प्रच्छ् + —————————— प्रत्ययः

2. निर्दिष्ट धातुओं के साथ 'क्त' प्रत्यय के प्रयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

यथा – श्वेतकेतुना, फलं, भिन्नम् (भिद्)

(i) तेन पत्रं ——————————। (लिख्)

(ii) कविना पुस्तकानि ———————— । (रच्)

(iii) वानरैः फलानि ———————————। (भक्ष्)

(iv) राज्ञा ब्राह्मणः ————————————। (नि+मन्त्र्)

(v) किं त्वया जन्तुशाला ———————————। (दृश्)

'क्त' प्रत्यय से बने शब्द विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते है।

यथा –

(i) पक्वानि (पच्+क्त) आम्राणि आनय।

(ii) अनुमतः (अनु+मन्+क्त) पुत्रः राजसभाम् अगच्छत्।

(iii) पर्युषितम् (परि+वस्+क्त) अन्नं मा खादेत्।

(iv) सुप्ताम् (सुप्+ क्त) कन्यां न जागृयात्।

(v) रक्षितम् (रक्ष्+क्त) सैनिकं भोजय।

सभी अकर्मक धातुओं के कर्ता में भी 'क्त' प्रत्यय होता है।

यथा

(i) लेखनी पतिता।

(ii) बालकः प्रबुद्धः।

(iii) सः शयितः।

(iv) पुष्पं विकसितम्।

(v) वृक्षः कम्पितः।

(vi) सः दुराद् आगतः।

अस्माभिः अधीतम्

(i) क्त प्रत्ययस्य 'त' अवशिष्यते।

(ii) अस्य प्रयोगः कर्मणि भूतकालस्य क्रियार्थे भवति, अतः कर्ता सदा तृतीयायां भवति, कर्म च प्रथमायाम्।

(iii) अस्य प्रयोगः विशेषणरुपेण अपि भवित।

(iv) अकर्मक धातुनां कर्तृवाच्ये अपि 'क्त' प्रत्ययः प्रयुज्यते।

(v) त्रिषु लिङ्.गेषु रूपाणि चलन्ति।

पुल्लिंगे – बालकवत्

स्त्रीलिंगे – लतावत्

नपुंसकलिंगे – फलवत्

'क्तवतु' प्रत्यय कर्तृवाच्य मे भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए –

(i) जनकः धर्मपुरे राज्यं कृतवान्।

(ii) सा कस्याश्चित् स्त्रियाः विलापं श्रुतवती।

(iii) सः स्वशरीरं गरूडाय अर्पितवान्।

(iv) पुरुषः मांसभक्षणं त्वक्तवान्।

(v) अहम् एकां कथां पठितवान्।

ध्यान से पढ़ने पर यह पता लगा कि क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में लङ्.लकार के स्थान पर हुआ है । अतः लङ्.लकार के रूप में सामने 'क्तवतु' प्रत्ययान्त रूप लिखे –

लङ्.लकार	क्तवतु प्रत्ययान्त रूप
यथा– अपठत्	पठितवान्
अकरोत्	
अश्रृणोत्	
आनयत्	
अत्यजत्	
अखादत्	

1. बहुवचन में परिवर्तन कीजिए –

एकवचनम्	बहुवचनम्
यथा– पठितवान्	पठितवन्तः
कृतवान्	
हसितवान्	
दत्तवान	
खादितवान्	
जीवितवान्	

2. नीचे लिखे गए वाक्यों को स्त्रीलिंग में परिवर्तन कीजिए –

पुल्लिंग	स्त्रीलिङ्.गे
यथा– पिता कथितवान्	माता कथितवती।
(i) शिक्षकः अधीतवान्।	(i)
(ii) युवकः हसितवान्।	(ii)
(iii) मातुलः निवेदितवान्।	(iii)
(iv) छात्रः पृष्टवान्।	(iv)
(v) पितामहः पूजितवान्	(v)
(vi) राजा परित्यक्तवान्	(vi) ज

कल सुखदा का आठवाँ जन्मदिन था। उसके लिए अनेक उपहार दिए गए। बन्धुओं और मित्रों के द्वारा क्या–क्या दिये गये, इसे जानने के लिए मञ्जूषा से उचित क्रिया पदों को चुनकर वाक्यों को पूर्ण कीजिए –

मञ्जूषा

दत्तवान्, आनीतवती, क्रीतवान्, अनीतवन्तः, दत्तवन्तः, दत्तवन्तौ, आनीतवान्, स्वीकृतवती, आनीतवन्ति।

यथा – पिता सुखदायै द्विचक्रिकां क्रीतवान्।

(i) माता वस्त्राणि ––––––––––––––––––।

(ii) मित्राणि तस्यै शिक्षाप्रद क्रीडनकानि –––––––––––––।

(iii) सुखदा नीरजायाः पुस्तकानि ––––––––––––––।

(vi) मनीषः 'सर्वसोपानं' इति लेखन् –––––––––––––––––––।

(v) मातुलौ पठनाय आसन्दिकामञ्चौ –––––––––––––––।

(vi) पितामहः रूप्यकानां पञ्शतम् ––––––––––––––––।

(vii) मातामही मातामहः च मौक्तिकमालाम् ––––––––––––––––।

(viii) भ्रातरः मिलित्वा हारमोनियम् इति वाद्ययन्त्रम् –––––––––––––।

3. नीचे लिखे प्रश्न 'क्तवतु' प्रत्यय के प्रयोग से बने है उनके उत्तर 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर दीजिए

यथा – त्वं अद्य किं पठितवान्?

मया अद्य पदानि पठितानि।

(i) प्र. राधा किं कृतवती?

उ.

(ii) प्र. पाकशालायां सूदः किं पक्ववान्?

उ.

(iii) प्र. देशं कः आक्रान्तवान्?

उ.

(iv) प्र. रामायणं कः लिखितवान्?

उ.

(v) देशभक्तः कस्मै प्रतिज्ञातवान्?

उ.

अस्माभिः अधीतम् – क्तवतु प्रत्यय

1. क्तवतु प्रत्यय का 'तवत्' शेष रहता है।

2. इसका प्रयोग कर्तृवाच्य में भूतकालिक क्रिया अर्थ में होता है। इसलिए कर्ता हमेशा प्रथमा में ही होता है।

3. तीनों पुरूषों में रूप एक समान होता है।

यथा – सः दृष्टवान्। त्वं दृष्टवान्। अहं दृष्टवान।

4. तीनों लिंगों में रूप होता हैं–

पुंल्लिग में – भवत्वत्   स्त्रीलिंग में – नदीवत्   नपुंसकलिंग में – जगत्वत्

पूर्वकालिक कृदन्त क्त्वा – ल्यप्

1. नीचे लिखे रेखांकित पदों में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। अर्थ जानकर प्रश्न निर्माण कीजिए –

	धातु	**प्रत्यय**
यथा – सिहं दृष्ट्वा बालः त्रस्यति।		
प्रश्न – कं दृष्ट्वा बालः त्रस्यति?	दृश्	क्त्वा
(i) व्याधः जालं क्षिप्त्वा कपोतान् ग्रहीष्यति।	क्षिप्	क्त्वा
प्रश्न ————————————————— ?		
(ii) कश्मीरं गत्वा वयं प्राकृतिकं सौन्दर्यं द्रक्ष्यामः।	गम	क्त्वा
प्रश्न ————————————————— ?		
(iii) मनीषः आलस्यं त्यक्त्वा स्वाध्यायपरः अस्ति।	त्यज्	क्त्वा
प्रश्न ————————————————— ?		
(iv) छात्रः नत्वा गुरुं प्रणमति।	नम्	क्त्वा
प्रश्न —————————————————— ?		

2. यहाँ दो वाक्य लिखे गये हैं। प्रथम वाक्य में क्रिया के स्थान में 'क्त्वा' प्रत्ययान्त पद प्रयोग कर एक वाक्य बनाकर लिखिए –

यथा –

(i) सुरेशः गच्छति। सः फलानि आनयति।

सुरेशः गत्वा फलानि आनयति।

(ii) कमला धावति। कन्दुकं गृह्णाति।

————————————————— (धाव्+क्त्वा) (धावित्वा)

(iii) उषा खादति। सा भ्रमति।   (खाद्+क्त्वा)

—————————————————

(iv) मयूरः नृत्यति। सः वृक्ष विश्राम्यति।

—————————————————— (नर्तित्वा)

(v) महिला हास्यकथां शृणोति। सा उच्चैः हसति।

—————————————————— (श्रृ+क्त्वा)

'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग

1. नीचे क्त्वा' के स्थान में 'ल्यप' प्रत्यय का प्रयोग समझकर प्रश्न निर्माण कीजिए –

	उपसर्ग	धातु	प्रत्यय
यथा – (i) मातापितरौ प्रणम्य पुत्रः विदेशं गच्छति।	प्र	नम्	ल्यप्
प्रश्न – कौ प्रणम्य पुत्रः विदेशं गच्छति ?			
(ii) छात्राः पुस्तकानि अधीत्य पाठं स्मरन्ति।	अधि	इ	ल्यप्
(ii) —————————————————— ?			
(iii) भक्तः शिवं सम्पूज्य सुखं लभते।	सम्	पूज्	ल्यप्
(iii) —————————————————— ?			
(vi) मालिनी सुरेखायै पुष्पगुच्छं प्रदाय जन्मदिने वर्धापनम् अर्पयति।	प्र	दा	ल्यप्
(iv) —————————————————— ?			

2. दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए –

(i) शिष्यः विद्यालयं प्रविशति। सः गुरुं प्रणमति।

(i) शिष्यः विद्यालयं प्रविश्य गुरूं प्रणमति।

(ii) छात्रा खटिकाम् आनयति सा श्यामपट्टे लिखति।

(ii) ——————————————————————

(iii) वानरः वृक्षम् आरोहति। सः जन्तुफलानि पातयति।

(iii) ——————————————————————

(iv) देशभक्ताः मातृभूमिं प्रणमन्ति ते सुखं लभते।

(iv) ——————————————————————

अस्माभिः अधिगतम्

1. 'कृत्' इति प्रत्ययानां प्रयोगः धातुभिः सः भवति।
2. क्त्वा–ल्यप् प्रत्यययोः प्रयोगः 'करके' इत्यर्थे भवति।
3. क्त्वा प्रत्ययस्य 'त्वा' ल्यप् प्रत्ययस्य 'य' अवशिष्यते।
4. धातोः पूर्वं यदि उपसर्गः भवेत् तर्हि तत्र क्त्वा स्थाने 'ल्यप्' प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
5. क्त्वा–ल्यप् प्रत्यय–प्रयोगेन निर्मितानि पदानि अव्ययानि जायन्ते।

'तुमुन्' उत्तरकालिक कृदन्त

1. अधोलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के साथ 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। उन प्रयोगों को समझकर प्रश्न निर्माण कीजिए –

यथा – (i) अहं प्रधानमन्त्रिणः भाषणं श्रोतुं रक्तदुर्गं गच्छामि।

प्रश्न– त्वं किं कुर्तं रक्तदुर्गं गच्छसि?

	धातु	प्रत्यय
(ii) मालाकारः पुष्पाणि चेतुम् उद्यानं गच्छति।		
(ii) ––––––––––––––––––––––––– ?	चि	तुमुन्
(iii) अर्जुनः योद्धुम् उद्यतः अस्ति।	युध्	तुमुन्
(iii) ––––––––––––––––––––––––– ?		
(iv) त्वं ग्रन्थं पठितुम् इच्छसि।	पठ्	तुमुन्
(iv) ––––––––––––––––––––––––– ?		
(v) जनकः गंगायां स्नातुं हरिद्वारं अगच्छत्।	स्ना	तुमुन्
(v) ––––––––––––––––––––––––– ?		
(vi) व्यायामं कर्तुं जनाः उद्यानं गच्छन्ति।	कृ	तुमुन्
(vi) ––––––––––––––––––––––––– ?		

2. नीचे दिए गए पद को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

खादितुम्, क्रेतुम्, गन्तुम्, दातुम्, कर्तुम्

(i) छात्राः जन्तुशालां ———————— पंक्तिबद्धाः तिष्ठन्ति।

(ii) दानशीलाः वस्त्राणि ————————— आगच्छन्ति।

(iii) सभायां शान्तिव्यवस्थां ———————— आरक्षकाः सन्ति।

(iv) पुस्तक प्रदर्शन्यां जनाः पुस्तकानि ————————— आगच्छन्ति।

(v) मेलापके परिवारस्य सदस्याः मिष्ठान्नं —————— उपविशन्ति।

विशेषः

1. 'तुमुन्' प्रत्ययस्य अर्थः भवति 'के लिए'।
2. अस्य प्रयोगः धातुभिः सह भवति।
3. तुमुन् प्रत्ययस्य 'उ' 'न' वर्णयोः लोपः भवति 'तुम्' एव अवशिष्यते।
4. तुमुन् क्त्वा–ल्यप् प्रत्यययोगेन निर्मितानि पदानि अव्ययानि जायन्ते।

मिश्रितप्रश्नाः

1. **अधोलिखित वाक्येषु रेखांकितपदैः तुमुन्/क्त्वा/ल्यप् प्रत्ययाः प्रयुक्ताः। तेषाम् अर्थं प्रयोगं च अवगच्छन्तु प्रश्ननिर्माणं च कुर्वन्तु।**

यथा – बालकः स्नातुं गच्छति।

सः स्नात्वा वस्त्राणि धारयति।

प्रश्न (i) बालकः किं कर्तुं गच्छति?

(ii) सः कदा वस्त्राणि धारयति?

(क)

(i) अहं पठितुं वाचनालयं गच्छामि।

(ii) अहं पठित्वा आपणं प्रविशामि।

——————————————————————?

——————————————————————?

(ख)

(i) खगाः विहर्तुम् आकाशो उड्ड्यन्ते।

(ii) ते विहृत्य नीडेषु प्रविशन्ति।

(i) —————————————————————— ?

(ii) —————————————————————— ?

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु कोष्ठके निर्दिष्टधातोः तुमुन्/क्त्वा प्रत्ययान्तपदेन रिक्त स्थानानि पूरयत

यथा– (i) धेनवः चरितुं क्षेत्रं गच्छन्ति। (चर्)

ताः चरित्वा गृहम् आगच्छन्ति।

(ii) रमेशः भोजनं ———————— पाकशालाम् उपविशति। (कृ)

सः भोजनं ———————— हस्तौ प्रक्षालयति।

(iii) सरला ईश्वरं ———————— मालां जपति। (स्मृ)

सा ईश्वरं ———————— शान्तिम् आप्नोति।

(iv) मूषकं ———————— मार्जारः धावति। (ग्रह)

तं ———————— मार्जारः भक्षयति।

3. अधोदत्तायां तालिकायां पञ्चकर्तारः सन्ति यैः पृथक्–पृथक् कार्यं क्रियते। कर्तारम् आश्रित्य दशवाक्यानि रचयन्तु –

रेखा	गृहं	गत्वा	पठति
सूर्याशः	क्रीडनकानि	क्रेतुं	गच्छति
मित्रं	वेदान्	अधीत्य	प्रसीदति
सः	देशं	रक्षितुं	संकल्पते
सा	दुग्धं	पीत्वा	वर्धते

यथा – सूर्याशः गृहं गत्वा पठति।

त्व प्रत्ययः

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(i) चाणक्यस्य <u>विद्वत्वम्</u> को न जानाति।

(ii) रामस्य <u>शूरत्वम्</u> सर्वे प्रशंसन्ति।

(iii) भरतस्य <u>भातृत्वम्</u> सर्वत्र प्रशंसनीयम्।

(iv) गुरोः <u>गुरूत्वम्</u> वर्णयितुं कः समर्थ।

(v) <u>मनुष्यत्वम्</u> कदापि न त्यज्।

क्या आप जानते हैं रेखांकित पदों में कौन सा प्रत्यय है–

1. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञापद निर्माण के लिए होता है।

2. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा विशेषण पदों के साथ होता है।

3. 'त्व' प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं। इसके रूप फल के समान होते हैं।

2. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(i) कवेः ———————— को न जानाति। (कवि)

(ii) क्षत्रियाणां ———————— सर्वत्र प्रशंसनीयम्। (वीर)

(iii) अग्नेः ————————— असहनीयम्। (उष्ण)

(iv) कर्म कुरू ——————— मा लभस्व। (दीन)

(v) पाषाणस्य ————————— जगत्प्रसिद्धम्। (कठोर)

(vi) विद्यायाः ————————— सर्वे स्वीकुर्वन्ति। (महत्)

(vii) सागरस्य —————————— मापनीयं न अस्ति। (गहन)

त्व प्रत्यय के शब्द –

देव + त्व = देवत्वम्	शिशु + त्व = शिशुत्वम्	व्यक्ति+त्व =व्यक्तित्वम्
दिव्य+त्व = दिव्यत्वम्	महत्+त्व = महत्त्वम्	कवि + त्व = कवित्वम्
पटु + त्व = पटुत्वम्	एक + त्व = एकत्वम्	नर + त्व = नरत्वम्
मातृ + त्व = मातृत्व	हीन + त्व = हीनत्वम्	राजन् + त्व = राजत्वम्
फल + त्व = फलत्वम्	पुरूष + त्व = पुरूषत्वम्	विद्वत्+ त्व = विद्वत्वम्
शूरू + त्व = शूरत्वम्	दृढ़ + त्व = दृढत्वम्	सुन्दर + त्व = सुन्दरत्वम्

तल् प्रत्यय

1. नीचे लिखे वाक्य ध्यान से पढ़िए –

यथा

अग्नेः	उष्णता	पृथिव्याः	सहनशीलता
जलस्य	शीतलता	मनसः	चञ्चलता
आकाशस्य	विस्तृतता	सृष्टेः	सुन्दरता
समुद्रस्य	गहनता	प्रकृतेः	रमणीयता

ऊपर लिखित द्वितीय पदों में 'तल्' प्रत्यय का प्रयोग है।

1. 'तल्' प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा–विशेषण शब्दों के साथ होता है।

2. 'तल्' के स्थान में 'ता' प्रयुक्त होता है।

3. 'तल' (ता) योग से निर्मित शब्द के रूप में स्त्रीलिंग में लता के समान चलते हैं।

4. 'तल' (ता) योग से भाववाचक संज्ञा पद निर्मित होते हैं।

यथा सुन्दरता, मधुरता, क्रुरता, कोमलता आदि।

2. नीचे मञ्जूषा में दिए गए शब्दों के साथ 'तल' प्रत्यय को जोड़कर यथोचित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

यथा – क्रुरता तु सदैव निन्दनीया एव भवति।

1. अग्नेः ---------- शीतकाले रोचते।
2. ------------ दुःखदायिनी भवति।
3. गृहस्य ------------ आनन्ददायिनी भवति।
4. प्रकृतेः ------------ मनोरमा अस्ति।
5. गणितविषये अशोकस्य ------------ प्रशंसनीया वर्तते।
6. मनसः ....वानरस्य इव भवति।

क्रुर, चञ्चल, दक्ष, स्वच्छ, उष्ण, निर्धन, रमणीय

ठक् (इक्)

ध्यानेन पठतु

1. मनुष्यः सामाजिकः प्राणी अस्ति।
2. 'पर्यावरण–रक्षणम्' अस्माकं नैतिकं कर्तव्यम् अस्ति।
3. अद्यत्वे औद्योगिकः विकासः सर्वत्र दृश्यते।
4. विद्यया लौकिकी अलौकिकी च उन्नतिः भवति।
5. मम गृहे माङ्गलिकः कार्यक्रमः सम्पत्स्यते।

विचार कीजिए –

(क) ऊपर लिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के अन्त में कौन सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है?

(ख) इन पदों में मूल शब्द क्या है?

(ग) इन पदों के शब्द के प्रथम स्वर (आदिस्वर) में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

(घ) वाक्य में ये पद विशेषण रूप में प्रयुक्त हैं अथवा विशेष्य रूप में।

2. अब हम देखते हैं कि रेखांकित पदों में इस प्रकार परिवर्तन हुए है –

क्रमांक	पदानि	मूल शब्दः	प्रत्ययः	शब्दस्य प्रथमस्वरे वृद्धिः
1.	सामाजिकः (पुं.)	समाज	ठक् (इक्)	स+अ, अ स्थाने आ
2.	नैतिकम् (नपुं.)	नीति	–– ––	न्+ई, ई स्थाने ऐ
3.	औद्योगिकः (पुं.)	उद्योग	–– ––	उ स्थाने औ
4.	लौकिकी (स्त्री.)	लोक	–– ––	ल्+ओ, ओ स्थाने औ
5.	माड्.गलिकः (पुं.)	मड्.गल	ठक् (इक्)	म्+अ, अ स्थाने आ

रेखांकित पदों की स्थिति वाक्यों में इस प्रकार है –

1. सामाजिकः प्राणी
2. नैतिकं कर्तव्यम्
3. औद्योगिकः विकासः
4. लौकिकी उन्नतिः
5. माड्.गलिकः कार्यक्रमः

इस प्रकार ठक् (इक्) प्रत्यय से युक्त शब्द विशेषण शब्द होते है।

इस प्रकार हमे ज्ञात हुआ –

1. ठक् प्रत्यय के स्थान में 'इक्' होता है।

प्रयोग में 'इक्' ही दिखाई देता है–

यथा – समाज+ठक् = सामाजिक)

2. ठक्/ठञ् (इक) प्रत्यय लगने पर मूल शब्द के आदिस्वर की वृद्धि होती है।

आ, ऐ, औ, तीन वृद्धि स्वर हैं।

वे क्रमशः

अ ⟶ आ

इ, ए ⟶ ऐ

उ ओ ⟶ औ

ऋ ⟶ आर् होते हैं

(कृतिका+इक = कार्तिक)

(ङ) 'इक' प्रत्ययान्त पद विशेषण पद होते हैं। अतः इस पद का विशेष्य के अनुसार लिङ्ग होता है।

3. निम्नांकित वाक्यों में कोष्टक में दिए गए शब्द के साथ ठक्/ठञ (इक) प्रत्यय जोड़कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

यथा– अहं भारतस्य नागरिकः (नगर+ठक्) अस्मि।

1. अत्र (धर्म+ठक्) ....उत्सवः भवति।
2. अयं (वेद+ठक्) ....विद्वान् अस्ति।
3. सः (पुराण+ ठक्) .... मङ्गलाचरणं करोति।
4. दिल्ल्याम् अनेकानि (इतिहास+ठक्) ....स्थानानि सन्ति।
5. भारतस्य (भूगोल+ठक्) .... स्थितिः विचित्रा अस्ति।
6. सप्ताह+ठक् ....अवकाशः रविवासरे भवति।
7. अयं (कल्पना+ठक्) ....उपन्यासः केन लिखितः।
8. सम्प्रति देशस्य (अर्थ+ठक्) ....स्थितिः संतोषप्रदा।
9. (वर्ष+ठक्) ....परीक्षायां मया निबन्धः लिखितः।
10. (दिन+ठञ्) ....कार्य मया सम्पन्नम्।

नीचे लिखे गए विशेष्यों का विशेषण पद कोष्ठक से चुनकर लिखिए –

क्रमांक	विशेषण पदानि	विशेष्यपदानि
	यथा – ऐतिहासिकम्	नाटकम् (ऐतिहासिकः/ऐतिहासिकम्)
I	....	उपदेशः (नैतिकः/नैतिकम्)
Ii	....	अभ्यासः (प्रायोगिकम्/प्रायोगिकः)
Iii	....	परीक्षा (मासिकम्/मासिकी)
Iv	....	निमंत्रणम् (औपचारिकम्/औपचारिकः)
V	....	कृतिः (मौलिकम्/मौलिकी)
Vi	....	दृश्यम् (प्राकृतिकम्/प्राकृतिकः)
Vii	....	विद्यालयः (प्राथमिकम्/प्राथमिकः)
Viii	....	विद्या (आध्यात्मिकी/आध्यात्मिकम्)

ङीप्

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(क) पुण्यजला गङ्गानदी।

(ख) जीवनदात्री प्रकृतिः रक्षणीया सदा।

(ग) उपकारिणी वृत्तिः भवति खलु सज्जनानाम्

(घ) लौकिकी उन्नतिः यशः वर्धयति।

(ङ) यादृशी भावना सिद्धिः भवति तादृशी।

2. उपर्युक्त रेखाङ्कित पदों में किस लिङ्ग का रूप है।

रेखाङ्कित पदों में स्त्रीलिंग का रूप है।

कैसे जान गए कि इन पदों में स्त्रीलिङ्ग का रूप है। क्योंकि इन पदों के अंत में 'ई' प्रत्यय दिखाई दे रहा है। क्या 'ई' स्त्री प्रत्यय है?

नहीं 'ङीप्' (ङ+इ+प) स्त्रीप्रत्ययः।

ङीप् प्रत्यय में 'ई' ही शेष रहता है। 'ई' ङीप् प्रत्यय का रूप है।

तो फिर ङीप् प्रत्यय का प्रयोग कब किया जाना है। स्त्रीलिङ्ग शब्द निर्माण के लिए ही 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यश – नद्+ङीप् = नदी, ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द होता है।

3. अतः हमें ज्ञात हुआ –

ङीप् स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोग की दशा में 'ई' शेष रहता है।

स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण में ङीप् प्रत्यय प्रयुक्त होता है। जैसे– लौकिक+ङीप् = लौकिकी।

ङीप् प्रत्ययान्त शब्द नदी' शब्द के समान होगा।

4. उदाहरण के अनुसार ईकारान्त स्त्रीलिंङ्ग शब्दों की रचना कीजिए –

क्रमांक	शब्दाः + प्रत्ययाः	निर्मितस्त्रीलिंङ्गशब्दाः
I	देव + ङीप्	देवी
Ii	तरुण + ङीप्	....
Iii	कुमार + ङीप्	....

Iv	त्रिलोक + ङीप्	....
V	किशोर + ङीप्	....
Vi	मनोहारिन्+ ङीप्	मनोहारिणी
Vii	मालिन + ङीप्	....
Viii	तपस्विन् + ङीप्	....
IX	भवत् + ङीप्	....
X	श्रीमत् + ङीप्	....
Xi	गच्छत् (गम्+शतृ)+ ङीप्	गच्छन्ती
Xii	पचत्(पच्+शतृ)+ ङीप्	....
Xiii	नृत्यत् (नृत्+शतृ)+ ङीप्	....
Xiv	पश्यत् (दृश्+शतृ)+ ङीप्	....
	वदत् (वद्+शतृ)+ ङीप्	....

ध्यान देने योग्य :–

जब शतृ प्रत्ययान्त शब्दों में ङीप् प्रत्यय जुड़ता है तब अंतिम 'त' वर्ण से पूर्व 'न' वर्ण का आगम होता है।

यथा– गम्+शतृ = गच्छत्+ङीप् = गच्छत्+ई = गच्छन्ती ।

5. नीचे लिखे वाक्यों में निर्दिष्ट शब्दों के साथ ङीप् प्रत्यय जोड़कर वाक्य पूर्ण कीजिए–

यथा– श्रीमती (श्रीमत्+ङीप्) हेमा नाट्योत्सवे दीपं प्रज्वालयति।

1. (कुमार+ङीप्) .... वंदना पुष्पगुच्छैः तस्याः स्वागतं करोति।
2. एका (किशोर+ङीप्) ....भरतनाट्यं प्रस्तौति।
3. तया सह (नृत्यत्+ङीप्) ....देविका अस्ति।
4. मञ्चे (गायत्+ङीप्) ....सुधा अस्ति।
5. (मनोहारिन्+ङीप्) ....एषा नाट्यप्रस्तुतिः।

6. नीचे लिखे वाक्यों में स्त्रीप्रत्ययान्त (टाप्+ङीप्) पदों को चुनकर अलग–अलग लिखिए–

1. मधुरा वाणी प्रीणयति मनः।
2. सतां बुद्धिः हितकारिणी भवति।
3. सत्सङ्गतिः सर्वत्र दुर्लभा।
4. उपकारकर्त्री प्रकृतिः धन्या।
5. कुलाङ्गना सदा सम्मानस्य अधिकारिणी।
6. नैतिकी शिक्षा आवश्यकी।

1. **नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –**

(क) बालः बाला च उदयन्तं भास्करं नमतः।

आचार्यः आचार्या च वृक्षान् आरोपयतः।

शिष्यः शिष्या च लताः जलेन सिञ्चतः।

गायकः गायिका च प्रकृतिगीतं गायतः।

अहो! अत्र शोभना प्रकृतिः शोभनः च उत्सवः।

2. **क्या आप जानते है कि उपर्युकत रेखाङ्कित पदों की लिङ्ग की दृष्टि से क्या विशिष्टता है?**

" इन पदों में स्त्रीलिङ्ग रुप प्रयुक्त हुए हैं"।

इन पदों के अंत में कौन सा प्रत्यय है?

:"आ" प्रत्यय दिखाई दे रहा है।

यह 'आ' प्रत्यय किसका रुप अथवा अंश है?

'टाप्' (ट्+आ+प्) प्रत्यय का। टाप् स्त्री प्रत्यय है। तो फिर 'टाप्' प्रत्यय कब और कैसे शब्दों के साथ जुड़ता है। स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण के लिए अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के साथ 'टाप्' प्रत्यय जुड़ता है। 'टाप्' प्रत्यय में केवल 'आ' शेष रहता है।

यथा –बाल (अकारान्त पु.)+ टाप् (स्त्रीलिङ्ग)

बाल + ट् + आ + प् = बाल + आ = बाला (स्त्रीलिङ्ग)

'टाप्' प्रत्ययान्त शब्दों का रुप कैसा हो?

इस प्रकार के शब्दों का रुप 'लता' के समान होगा।

3. अतः इसे ज्ञात हुआ कि –

❖ टाप् स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोग में इसका 'आ' ही शेष रहता है।

❖ यह प्रत्यय स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण के लिए अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है। जैस– बाल + टाप् = बाला।

❖ अक भाग से अंत शब्दों में 'क' वर्ण से पूर्व अकार स्थान में 'इ' होता हैं। जैसे (ग्+ आ+य्+अ+क्)+ टाप् = गायिका

4. नीचे लिखे वाक्यों में निर्दिष्ट शब्दों के साथ टाप् प्रत्यय का प्रयोग कर वाक्य पूरा कीजिए–

यथा – प्रभा पठने प्रवीणा (प्रवीण+टाप्) अस्ति।

1. अस्याः ....(अनुज+टाप्) दीप्तिः अस्ति।
2. दीप्तिः क्रीडायाम् ....(कुशल+टाप्) अस्ति।
3. युतिका दीप्तयोः माता ....(चिकित्सक+टाप्) अस्ति।
4. सा समाजस्य ....(सेवक+टाप्) अस्ति।
5. सा तु स्वभावेन अतीव ....(सरल+टाप्) अस्ति।

6. नीचे लिखे वाक्यों में टाप् प्रत्ययान्त पदों को चुनकर लिखिए –

1. अमृतजला इयं गङ्गा पवित्रा।
2. कथं नु एतस्याः शोभा विचित्रा।
3. सवेगं वहन्ती खलु शोभमाना।
4. वन्द्या सदा सा भुवि राजमाना।
5. भक्तैः सदा तु चिरं सेवमाना।
6. भागीरथी भवतु मे पूर्णकामा।

––––000–––

अव्यय – प्रकरण

जो शब्द तीनों लिङ्गों सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में एक समान रहते है, उन्हें 'अव्यय' कहते है।

अव्यय शब्दों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। 'अव्यय' अर्थात् 'न व्येति इति अव्ययम्।' ये अविकारी ;अपरिवर्तनशील होते है।

कुछ प्रमुख प्रचलित अव्यय पदों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग इस प्रकार है –

1. अत्र – यहाँ।

त्वम् अत्र आगच्छ। तुम यहाँ आओ।

2. यदा – जब ।

यदा सूर्यः उदेति तदा तमः नश्यति।

जब सूर्य उदय होता है तब अन्धकार नष्ट होता है।

3. तदा – तब।

यदा वसन्तः आगच्छति तदा कोकिला कूजति।

जब वसन्त आता है तब कोयल कूकती है।

4. एकदा – एक दिन, एक बार

एकदा सः पिपासया व्याकुलः अभवत्।

एक बार वह प्यास से व्याकुल हो गया।

5. सर्वदा – हमेशा।

गोपालः सर्वदा सत्यं वदति।

गोपाल हमेशा सत्य बोलता है।

6. सदा – हमेशा।

<u>सदा</u> सत्यं वदेत्।

सदा सत्य बोलना चाहिए।

7. सर्वथा – सब प्रकार से।

सत्यवचनं <u>सर्वथा</u> हितकारी भवति।

सत्यवचन सभी प्रकार से हितकारी होता है।

8. तत्र – वहाँ

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते <u>तत्र</u> देवताः।

जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है।

9. सर्वत्र – सही जगह।

अति <u>सर्वत्र</u> वर्जयेत्।

अति सभी जगह वर्जित है।

10. यत्र – जहाँ।

<u>यत्र</u> धूमः तत्र अग्निः।

जहाँ धुआँ है वहाँ अग्नि है।

11. एकत्र – इकट्ठे, एक जगह।

त्वं काष्ठान् <u>एकत्र</u> कुरू।

तुम लकड़ियाँ इकट्ठा करो।

12. अन्यत्र – दूसरी जगह।

सः <u>अन्यत्र</u> प्रचलितः।

वह दूसरी जगह चला गया।

13. कुत्र – कहाँ।

त्वं <u>कुत्र</u> पठसि।

तुम कहाँ पढ़ते हो।

14. उच्चैः – जोर से।

सभायां उच्चैः मा वद।

सभा में जोर से मत बोलो।

15. शनैः – धीरे।

कच्छपः शनैः चलति।

कछुआ धीरे चलता है।

16. नीचैः – नीचे

वृक्षस्य नीचैः जनाः विश्राम्यन्ति।

वृक्ष के नीचे लोग विश्राम करते हैं।

17. शीघ्रम् – जल्दी।

त्वं शीघ्रं गच्छ।

तुम जल्दी जाओ।

18. चिरम् – देर से। बहुत काल तक।

ते तत्र चिरम् अवसन्।

वे वहाँ बहुत समय तक रहे।

19. सायम् – संध्या।

प्रातः सायं च पर्यटनं वरम्।

प्रातः और शाम को घूमना अच्छा है।

20. प्रातः – सबेरे।

प्रातः भ्रमणम् उचितम्।

सबेरे घूमना उचित है।

21. सह – साथ।

पुत्री मात्रा सह गच्छति।

पुत्री माता के साथ जाती है।

22. अपि – भी।

अहं संस्कृतं अपि पठामि।

मैं संस्कृत भी पढ़ता हूँ।

23. बहिः – बाहर।

सर्पः विवरात् बहिः निस्सरति।

सर्प बिल से बाहर निकलता है।

24. उपरि – ऊपर।

क्षेत्रस्य उपरि खगः उड्डयते।

खेत के ऊपर पक्षी उड़ता है।

25. इदानीम् – इस समय।

बालकाः इदानीं क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति।

बालक इस समय खेल के मैदान में खेलते हैं।

26. अधुना – अब। इस समय।

अधुना भारते लोकतन्त्रम् अस्ति।

भारत में अब लोकतंत्र है।

27. साम्प्रतम् – अब, (इस् समय।)

साम्प्रतं वसन्तऋतुः अस्ति।

वर्तमान में वसन्त ऋतु है।

28. एव – ही।

परिवारः लघु एव वरम्।

परिवार का छोटा होना ही अच्छा है।

29. एवम् – इस प्रकार।

सः एवम् अवदत्।

वह इस प्रकार बोला।

30. यथा – जैसे।

यथा बीजं तथा **फलम्**।

जैसा बीज वैसा **फल**।

31. तथा – वैसे।

यो यथा करोति स तथा प्राप्नोति।

जो जैसा करता है वह वैसा पाता है।

32. यावत् – जब तक।

यावत् प्रावृट् कालः भवति तावत् नदी जलपरिपूर्णा भवति।

जब तक वर्षा काल रहता है तब तक नदी जल से परिपूर्ण रहती है।

33. तावत् – तब तक।

यावत् अहं रेलस्थानकम् अगच्छम्, तावत् रेलयानं गतमासीत्।

जब तक मैं रेल स्थानक गया तक तक रेल जा चुकी थी।

34. ह्यः – बीता कल।

ह्यः रविवासरः आसीत्।

कल रविवार था।

35. श्वः – आने वाला कल।

श्वः सोमवासरः भविष्यति।

कल सोमवार होगा।

36. अद्य – आज।

अद्य मम जन्मदिवसः।

आज मेरा जन्मदिन है।

37. यत् – कि।

सः अवदत् यत् अहं पाठशालां गच्छामि।

वह बोला कि मैं पाठशाला जा रहा हूँ।

38. यतः – क्योंकि।

यतः सः धूर्तः अतः तस्य विश्वासः न कर्त्तव्यः।

क्योंकि वह धूर्त है इसलिए उसका विश्वास नही करना चाहिए।

39. ततः – उसके बाद, उधर, वहाँ से।

ततः अहं स्वग्रामं गतवान्।

उसके बाद मैं अपने गाँव चला गया।

40. परितः – चारों ओर।

ग्रामं परितः वनम् अस्ति।

गाँव के चारों ओर जंगल हैं।

41. अभितः – दोनों ओर।

गृहम् अभितः वृक्षाः सन्ति।

घर के दोनों तरफ वृक्ष हैं।

42. सर्वतः – सभी ओर।

ग्रामं सर्वतः वृक्षावृतः अस्ति।

गाँव सभी तरफ से वृक्षों से घिरा है।

43. कुतः – कहाँ से। किधर से।

कुतः भवान् आगतः?

आप कहाँ से आए है?

44. किम् – क्या।

किम् अनिलः अपि आगच्छत्।

क्या अनिल भी आ गया ?

45. कदा – कब।

त्वं कदा आगमिष्यसि।

तुम कब आओगे।

46. विना – बिना।

ज्ञानं विना सुखं न अस्ति।

ज्ञान के बिना सुख नही है।

47. पुरा – पुराने समय में, पहले।

पुरा राजा भोजः आसीत्।

प्राचीन समय में राजा भोज थे।

48. मा – नहीं।

विवादं मा कुरु।

विवाद नहीं करो।

अभ्यासः

1. कोष्ठकात् उचिताव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

   उच्चैः, उपरि, इतस्ततः, बहिः, अधुना, प्रति, शनैः, नीचैः, परस्परम्, अतीव, सह, इत्थम्

   1. वृक्षस्य ....वानरः तिष्ठाति।
   2. सः गृहात् .... गच्छाति।
   3. कुक्करः .... भ्रमति।
   4. काकः .... भासते।
   5. कच्छपः .... चलति।
   6. सा उपवनं .... गच्छति।
   7. बालकः .... पठति।
   8. जलं .... पतति।
   9. पुत्री जनकेन .... गच्छति।
   10. तौ .... वदतः।
   11. सः .... प्रसन्नः अस्ति।
   12. .... मा कुरू।

2. अव्ययनां प्रयोगः युग्मरुपेण अपि भवति।

   यथा–यत्र–तत्र / यथा–तथा / यदा–कदा / यावत्–तावत् –

   अधोलिखितरिक्तस्थानानि युग्माव्ययेन सह पूरयत–

   1. .... बीजं .... फलम्।
   2. ....मेघाः गर्जन्ति .... मयूराः नृत्यन्ति।
   3. .... देशः .... वेषः।
   4. .... सत्यं .... विजयः।
   5. ....गिरयः स्थास्यन्ति पृथिव्यां ....रामायणकथा प्रचलिष्यति।

3. ह्यः वा श्वः अव्ययपदम् उचित स्थाने लिखन्तु।

   1. .... अहं विद्यालयं न अगच्छम्।
   2. .... अहं विद्यालयं गमिष्यामि।
   3. ....शनिवासरः आसीत्।
   4. .... सोमवासरः भविष्यति।
   5. .... असौ गृहे न आसीत्।
   6. .... असौ गृहे भविष्यति।

कारक

क्रिया से संबंध रखने वाला, कारक होता है। किसी वाक्य में जिस संज्ञा, सर्वनाम आदि का क्रिया से प्रत्यक्ष संबंध होता है, वही कारक कहलाता है। अर्थात्

" क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्"।

जिन शब्दों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है, वे कारक नहीं माने गए हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार कारकों की संख्या है।

"कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्।।"

'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होने के कारण कारक नहीं मानते हैं।

विभक्ति

क्रिया के साथ संज्ञा शब्दों का सम्बन्ध प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वे ही 'विभक्ति' कहलाती हैं अर्थात्

" संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः"।

विभक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं–

1. कारक विभक्ति।
2. उपपद विभक्ति।

1. **कारक विभक्ति–** जो विभक्ति क्रिया के चिह्न के आधार पर लगती है और जिसमें सामान्य नियम लगते हों उसे कारक विभक्ति कहते हैं। जैसे– तुमने पत्र लिखा (त्वं पत्रम् अलिखः) यहाँ 'तुम' के साथ चिह्न 'ने' है अतः 'त्वम्' में प्रथमा विभक्ति हुई है।
2. **उपपद विभक्ति–** जब वाक्य में किसी विशेष शब्द के कारण क्रिया चिह्नों के अनुसार विभक्ति न लगाकर कोई विशेष विभक्ति लग जाए तो उसे 'उपपद विभक्ति' कहते हैं। जैसे– सैनिक देश की रक्षा करते हैं। (सैनिकाः देशं रक्षन्ति)। यहाँ कारक नियम से तो 'देश' में पष्ठी विभक्ति लगनी चाहिए थी परन्तु 'रक्ष्' धातु के साथ द्वितीया विभक्ति ही लगी है।

उपपद विभक्तियाँ –

i. द्वितीया विभक्ति–

वार्तिक – 'अभित्: परित्: समया निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया' अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (हाय) और प्रति (की ओर) के साथ द्वितीया विभक्ति होती हैं। जैसे–

अभितः – ग्रामस् अभितः मार्गाः सन्ति। (ग्राम के दोनों ओर मार्ग है।)

परितः – नदीं परितः वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।)

समया – ग्रामं समया नदी प्रवहति। (गाँव के समीप नदी बहती है।)

निकषा – ग्रामं निकषा कीडाक्षेत्रं वर्तते। (गाँव के समीप खेल का मैदान है)

हा – हा नास्तिकम्। (नास्तिक के प्रति शोक।)

प्रति – मयङ्कः विद्यालयं प्रति गच्छति। (मयङ्क विद्यालय की ओर जाता है।)

सर्वतः (सब ओर) एवं उभयतः के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती हैं।

सर्वतः – वनं सर्वतः मार्गाः सन्ति। (वन के सभी ओर मार्ग हैं।)

उभयतः – मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर वृक्ष है।)

ii. तृतीया विभक्ति–

सह, साकं, सार्धम्, समम् (के साथ) के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

सह – छात्रः शिक्षकेण सह पठति। (छात्र शिक्षक के साथ पढ़ता है।)

साकम् – माता पुत्रेण साकम् आपणं गच्छति। (माता पुत्र के साथ बाजार जाती है।)

सार्धम् – बालिका शिक्षिकया सार्धं विद्यालयं गतवती। (बालिका शिक्षिका के साथ विद्यालय गयी।)

समम् – दुर्जनेन समं कः सुखं लभते? (दुष्ट के साथ कौन सुख पाता है?)

सदृशः (के समान) एवं अलम् (पर्याप्त, बस करो) के योग में भी तृतीया विभक्ति होती है।

यथा – सदृशः – लोभेन सदृशः पापं नास्ति। (लोभ के समान पाप नहीं है।)

विद्यया सदृशं धनं नास्ति। (विद्या के सामान धन नहीं है।)

तपसा सदृशं सुखं नास्ति। (तपस्या के समान कोई सुख नहीं है।)

अलम् – अलं मिथ्याभाषणेन। (मिथ्या भाषण से बस करो।)

iii. चतुर्थी विभक्ति– वार्तिक – **'नमः स्वस्तिस्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च चतुर्थी'** नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण हो), स्वाहा (आहुति देना), स्वधा (समर्पित, हवि का दान), अलं (पर्याप्त, काफी) वषड् (अर्पित) के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा –

1. नमः – श्री गुरवे नमः। (श्री गुरु को नमस्कार है)।
   – देव्यै सरस्वत्यै नमः। (देवी सरस्वती को नमस्कार है।)
2. स्वस्ति – छात्रेभ्यः स्वस्ति। (छात्रों का कल्याण हो।)
3. स्वाहा – अग्नये स्वाहा। (आग को समर्पित है।)
4. स्वधा – पितृभ्यः स्वधा। (पितरों को समर्पित है।)
5. अलम् – अहं गमनाय प्रभुः अस्मि। (मैं वहाँ जाने के लिए समर्थ हूँ।)
6. वषड् – इन्द्राय वषड्। (इन्द्र को हवि का दान)

दा, दद् (देना), रूच (अच्छा लगना), क्रुध् (क्रोध करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना) आदि धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–

1. दा, दद् – सः निर्धनाय वस्त्रं ददाति (यच्छाति)। (वह निर्धन को वस्त्र देता है)
2. रूच् – मह्यं मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू अच्छा लगता है।)
3. क्रुध् – पिता पुत्राय क्रुध्यति। (पिता पुत्र के लिए क्रोधित होते है।)
4. ईर्ष्य् – असुराः देवेभ्यः ईर्ष्यन्ति। (असुर देवों से ईर्ष्या करते हैं।)

iv. पञ्चमी विभक्ति– बहिः (बाहर), विना (के बिना), ऋते (बिना) के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

1. बहिः – श्यामा विद्यालयात् बहिः गच्छति। (श्यामा विद्यालय से बाहर जाती है।)
   ग्रामात् बहिः सरः अस्ति। (ग्राम के बाहर सरोवर है।)
2. विना – ज्ञानात् विना जीवनं शून्यम्। (ज्ञान के बिना जीवन शून्य है।)
3. ऋते – धनात् ऋते न सुखम्। (धन के बिना सुख नहीं है।) 'तरप्' प्रत्यय के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–
   रामात् कृष्णः श्रेष्ठतरः। (राम से कृष्ण श्रेष्ठ है।)
   मतिः बलाद् गुरूतरा। (मति बल से भारी है।)

'भी' (डरना), 'त्रस्' (त्रा), प्र उपसर्ग युक्त 'भू' धातु के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

1. भी – रविः सर्पात् विभेति। (रवि साँप से डरता है)

सिंहात् भीतः मृगः अधावत्। (सिंह से डरा हुआ मृग भाग गया।)

2. त्रस् (त्रा) – सज्जनः दुर्जनात् त्रायते। (सज्जन दुर्जन से बचाता है।)

3. प्र भू – शिवनाथनदी गढचिरौलीस्थानात् प्रभवति।

(शिवनाथनदी गढ़चिरौली नामक स्थान से निकलती है।)

महानदी सिहावा–पर्वतात् प्रभवति। (महानदी सिहावा पर्वत से निकलती है।)

v. पष्ठी विभक्ति– सम्, सदृश, तुल्य (समान) के योग में पष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–

1. सम – कृष्णस्य समः उपदेशकः नास्ति। (कृष्ण के समान उपदेशक नहीं है।)

2. सदृश – अर्जुनः कर्णस्य सदृशः वीरः आसीत्। (अर्जुन कृष्ण के समान (तुल्य) वीर था।)

3. तुल्य – सीता गीतायाः तुल्या अस्ति। सीता गीता के तुल्य (समान) है।

vi. **सप्तमी विभक्ति–** कुशलः निपुणः, प्रवीणः (कुशल) के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे–

1. कुशलः – सज्जनः व्यवहारे कुशलः भवति। (सज्जन व्यवहार में कुशल होता है)

2. प्रवीणः – ते स्वविषयेषु प्रवीणाः सन्ति। वे अपने विषयों में प्रवीण है।)

3. निपुणः – सा स्वकार्ये निपुणा अस्ति। (वह अपने कार्य में निपुण है।)

स्निह्, अभिलष् (प्रेम करना) इन धातुओं के साथ जिससे प्रेम किया जाए उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

1. स्निह् – पिता पुत्र्यां स्निहयति। (पिता पुत्री से स्नेह करते है।)

2. अभिलष् – भ्रमराः पुष्पेपु अभिलषन्ति। (भँवरे फूलें से प्रेम करते हैं। चाहते हैं।

विशेष : – शिक्षक उपर्युक्त उपपदों से संबंधित नवीन वाक्यों का प्रयोग कर छात्रों को अभ्यास करायेंगे।

––––0000––––

अनुवाद का अभ्यास

अनुवाद कला को सीखने के लिए दो बातों का अभ्यास जरूरी है। सर्वप्रथम व्याकरण के छोटे–बड़े नियमों का ज्ञान हो और दूसरे प्रत्येक अर्थ को प्रकट करने के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हो, तो प्रस्तुत संदर्भ में कौन–सा शब्द भाव एवं प्रसंग की दृष्टि से संगत बैठता है। हमें हिन्दी भाषा के साथ–साथ संस्कृत भाषा के व्याकरण का ज्ञान भी अच्छी तरह होना चाहिए। विशेष रूप से निम्न बातों का ज्ञान होना जरूरी हैः–

i. संस्कृत शब्दों में संयुक्त अक्षर बहुत है तथा वहाँ अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त आदि का विशेष महत्व है, अतः संस्कृत के शब्दों का उच्चारण ठीक–ठीक आना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण होने पर लिखने में भी अशुद्धियाँ होना स्वाभाविक है।

ii. संस्कृत में दूसरी बड़ी कठिनाई शब्दों के लिंग ज्ञान की है। संस्कृत शब्दों के लिंगों के लिए विशेष नियम नहीं है। यह हमें बार–बार के अभ्यास से ही पता चलता है कि अमुक शब्द पुंल्लिग है, स्त्रीलिंग है या नपुंसकलिंग है।

iii. संख्यावाचक शब्दों (एक, द्वि, त्रि इत्यादि) तथा सर्वनाम शब्दों (यत, तत्, सर्व इत्यादि) के रूप पुंल्लिग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में अलग–अलग बनते हैं, अतः इन शब्दों के रूपों को तीनों लिंगो में याद करना जरूरी है। अनुवाद में ये शब्द प्रायः विशेषण के रूप में आते हैं। विशेष्य–शब्दों के अनुसार ही विशेषण के लिंग होते है।

iv. अनुवाद में धातु रूपों का विशेष महत्व है। पहले तो यह पता होना चाहिए कि अमुक धातु किस गण की है। दूसरे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि यह धातु परस्मैपदी है, आत्मनेपदी है या उभयपदी है। फिर जिस काल या अवस्था का निर्देश है,उसके अनुसार कौन से लकार का प्रयोग होना चाहिए। किन्तु इतने मात्र से काम नहीं चलेगा। अन्त में हमें यह देखना है कि वाक्य कर्तृवाच्य में है या कर्मवाच्य में है या भाववाच्य में। जिस पुरुषतथा वचन का कर्ता होगा, क्रिया–रूप भी उसी पुरुष तथा वचन का होगा।

v. अनुवाद में णिजन्त (प्रेरणार्थक क्रिया) कृदन्त शब्द एवं उपसर्ग आदि ज्ञान भी आवश्यक है। धातुओं के पूर्व उपसर्ग कैसे लगाया जाता है तथा उसके पश्चात् धातु रूप से पहले उपसर्ग लगाया जाता है, जैसे गम् धातु का ल् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में अगच्छत् रूप बन जाने पर इसके पूर्व प्रति तथा आ उपसर्ग लगाने से प्रत्यागच्छत् (प्रति + आ + अगच्छत्) रूप बनेगा। ऐसे ही कृदन्त रूपों में यदि क्त्वा का रूप हो तथा उससे पूर्व उपसर्ग आ गया हो, तो क्त्वा का ल्यप् हो जायेगा। श्रु धातु से क्त्वा में 'श्रुत्वा' रूप बनता है परन्तु इसके पूर्व प्रति उपसर्ग आने से ' प्रतिश्रुत्य' रूप हो जायेगा।

vi. अनुवाद में कारक, विभक्तियों तथा उपपद–विभक्तियों का भी ध्यान रखना चाहिए।

vii. क्रिया – विशेषण शब्द अव्यय होते हैं। उनके रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

viii. अनुवाद को उत्तम बनाने के लिए हम वाक्य में संस्कृत शब्दों के बीच में संधि कर सकते हैं। जैसे –रामः विद्यालयमागच्छत्। 'विद्यालयम्' और आगच्छत् में संयोग किया गया है।

अनुवाद अभ्यास–

1. बालक हँसता है।	–	बालकः हसति।
2. बालक सूँघते हैं।	–	छात्राः जिघ्रन्ति।
3. वह देता है।	–	सः ददाति।
4. वे दोनों सहन करते है	–	तौ सहेते।
5. तुम प्रसन्न होते हो।	–	त्वं मोदसे।
6. मैं नदी में तैरता हूँ।	–	अहं नदीं तराभि।
7. आप कहाँ रहते हैं।	–	भवान् कुत्र निवसति।
8. मुझसे पाठ पढा जाता है।	–	मया पाठः पठ्यते।
9. हम सब भारतवासी हैं।	–	वयं सर्वे भारतवासिनः स्मः।
10. तुम दीनों पर दया करों	–	त्वं दीनान् प्रति दयां कुरू।
11. परीक्षा के बिना डिग्री कैसी?	–	परीक्षां विना उपाधिपत्रं कीदृशम्?
12. मुझे संस्कृत पढ़ना अच्छा लगता है।	–	मह्यं संस्कृतपठनं रोचते।
13. आपका स्वागत है।	–	भवते स्वागतम्।
14. तू कहाँ से आता है।	–	त्वं कुतः आगच्छसि।
15. तुम थोड़ी देर बाद यहाँ आना	–	त्वं क्षणात् उर्ध्वम् अत्र आगच्छ।
16. वह पढ़ने के कारण रहता है।	–	सः पठनस्य हेतोः वसति।
17. कचहरी के समीप स्टेशन है।	–	न्यायालयस्य अन्तिकं यानस्थानकम् अस्ति।
18. वह धन कमाने में लगा है।	–	सः धनार्जने रतः अस्ति।
19. छात्रों में मोहन होशियार है।	–	छात्रेषु मोहनः पटुतमः।
20. मेज पर पुस्तकें है।	–	पटले पुस्तकानि सन्ति।
21. चार लड़के नहीं आए।	–	चत्वारः बालकाः न आगच्छन्।
22. फरवरी में अठ्ठाइस दिन होते हैं।	–	फरवरी मासे अष्टाविंशतिः दिनानि भवन्ति।
23. मेरे पास चार वस्तुएँ हैं।	–	मम समीपे चत्वारि वस्तूनि सन्ति।
24. उसका क्या नाम था?	–	तस्य किं नाम आसीत्?
25. तुम्हारे पास पढ़ने का समय है।	–	तव समीपे पठितुं समयः अस्ति।
26. तुम्हें वहाँ जाना चाहिए।	–	त्वया तत्र गन्तव्यम्।

27. पढ़ने के समय पढ़ना चाहिए। – पठनकाले पठितव्यम्।

28. यथाशक्ति सबकी सेवा करनी चाहिए– यथाशक्ति सर्वे सेवितव्याः।

29. वह चित्र देखकर आया है। – सः चित्रं दृष्ट्वा समागतः।

30. छात्र पुस्तक लाते हैं। – छात्राः पुस्तकं आनयन्ति।

31. मैं पिता के चरण छूता हूँ। – अहं पितुः चरणौ स्पृशामि।

32. हम आँखों से देखते हैं। – वयं चक्षुभिः पश्यामः।

33. लोभ से विद्या का नाश होता है। – लोभेन विद्या नश्यते।

34. मनुष्य सुख के लिए धन कमाता है।– मनुष्यः सुखाय धनम् अर्जति।

35. मैं प्यासे को जल देता हूँ। – अहं पिपासवे जलं ददाभि।

36. वह घर से बाहर जाता है। – सः गृहात् बहिः गच्छति।

37. बादलों से बूँदे गिरती है। – मेघेभ्यः बिन्दवः पतन्ति।

38. स्कूल का कार्य पहले करो। – विद्यालयस्य कार्यं प्रथमं कुरू।

39. घर में कुत्ता भी शेर होता है। – गृहे कुक्कुरोऽपि सिंहायते।

40. राम! तुम्हारी माता कहाँ है। – राम! तव माता कुत्र अस्ति।

41. उसने मुझसे मार्ग पूछा। – सःमां मार्गम् अपृच्छत्।

42. इस वर्ष वर्षा होगी। – अस्मिन्वर्षे वृष्टिः भविष्यति।

43. हम भी एक प्रश्न पूछेंगे। – वयमपि एकं प्रश्नं प्रक्ष्यामः।

44. तुम्हारी परीक्षा कब होगी? – तव परीक्षा कदा भविष्यति?

45. वह बुरी आदत छोड़े। – सः दुर्व्यसनं त्यजेत्।

46. हमारा देश यशस्वी हो। – अस्माकं देशः यशस्वी भवेत्।

47. शिक्षक छात्र को पढ़ाता है। – शिक्षकः छात्रं पाठयति।

48. शोर बन्द करो। – अलं कोलाहलेन।

49. बुद्धि बल से श्रेष्ठ है। – मतिःबलाद् गरीयसी।

50. उतना अन्न खाओ जितना हजम हो सके। – तावन्तम् अन्नं भक्षय यावन्तं सुपाच्यम्।

––––0000––––

वाच्य प्रकरण

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

क	ख
(i) अनुजः पाठं पठति।	अनुजेन पाठः पठ्यते।
(ii) सः लेखं लिखति।	तेन लेखः लिख्यते।
(iii) रमा भोजनं पचति।	रमया भोजनं पच्यते।
(iv) सा भोजनं खादति।	तया भोजनं खाद्यते।
(v) तौ पुस्तकं पठतः।	ताभ्यां पुस्तकं पठ्यते।
(vi) त्वं पुष्पाणि चिनोषि।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।
(vii) सः तौ पश्यति।	तेन तौ दृश्येते।
(viii) आवां गीतं गायावः।	आवाभ्यां गीतं गीयते।
(ix) वयं चन्द्रमसं ध्यायामः।	अस्माभिः चन्द्रमाः ध्यायते।
(x) अहं सूर्यं पश्यामि।	मया सूर्यः दृश्यते।
(xi) बालकः वृक्षान् गणयति।	बालकेन वृक्षाः गण्यन्ते।

यहाँ 'क' खण्ड में जो वाक्य है वे कर्तृवाच्य में हैं और 'ख' में जो वाक्य हैं वे कर्मवाच्य के हैं। इन दोनों खण्डों में क्या भेद है। इसे जाने–

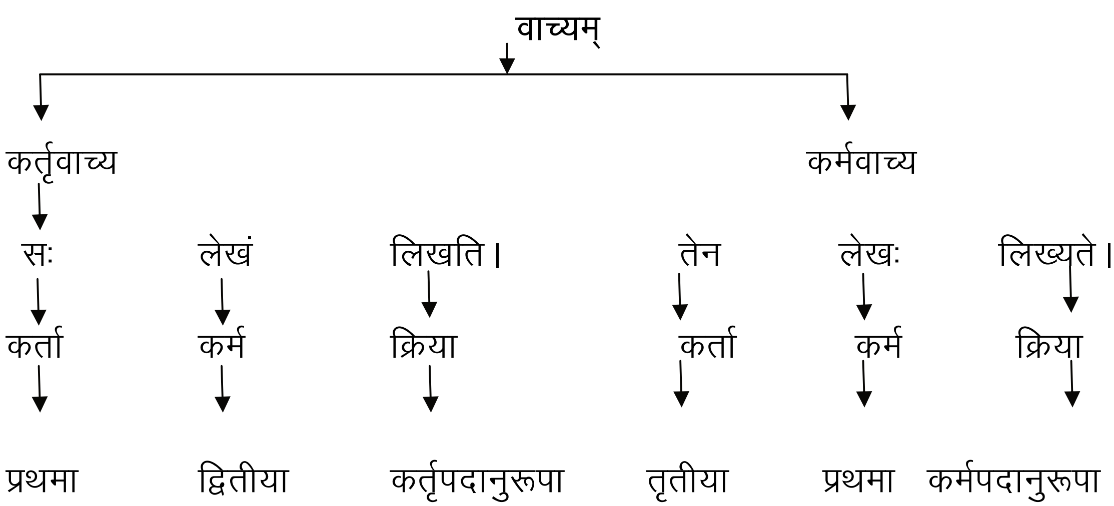

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करने के नियम–

I. कर्तृवाच्य के कर्त्ता की प्रथमा विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति की जाती है।

II. कर्तृवाच्य के कर्म की द्वितीया विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति की जाती है।

III. कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष/वचन तथा लिंग विभक्ति कर्म के पुरुष और वचन तथा लिंग/विभक्ति के अनुसार हो जाता है।

IV. कर्तृवाच्य में क्तवतु (तवत्) प्रत्यय के स्थान पर कर्मवाच्य में क्त (त) प्रत्यय हो जाता है। जैसे–

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः पाठं पठंति।	तेन पाठः पठ्यते।
त्वं गीतं गीतवान्।	त्वया गीतं गीतम्।
सः मां पश्यति।	तेन अहं दृश्ये।
त्वं पुष्पाणि चिनोषि।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के नियम–

I. कर्मवाच्य मे कर्त्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति में बदल जाती हैं।

II. कर्मवाच्य में कर्मकारक की प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति में बदल जाती है।

III. क्रिया के पुरुष व वचन कर्म के अनुसार न होकर कर्त्ता के अनुसार होते हैं। क्रिया आत्मने पद से परस्मैपद में बदल दी जाती है।

IV. कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त प्रत्यय की जगह कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय होता है। जैसे–

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
मया त्वं दृश्यते।	अहं त्वां पश्यामि।
तेन यूयं दृश्यध्वे।	सः युष्मान् पश्यति।
मया त्वम् आहूयसे।	अहं त्वाम् आह्वयामि।

नीचे लिखे वाक्यों में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य को चुनकर पृथक–पृथक कीजिए–

(क) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

(ख) सर्पाः पवनं पिबन्ति।

(ग) विद्वान् सर्वैः पूज्यते।

(घ) मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

(ङ) विद्या विनयं ददाति।

(च) बुभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते न पीयते काव्यरसः पिपासुभिः।

(छ) मत्तदन्तिनः रज्वा बध्यन्ते।

(ज) बालकेन (जलेन) घटः पूर्यते।

3. अधोलिखित वाक्यों में कर्तृपद को कर्मवाच्य में परिवर्तन कर लिखिए–

यथा भक्तः गीतां पठति	भक्तेन गीता पठ्यते।
(क) शिष्याः गुरून् नमन्ति।	.... गुरवः नम्यन्ते।
(ख) पुत्रः जनकं सेवते।	.... जनकः सेव्यते।
(ग) अहं पत्रं लिखामि।	.... पत्रं लिख्यते।
(घ) त्वं कवितां श्रृणोषि।	.... कविता श्रूयते।

4. अधोलिखित वाक्यों में कर्मपद को परिवर्तित कर लिखिए–

यथा अहं लोभं त्यजामि।	**मया लोभः त्यज्यते।**
(क) आचार्याः छात्रान् उपदिशन्ति।	आचार्याः ....उपदिश्यन्ते।
(ख) जनाः प्रदर्शनीं पश्यन्ति।	जनैः .... दृश्यते।
(ग) त्वं पुरस्कारं गृह्णासि।	त्वया ....गृह्यते।
(घ) छायाकारः छायाचित्रं रचयति।	छायाकारेण .... रच्यते।

5. कर्मवाच्य के वाक्यों में क्रिया पदों को लिखकर रिक्त स्थानों की पूति कीजिए–

यथा–मेघाः जलं वर्षन्ति	**मेघैः जलं वृष्यते।**
(क) उपकारी मानं न अभिलषति।	उपकारिणा मानः न .... ।
(ख) राष्ट्रपतिः राष्ट्रं सम्बोधयति।	राष्ट्रपतिना राष्ट्रं .... ।
(ग) छात्राः शिक्षिकाम् अभिनन्दन्ति।	छात्राभिः शिक्षिका .... ।
(घ) प्रधानमंत्री वैज्ञानिकान् सम्मानयति।	प्रधानमन्त्रिणा वैज्ञानिकाः .... ।

4. सुधा एक स्वस्थ कन्या है। उसकी दिनचर्या नियमित है। इसकी दिनचर्या जानकर नीचे मञ्जूषा से क्रिया पदों को चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

क्षाल्यन्ते, आरोपयन्ते, उद्यते, पीयते, गृह्यते, पठ्यते, खाद्येते, क्रियते स्मर्यते।

I. सुधया प्रत्युषे उद्यानं गत्वा व्यायामः .... ।

II. सुधया प्रातः दुग्धं .... ।

III. सुधया नित्यं दुग्धेन सह कदलीफले अपि .... ।

IV. सुधया भोजने सन्तुलिताहारः .... ।

V. सुधया स्ववाटिकायां वृक्षाः .... ।

VI. सुधया स्ववस्त्राणि स्वयं.............................. ।

VII. सुधया नित्यं समये.............................. ।

VIII. सुधया सायमपि ईश्वरः .... ।

IX. सुधया कदापि असत्यं न .... ।

भाववाच्य

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

(क) कर्तृवाच्य	(ख) भाववाच्य
(i) बालकः क्रीडति।	बालकेन क्रीड्यते।
(ii) शिशुः स्वपिति।	शिशुना सुप्यते।
(iii) छात्राः तिष्ठन्ति।	छात्रैः स्थीयते।
(iv) कन्याः हसन्ति	कन्याभिः हस्यते।
(v) अश्वाः धावन्ति।	अश्वैः धाव्यते।

इन वाक्यों में हमने देखा कि–

(1) कर्तृपद है।

(2) क्रिया पद भी है परन्तु कर्मपद नहीं है।

इन वाक्यों में किन धातुओं का प्रयोग है?

क्रीड्, स्वप्, स्था, हस्, धाव्, इन धातुओं का प्रयोग है। ये धातुएँ अकर्मक हैं।

इससे ज्ञात होता है कि यहाँ अकर्मक धातुओं का प्रयोग है। अर्थात् यहाँ कर्मपद नहीं है। अकर्मक धातु के योग में कर्तृवाच्य एवं भाववाच्य होते हैं। अब हम भाववाच्य के नियम जानें–

1. कर्तृपद में तृतीया विभक्ति होती है। कर्तृपद के विशेषण में भी तृतीया विभक्ति होती है।
2. भाववाच्य मे अकर्मक धातुओं का ही प्रयोग होता है।
3. भाववाच्य में बहुवचन भी क्रियापद हमेशा प्रथम पुरुषएक वचन में ही प्रयुक्त होता है।
4. भू, अस्, स्था, स्वप्, शीङ्, हस्, क्रीड्, इत्यादि धातुएं अकर्मक है।

भाववाच्य में

कर्ता	कर्म नहीं होता है	क्रिया
तृतीया विभक्ति में होता है।		प्रथम पुरुषएकवचन में होती है।

2. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में परिवर्तन कीजिए–

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
यथा – बालकाः हसन्ति (हस्)	बालकैः हस्यते।
(i) शिशुः रोदिति (रूद्)	(i) ....।
(ii) छात्राः अत्र तिष्ठन्ति (स्था)	(ii) ....।
(iii) सिंहः वने गर्जति (गर्ज्)	(iii) ....।
(iv) अलसः दिने स्वपिति (स्वप्)	(iv) ....।
(v) वानराः वृक्षेषु कूर्दन्ति (कूर्द)	(v) ....।
(vi) लता वर्धते (वृध्)	(vi) ....।

2. कोष्ठक से उचित पद चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

यथाः – भाववाच्य–विद्याहीनैः न शुभ्यते। (शुभ्यते/शोभ्यते)

I. कर्तृवाच्य विद्याहीनाः न शोभन्ते।

विद्याहीनैः न ....।(शुभ्यते/शोभ्यते)

II. विमानम् उड्डयते।

विमानेन ....। (उड्डीयते/उड्डयते)

III. सज्जनाः उपविशन्ति।

सज्जनैः .... । (उपविश्यन्ते / उपविश्यते)

IV. वृक्षाः कम्पन्ते।

वृक्षैः .... । (कम्प्यते / कम्प्यन्ते)

V. विद्यार्थिनः धावन्ति।

विद्यार्थिभिः .... । (धाव्यते / धाव्यन्ते)

(1) वाच्य के तीन प्रकार हैं–

I. कर्तृवाच्य

II. कर्मवाच्य

III. भाववाच्य

(2) कर्तृवाच्य में क्रिया का कर्ता के साथ सम्बन्ध होता है। जबकि कर्मवाच्य में क्रिया का कर्म के साथ सम्बन्ध होता है।

(3) भाववाच्य में कर्म नहीं होता है।

(4) कर्तृवाच्य में (सकर्मक धातु के योग में) कर्तापद प्रथमा विभक्ति में, कर्मपद द्वितीया विभक्ति में और क्रिया पद कर्ता पद के पुरुष एवं वचन के अनुसार होगी।

(5) कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा विभक्ति में और क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

(6) भाववाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में होता है। क्रिया सदा प्रथम पुरुष एक वचन में होती है। कर्ता बहुवचन मे होने पर भी क्रिया परिवर्तित नहीं होती।

(7) कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के क्रियापद निर्माण में मूलधातु के साथ 'य' जुड़ता है तथा मूलधातु + य + ते (पठ्यते, लिख्यते, सेव्यते)। सभी धातुओं के रूप आत्मने पद में ही होते हैं।

————0000————

उपसर्ग–प्रकरण

उपसर्ग शब्द का अर्थ 'समीप' होता है जो क्रियाओं (धातुओं) के पूर्व में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है। '' उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः। ''

संस्कृत में उपसर्गो की संख्या 22 है जिनका अर्थ सहित विवरण इस प्रकार है–

उपसर्ग		प्रचलित अर्थ
1. प्र	–	अधिक, उत्कर्ष, गति, यश, उत्पत्ति, आगे।
2. परा	–	उलटा, पीछे, अनादर, नाश।
3. अप	–	लघुता, हीनता।
4. सम्	–	अच्छा, पूर्ण, साथ।
5. अनु	–	पीछे, निम्न, समान, क्रम।
6. अव	–	अनादर, हीनता, पतन, विशेषता।
7. निस्	–	रहित, पूरा, विपरीत।
8. निर्	–	बिना, बाहर, निषेध।
9. दुस्	–	बुरा, कठिन।
10. दुर्	–	कठिनता, दुष्टता, निन्दा, हीनता।
11. वि	–	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता।
12. आ	–	तक, समेत, उलटा।
13. नि	–	निषेध, निश्चित अधिकता।
14. अधि	–	ऊपर, श्रेष्ठ, समीपता, उपरिभावादि।
15. अपि	–	निकट।
16. सु	–	उत्तमता, सुगमता, श्रेष्ठता।
17. उत्	–	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर।
18. अभि	–	सामने, पास, अच्छा, चारों ओर।
19. परि	–	आस पास, सब तरफ, पूर्णता।
20. उप	–	निकट, सदृश, गौण, सहायता, लघुता।
21. अति	–	अत्यधिक।
22. प्रति	–	विरोध की ओर।

क्र.	उपसर्ग	क्रिया पद	बने शब्द	अर्थ
1	प्र	भवति चरति	प्रभवति प्रचरति	उत्पन्न होता है। प्रचार होता है।
2	परा	भवति अयते	पराभवति पलायते	हारता है। भागता है।
3	अप	दिशति वदति	अपदिशति अपवदति	बहाना करता है। निन्दा करता है।
4	सम्	क्षिपति दिशति	संक्षिपति संदिशति	समेटता है। संदेश देता है।
5	अनु	मन्यते भवति	अनुमन्यते अनुभवति	राय देता है। अनुभव करता है।
6	अव	तरति गच्छति	अवतरति अवगच्छति	अवतार लेता है, नीचे उतरता है। जानता है।
7	निस्	चिनोति दिशति	निश्चिनोति निर्दिशति	निश्चय करता है। बतलाता है।
8.	निर्	अयते ईक्षते	निलयते निरीक्षते	छिपता है। निगरानी करता है।
9.	दुस्	अयते चरति	दुरयते दुश्चरति	दुखी होता है। बुरा काम करता है।
10.	दुर्	नयति वक्ति	दुर्णयति दुर्वक्ति	अन्याय करता है। गाली देता है।
11.	वि	लपति तरति	विलपति वितरति	रोता है, विलाप करता है। बाँटता है।
12.	आ	ददति रोहति	आददाति आरोहति	लेता है। चढ़ता है।
13	नि	दिशति दधे	निदिशति निदधे	आज्ञा देता है। विश्वास करता हूँ।
14	अधि	करोति क्षिपति	अधिकरोति अधिक्षिपति	अधिकार करता है। निन्दा करता है।
15	अपि	धत्ते	अपिधत्ते	ढाँकता है।
16	अति	रिच्यते एति	अतिरिच्यते अत्येति	बढ़ता है। नष्ट होता है।
17	सु	करोति नयति	सुकरोति सुनयति	पुण्य करता है। अच्छा काम करता है।
18	उत्	तिष्ठति पतति	उत्तिष्ठति उत्पतति	उठता है। उड़ता है।
19	अभि	जानाति धीयते	अभिजानाति अभिधीयते	पहचानता है। कहा जाता है।
20	प्रति	जानाति वदति	प्रतिजानाति प्रतिवदति	प्रतिज्ञा करता है। जवाब देता है।

21	परि	हरति वर्तन्ते	परिहरति परिवर्तन्ते	दूर करता है। घूमते हैं।
22	उप	विशामि दिशति	उपविशामि उपदिशति	बैठता हूँ। उपदेश देता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित क्रिया पदों से उपसर्ग एवं धातु अलग कीजिए–

क्र.	क्रिया पद	उपसर्ग	धातु
	अभिनन्देत् परिज्ञायते अनुधावामि अनुवर्तसे आगच्छथ: उच्चरन्ति		

2. प्रत्येक उपसर्ग से दो सार्थक शब्द बनाइयेः–

I. अव ....
II. परा ....
III. सम् ....
IV. सु ....
V. दुर् ....

3. ' हृ ' धातु में विभिन्न प्रत्यय जोड़ने पर इस प्रकार शब्द बनेंगें–

उपसर्ग	धातु	क्रिया पद	अन्य पद
प्र	हृ.	प्रहरति	प्रहारः
आ	हृ	आहरति	आहारः
सम्	हृ	संहरति	संहारः
वि	हृ	विहरति	विहारः

इसी प्रकार निम्नलिखित उपसर्गो में गम् धातु जोड़कर विभिन्न शब्द बनाइयेः–

उपसर्ग	धातु	क्रिया पद	अन्य पद
अनु	गम्	....	अनुगामी
उप	गम्	....	....
अव	गम्	....	....
आ	गम्	....	....
निर्	गम्	....	निर्गतः

————0000————

अपठित गद्यांश

संस्कृत भाषा में छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति क्षमता, भावप्रवणता, शब्द भण्डार एवं स्वाभाविक चिन्तनशीलता के विकास के लिए पाठ्य पुस्तक में निहित गद्य पाठों के अतिरिक्त कुछ अपठित गद्यांश दिये जा रहे हैं। विषय अध्यापक इन गद्यांशों को आधार मानकर अन्य अपठित गद्यांशों का अभ्यास छात्रों को करा सकेंगे।

अपठित गद्यांश के अन्तर्गत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लेखन, सारांशीकरण, भावार्थ प्रकटीकरण तथा प्रश्नों को समझकर सही उत्तर संस्कृत में लिख सकेंगे।

गद्यांश–1.

अस्माकं जीवने यः समयः अतीतः स तु गतः, अतः तस्य विषये चिन्ता न करणीया। अवशिष्टं जीवनं सार्थकं कुर्याम। दिने–दिने स्वार्थः न्यूनः भवेत्, परार्थः अधिकाधिकः भवेत्। अस्मिन्नेव सुखस्य रहस्यमस्ति। स्वस्मै स्वल्पं, समाजाय सर्वस्वम् इति उक्तेः अनुसारं जीवने एव जीवनस्य सार्थकता अस्ति। एवं जगत् इतः अपि सुन्दरतरं भवेत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. प्रतिदिनं कः न्यूनः भवेत् ?

II. प्रतिदिनं कः अधिकाधिकः भवेत् ?

III. वयं कस्मै सर्वस्वम् अर्पयाम ?

IV. इतः अपि सुन्दरतरं किं भवेत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

जीवनस्य सार्थकता कस्याः उक्तेः अनुसारं जीवने अस्ति ?

3. यथानिर्देशं उत्तरत–

I. 'अतीतः' इति पदस्य किं समानार्थकं पदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

II. 'अवशिष्टम्' इति पदं कस्य पदस्य विशेषणम् ?

III. 'तस्य विषये' इत्यत्र 'तस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

IV. 'अस्मात्' इति स्थाने किम् अव्यय पदं प्रयुक्तम् ?

गद्यांश–2

मातृभूमिः बहुविधैः द्रव्यैः अस्मान् उपकरोति। तस्यै अस्माकमपि कर्तव्यं यत् वयं कायेन, मनसा, वाचा धनेन च स्वमातृभूमेः उन्नतिं कुर्याम। देशाय अस्माकं देशवासिनां हृदयेषु प्रेम भवेत्। मातृभूमिं प्रति सम्मानं भवेत्। अतएव कथितम्–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' ।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. का अस्मान् उपकरोति ?

II. वयं कस्याः उन्नतिं कुर्याम ?

2. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'द्रव्यैः' अस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

II. 'वयम्' अस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

III. 'अवनतिम्' अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

IV. 'तस्यै अस्माकं कर्तव्यम् अस्ति' अस्मिन् वाक्ये तस्यै इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. मातृभूमिः कथम् अस्मान् उपकरोति ?

II. मातृभूम्यै अस्माकं किं कर्तव्यम् अस्ति ?

III. गद्यांशस्य उपयुक्त शीर्षकं चिनुत?

IV. गद्यांशस्य सारांशीकरणं कुरूत ?

गद्यांश 3

संसारे कोऽपि बालः न जानाति यत् कि सद्वृत्तम् किं च असद्वृतम्। बालस्तु ज्येष्ठान् वृद्धान च पश्यति। ते वयोवृद्धाः यथा–यथा आचरन्ति बालोऽपि तथैव आचरति। शिष्टानां वंशेषु वृद्धाः युवानः बालाः, महिलाश्च सर्वे परस्परं सभ्यतायाः आलपन्ते, ते अन्योन्यं सम्मानयन्ति। अशिष्टानां वंशेषु तु एतादृशः व्यवहारः न दृश्यते।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(1) केषां वंशेषु सर्वे सभ्यतायाः आलपन्ते ?

(2) कः सद्वृत्तम् असद्वृतं च न जानाति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. बालः कान् कान् पश्यति ?
II. बालाः कथं आचरन्ति ?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'जानाति' अस्य किं कर्तृपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
II. 'तथा' अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
III. 'सदाचरणम्' इत्यर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः ?
IV. 'ते' इति कर्तृपदस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

गद्यांश 4

दुर्लभमेतत् मानुषं जन्म पुरुषार्थचतुष्टस्य साधनम्। सर्वेषां कामानामाप्तिः धर्माचरणञ्च पुनः शरीरेणैव मानवः कर्तुं शक्नोति। शरीरमेव आत्मनः निवासस्थानम्। मानवः स्वव्यक्तित्वानुरूपमेव निवासस्थानमिच्छति एवं ह्यात्मनापि स्वस्थं शरीरमेवाभिलष्यते। केनचित् उक्तम् अपि शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. मानुषं जन्म कस्य साधनम् ?
II. केन मानवः धर्माचरणं कर्तु शक्नोति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. मानवः कीदृशं शरीरम् एव अभिलष्यते ?
II. आत्मनः निवासस्थानं किम् ?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'इच्छा' इत्यर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः ?
II. 'मानवः' अस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
III. 'मानव' स्वव्यक्तित्वानुरूपमेव निवासस्थानमिच्छति, अस्मिन् वाक्ये किम् अव्यय पदं प्रयुक्तम्?
IV. 'मानुषम्' अस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

गद्यांश 5

जनानां लोकानां वा तन्त्रं शासनं जनतन्त्रं वा कथ्यते। लोकतन्त्रे जनानां कल्याणम् एवं शासनस्य प्रमुखं कार्यं मन्यते। अत्र प्रत्येकस्य जनस्य एव महत्त्वम्। भाषणे लेखने च अत्र पूर्णं स्वातन्त्र्य् भवति। व्यवहारे केचन दोषाः अपि दृश्यन्ते। एतेषां दोषाणां दूरीकरणम् अनिवार्यम्। एतदर्थं सर्वेभ्यः शिक्षा अनिवार्या। शिक्षां विना लोकतन्त्रं सुरक्षितं न भवति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. लोकतन्त्रे केषां कल्याणं शासनस्य प्रमुखं कार्यं भवति ?
II. लोकतन्त्रे दोषान् दूरीकर्तुं किम् अनिवार्यम् अस्ति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. लोकतन्त्रे कस्य महत्त्वं प्रमुखम् ?
II. कां विना लोकतन्त्रं सुरक्षितं न भवति ?
III. गद्यांशस्य साराशं कुरुत।

3. यथानिर्देशम् उत्तरत–

I. 'प्रमुखं कार्यम्' इति पदयोः विशेषणपदं किम् ?
II. 'जनानां शासनं जनतन्त्रं कथ्यते' इति वाक्ये क्रियापदं किम् ?
III. 'जनतन्त्रम्' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
IV. 'गुणानाम्' इति पदस्य किं विलोमपदम् अस्मिन् गद्यांशे प्रयुक्तम् ?
V. गद्यांशस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत।

––––0000––––

अशुद्धि संशोधनम्

भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में श्रवण, पठन, लेखन व वाचन कौशल का विकास करना है। संस्कृत शिक्षण में अध्यापकों को छात्रों में संस्कृत भाषा के शुद्ध लेखन व उच्चारण पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। इन्हीं त्रुटियों में सुधार हेतु अशुद्धि संशोधनम् नामक प्रकरण दिया जा रहा है। इसके माध्यम से पुरूष, कर्ता, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण एवं विभक्ति आदि में सम्भावित अशुद्धियों को उदाहरण एवं अभ्यास के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकरण का छात्रों को भली भॉति अभ्यास कराया जाए तो निश्चय ही छात्र संस्कृत में शुद्ध वाक्य लिखने में समर्थ हो सकेंगे तथा सम्भावित अशुद्धियों के निवारण करने की क्षमता विकसित होगी।

अशुद्धवाक्यम्– विद्यालये शताः छात्राः सन्ति।

शुद्धवाक्यम् – विद्यालये शतं छात्राः सन्ति। (शतं नित्यम् एक वचने)

अशुद्धवाक्यम् – भवान् कुत्र गच्छन्ति।

शुद्धवाक्यम् – भवान् कुत्र गच्छति। (भवान् एकवचने)

अशुद्धवाक्यम् – गुणवान् जनः प्रीतिपात्रः भवति।

शुद्धवाक्यम् – गुणवान् जनः प्रीतिपात्रम् भवति। (पात्रम् सर्वदा नपुंसकलिंगे)

अशुद्धवाक्यम् – अयं कन्या चतुरा अस्ति।

शुद्धवाक्यम् – इयं कन्या चतुरा अस्ति।(कन्या कारणात् इयम्)

अशुद्धवाक्यम् – पयः मधुरः अस्ति।

शुद्धवाक्यम् – पयः मधुरम् अस्ति।(पयः कारणात् नपुंसकलिंगे)

अशुद्धवाक्यम् – त्रयः बालकः पठति।

शुद्धवाक्यम् – त्रयः बालकाः पठन्ति। (त्रयः बहुवचने)

अशुद्धवाक्यम् – सुशीला पुस्तकं पठितवान्।

शुद्धवाक्य– सुशीला पुस्तकं पठितवती।(सुशीला–स्त्रीलिंगे)

अशुद्धवाक्यम्– इयं कन्या गुणवान् अस्ति।

शुद्धवाक्यम्– इयं कन्या गुणवती अस्ति। (कन्या स्त्रीलिंगे)

अशुद्धवाक्यम्– पितरौ पुत्रं पालयन्ति।

शुद्धवाक्यम्– पितरौ पुत्रं पालयतः। (क्रियापदं कर्तृपदस्य अनुसारेण)

अशुद्धवाक्यम्– वयं कुत्र गच्छन्ति।

शुद्धवाक्यम्–	वयं कुत्र गच्छामः। (क्रियापदं कर्तृपदानुसारेण)
अशुद्धवाक्यम्–	अहं ह्यः गमिष्यामि।
शुद्धवाक्यम्–	अहं ह्यः अगच्छम। (ह्यः भूतकाले)
अशुद्धवाक्यम्–	श्वः तौ तत्र न अगच्छताम्।
शुद्धवाक्यम्–	श्वः तौ तत्र न गमिष्यतः।(श्वः लृट्लकारे)
अशुद्धवाक्यम्–	वयं भारतीयाः अस्मि।
शुद्धवाक्यम्–	वयं भारतीयाः स्मः।(क्रियापदं कर्तृपदानुसारेण)
अशुद्धवाक्यम्–	सः पुष्पं दृष्टः।
शुद्धवाक्यम्–	सः पुष्पं दृष्टवान्।(कर्तृवाच्ये क्तवतु)
अशुद्धवाक्यम्–	सा जलं पिबिष्यति।
शुद्धवाक्यम्–	सा जलं पास्यति।('पा' धातुलृट्लकारे–पास्यति)
अशुद्धवाक्यम्–	एकदा कः वृद्धा अपतत्।
शुद्धवाक्यम्–	एकदा एका वृद्धा अपतत्। (विशेषणं विशेष्यानुसारम्)
अशुद्धवाक्यम्–	ते मोहनस्य पुत्राणि सन्ति।
शुद्धवाक्यम्–	ते मोहनस्य पुत्राः सन्ति।(पुत्राः पुल्लिङ्.गम्)
अशुद्धवाक्यम्–	चत्वारः बालिकाः लिखन्ति।
शुद्धवाक्यम्–	चतस्रः बालिकाः लिखन्ति। (विशेषणं विशेष्यानुसारम्)
अशुद्धवाक्यम्–	यः श्रमं करोति सः सुखं लभति।
शुद्धवाक्यम्–	यः श्रमं करोति सः सुखं लभते। ('लभ्' धातु आत्मनेपदम्)
अशुद्धवाक्यम्–	वयं विद्यालये गच्छामः।
शुद्धवाक्यम्–	वयं विद्यालयं गच्छामः। ('गम्' कारणात् द्वितीया)
अशुद्धवाक्यम्–	सः चौरेण बिभेति।
शुद्धवाक्यम्–	सः चौरात् बिभेति। ('भी' कारणात् पञ्चमी)
अशुद्धवाक्यम्–	कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।
शुद्धवाक्यम्–	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।(निर्धारण कारणात् षष्ठी)

अभ्यासः

अधोलिखितवाक्यानि शुद्धं कुरुत–

1. कर्तृक्रियासम्बन्धिन्यः अशुद्धयः

    1. त्वं मम मित्रम् अस्ति।
    2. भवान् किम् खादसि।
    3. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमति तत्र देवताः।
    4. अहम् विद्यालयं पठति।
    5. कृष्णः पुस्तकं ददति।
    6. श्वः तौ तत्र न गमिष्यथः।
    7. पुरा वीरवरो नाम राजा आसन्।
    8. त्वम् अपि इदं पुस्तकं पठतु।

2. विशेषणसम्बन्ध्यः अशुद्धयः–

    1. मनोहरं बालः गच्छति।
    2. दीर्धः नदी वहति।
    3. सर्वे फलानि मधुराणि सन्ति।
    4. योग्यः मित्रं पठति।
    5. तस्य कलत्रं सुन्दरी आसीत्।
    6. तत् धेनुः कस्य अस्ति।

3. वाच्यसम्बन्ध्यः अशुद्धयः–

    1. सः ग्रामे गम्यते।
    2. रामेण निबन्धः लिखति।
    3. तेन पुस्तकं पठति।
    4. सा चित्रं दृष्टम्।
    5. रामः रावणः उक्तवान्।

4. विभक्तिसम्बन्ध्यः अशुद्धयः –

    1. शङ्करं नमः।
    2. मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
    3. विद्युतस्य विना नगरेषु शून्यता भवति।
    4. छात्राः गुरवे प्रश्नं पृच्छति।
    5. सः सिंहेन बिभेति।
    6. सः याचकः पादस्य पंगुः अस्ति।
    7. त्वां भक्तिः कथं न रोचते।
    8. पिता पुत्रीं स्निह्यति।

————0000————

पत्र लेखनम्

अस्वास्थकारणात् अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रम्

सेवायाम्,

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः
शासकीय उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः
रायपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः–   अवकाशाय प्रार्थना पत्रम्।

महोदय!

सविनयं निवेद्यते यत् अहं अतिदिवसात् ज्वरग्रस्तो अस्मि, बलवती शिरोवेदना च मां व्यथयति। ज्वरकृततापेन कार्श्यम् उपगतो अस्मि। अतो अद्य विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थो अस्मि।

अतः कृपया 4.3.2016 दिनाङ्कात् 7.3.2016 दिनाङ्कपर्यन्तं चतुर्–दिनानाम् अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यति।

दिनाङ्क : 03.03.3016

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः
नाम – पङ्कजः तिवारी
कक्षा – दशम
शा–उ–मा–विद्यालय–रायपुरम्,
छत्तीसगढम्

ग्रामगमनार्थम् अवकाशाय प्रार्थना–पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः

शासः उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

रायगढम्, छत्तीसगढम्

विषयः अवकाशस्य हेतोः प्रार्थना–पत्रम्।

मान्वयर!

विनम्र निवेदनम् अस्ति यत् ज्येष्ठमासस्य पञ्चम्यां तिथौ मम मातुलस्य विवाहः सम्पत्स्यते। विवाहतिथेः एकदिन–पूर्वमेव मया तत्र प्राप्तव्यम्।

अतः 06.03.2016 दिनाङ्कात् 08.03.2016 दिनाङ्कपर्यन्तं दिनत्रयस्य अवकाशं प्रदाय अनुगृह्णातु भवान् इति।

दिनाङ्क : 05.03.3016

भवतः आज्ञाकारिणी शिष्या

नाम – अपर्णा पटेलः

कक्षा – दशम

शा–उ–मा–विद्यालय रायगढम्, छत्तीसगढम्

स्थानान्तरणप्रमाणपत्रं प्राप्तुं प्राचार्यं प्रति प्रार्थनापत्रम्

प्रतिष्ठायाम्

श्रीमान् प्राचार्यः महोदयः

शासकीय उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

बिलासपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः – स्थानान्तरणप्रमाणपत्रं प्राप्तुम् आवेदनपत्रम्।

महानुभाव!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् मम पिता छत्तीसगढस्य सर्वकारे एकः शिक्षकः अस्ति, तस्य स्थानान्तरणं बिलासपुरनगरात् बालोदनगरमभवत्। तस्मात् अहमपि बालोदनगरं गत्वा अध्ययनं कर्तुम् इच्छामि।

अतः अहं भवन्तं निवेदयामि यत् मह्यं स्थानान्तरणं प्रमाणपत्रं प्रदाय कृपां करोतु।

दिनाङ्क : ....

प्रार्थी

नाम – अभिषेकः सिदारः

कक्षा – दशमी

शा–उ–मा–विद्यालय–बिलासपुरनगरम्,

छत्तीसगढम्

द्वितीया अंकसूची प्राप्त्यर्थं प्रार्थना–पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्यः महोदयः

शासकीय–उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

अम्बिकापुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः– **द्वितीयां अंकसूचीं प्राप्तुं प्रार्थनापत्रम्।**

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यद्यहं भवतः विद्यालये दशम्यां कक्षायां छात्रः अस्मि। त्रुटिवशात् नवम्याः कक्षायाः मम लब्धाङ्कपत्रं विलुप्तम् अभवत्। कृपया तस्य द्वितीयप्रतेः प्रदातुं कृपां करोतु भवान्।

मम विवरणम् अधोलिखितम् अस्ति –

(1) नाम – रमेशः मिश्रः

(2) कक्षा – नवम

(3) परीक्षानुक्रमांकः 9545

(4) परीक्षा केन्द्रम् – शास–उच्च–माध्य–विद्यालय अम्बिकापुरम्

दिनाङ्क : ....

भवतः विनीतः शिष्यः

नाम – रमेशः मिश्रः

कक्षा – दशमी

शा.उ.मा.विद्यालय–अम्बिकापुरम्

छत्तीसगढम्

शुल्कक्षमापनार्थं प्राचार्यं प्रति पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्य महोदय
शासकीय–उच्च–माध्यमिक–विद्यालयः
जगदलपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः– **शुल्कमुक्तये प्रार्थना पत्रम्।**

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यदहं भवतः विद्यालये दशमकक्षायाः छात्रा अस्मि। मम पिता एकः लिपिकः अस्ति। तस्य मासिकं वर्तनं पञ्चसहस्ररूप्यकाणि मात्रमेव अस्ति। मम एकः भ्राता अष्टमकक्षायां भगिनी च पञ्चम्यां कक्षायां पठति। अस्माकं कुटुम्बस्य निर्वाहः अतीव काठिन्येन भवति।

अतः शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थयेऽहम्। आशासे अत्र भवान् मम एतां प्रार्थनां स्वीकृत्य अनुग्रहीष्यति।

दिनाङ्क : ....

भवतः विनीता शिष्या
नाम – सुधा साहू
कक्षा – दशमी
विद्यालय–शा.उच्च.माध्य.विद्यालयः,
जगदलपुरम्, छत्तीसगढम्

पुस्तकं प्रेषणाय प्रकाशकं प्रति पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्रबंधकः महोदयः

चौखम्बाप्रकाशनम् आगरा

विषयः– पुस्तकप्रेषणार्थं पत्रम्।

मान्यवर!

अहं दशम्याः कक्षायाः छात्रा अस्मि। भवता प्रकाशितम् ''अनुवाद रत्नाकरः'' नामकं पुस्तकं मया दृष्टम् तत्पुस्तकम् अहं क्रेतुम् इच्छामि। एतएव वी.पी.पी. द्वारा शीघ्रं प्रेषणीयम्।

धन्यवादः!

दिनाङ्क : ....

भवदीया

नाम – मनीषा चन्द्राकरः

कक्षा – दशमी

पत्रसङ्केतः शा.उच्च.माध्य.विद्यालयः,

कवर्धा, छत्तीसगढम्

स्वविद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति पत्रम्

स्थानम् – जगदलपुरतः
दिनाङ्क : ....

प्रियसखि सुमते!
नमस्ते!

अत्रकुशलं तत्रास्तु। भवत्याः पत्रं प्राप्तम्। अहम् अधुना स्वविद्यालयस्य वर्णनं कर्तुम् इच्छामि। मम विद्यालयः अतीव शोभनः अस्ति। मम विद्यालये विशालं क्रीडाक्षेत्रम्, समृद्धा प्रयोगशाला, सुन्दरः पुस्तकालयः च सन्ति। प्राचार्य–महोदयः अतीव कर्मठः व्यवहारशीलः चास्ति।

अस्माकं अध्यापकाः मनोयोगेन पाठयन्ति। सर्वे छात्राः अपि योग्याः सन्ति।

विस्तरेण पुनः लेखिष्यामि।

तव मित्रम्
नाम – सौम्यः भारद्वाजः
पत्र सङ्केतः – समताविहार, दन्तेवाडा नगरम्
छत्तीसगढम्

अभ्यासः

1. भवान् बीजापुर नगरे स्थितः सिद्धार्थः सोमः। भवतः मित्रं आनन्दः कश्यपः कोरिया नगरे वसति। तं परीक्षायां सफलतायै वर्धापन–पत्रं। कोष्ठकप्रदत्तपदानां सहायतया लिखत। (अपश्यम्, महती, सिद्धार्थः, आगतः, छात्रवृतिम्, तुभ्यम्, अधिकतरा, आनन्द!, तत्रास्तु, बीजापुरनगरतः)

....

स्थानम् ....

दिनाङ्क : 05.06.2016

प्रिय मित्र ....

सप्रेम नमस्ते।

अत्रकुशलं ....। अद्यैव तव परिणामः ....। तव सफलतां ज्ञात्वा मम मनसि.................................प्रसन्नता जाता। मम एषा प्रसन्नता .... जाता यदा अहं तव नाम योग्यता–सूचौ................। त्वया सप्त–शतम् अङ्काः प्राप्ताः। त्वं निश्चितरुपेण प्राप्स्यसि।

त्वया परिवारस्य विद्यालयस्य च नाम उज्जवलीकृतम्।

अस्याम् उज्जवल सफलतायाम् अहं .... हार्दिकं वर्धापनं यच्छामि उज्जवल–भविष्याय च कामये। मातृपितृचरणेषु प्रणामः।

तव अभिन्नहृदयं मित्रम्

....

....

2. प्राचार्यं प्रति शुल्क–क्षमापनार्थं लिखितेऽस्मिन् प्रार्थनापत्रे रिक्तस्थानानि मञ्जूषायां प्रदत्त–
–पदानां साहाय्येन पूरयत्।

सेवायाम्

प्राचार्य ....

शास–उच्च–माध्य–विद्यालयः

जशपुरनगरम्, छत्तीसगढम्

विषयः **शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थनापत्रम्।**

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् ....पिता एकः चतुर्थश्रेणी .... अस्ति। तस्य मासिक आयः अतीव ....अस्ति। येन परिवारस्य ....काठिन्येन भवति। मम परिवारे माता, पिता, द्वौ भ्रातरौ .... भगिनी च इति पञ्च ....सन्ति। अतः अहं भवन्तं ....यत् मम .... क्षमापयतु।

दिनांङ्क : 07.08.2016

भवदीय : ....

नाम – सोमनाथः

मञ्जूषाः–अध्ययन–शुल्कं, न्यूनः, मम एका, शिष्यः, निवेदयामि, कर्मचारी, सदस्याः, निर्वाहः, महोदयः।

––––0000––––

निबन्ध

(1) सदाचारः

1. सज्जनाः यानि–यानि सत्कार्याणि कुर्वन्ति, स सदाचारः उच्यते।
2. सदाचारी नरः कीर्तिं भूतिं च लभते।
3. प्रातः काले उत्थाय मातापितरौ, वृद्धान्, गुरून् च प्रणमेत्।
4. तेषाम् आज्ञां पालयेत्, तान् सेवेत च।
5. सदाचारिणः सर्वेषां प्राणिनामुपकारं करोति।
6. सदाचारेण मानवजीवनस्य सर्वविधा उन्नतिः भवति।
7. अतएव सदाचारः उन्नत्याः द्वारमस्ति।
8. सदाचारेणैव जनाः हितं मधुरं च वदन्ति।
9. सदाचार–युक्तो जनः सर्वत्र आदरं लभते।
10. सदाचारेण हीनो जनः सर्वत्र पशुतुल्यः भवति।
11. सदाचारपालनेन एव श्रीरामः मर्यादा पुरूषोत्तमोऽभवत्।
12. सदाचारेण एव महर्षिः दधीचिः गान्धि महोदयश्च यशः शरीरेण अद्यापि जीवितः।
13. सदाचारिणः सर्वत्र आदरं लभन्ते।
14. सदाचारस्य महिमानं वर्णयितुं कोऽपि न शक्नोति।
15. अतोऽस्माभिः सर्वतोभावेन सदाचारः पालनीयः।

(2) सुभाषचन्द्रः

1. विश्वेऽस्मिन् स्वतन्त्रतासेनानी सुभाषस्य नाम को न जानाति।
2. सः क्रान्तिकारी नेता आसीत्।
3. अस्य जन्म बङ्गप्रान्ते 1897 तमे जनवरी मासस्य 23 तारिकायाम् अभवत्।
4. अस्य पिता जानकीनाथ बोसः आसीत्।
5. बाल्यकालादेव बुद्धिमान धीरः साहसयुक्तः च आसीत्।
6. सः कालिकाता नगर्यां शिक्षां प्राप्तवान्।
7. सः असहयोगआन्दोलने संलग्नः अभवत्।
8. स्वातन्त्र्यार्थं प्रति सदा प्रयासरतः आसीत्।
9. सः शठेशाठ्यं समाचरेत् इति नीतिमनुसरितवान्।
10. 'आजाद हिन्द फौज' इत्याख्यां सेनां सङ्घटितवान्।
11. सः देशे हिन्दू–मुस्लिमयोः एकतायाः कृते फारवर्ड ब्लाक इत्यस्य स्थापना कृतवान्।
12. जर्मनी आकाशवाण्याः केन्द्रात् भारतीय जनेभ्यः स्वाधीनतायाः सन्देशं दत्तवान्।
13. सः आह्वानं अकरोत् – यूयं मह्यं रक्तमर्पयत अहं युष्मभ्यं स्वातन्त्र्यं दास्यामि।
14. भारतमातुः वीर–सपूतः आसीत्।
15. सः भारतीय जनानां प्रेरणा स्रोतः आसीत्।

(3) होलिकोत्सवः

1. होलिकोत्सवः सर्वजनानां कृते प्रियः उत्सवः अस्ति।
2. अयमुत्सवः भारतस्य प्रसिद्धः उत्सवः अस्ति।
3. पुरा हिरण्यकशिपुः नाम राजा अभवत्।
4. तस्य पुत्रः प्रह्लादः ईश्वरभक्तः अभवत्।
5. हिरण्यकशिपुः स्वपुत्रं मारयितुम् अयतत।
6. परन्तु प्रहलादः ईश्वर प्रसादेन सुरक्षितः आसीत्।
7. हिरण्यकशिपुः स्वभगिनीं होलिकां प्रह्लादस्य वधस्यकृते न्ययोजयत्।
8. अग्नौ होलिका तु भस्मसात् अभवत् परं प्रहलादः सुरक्षित आसीत्।
9. अन्ते च भगवान् नृसिंहः हिरण्यकशिपुम् अमारयत्।
10. होलिका दहनमुद्दिश्य होलिकोत्सवः प्रारभत।
11. अयमुत्सवः फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां मन्यते।
12. होलिकात्सवे जनाः परस्परं रङ्गरञ्जितं जलं प्रक्षिपन्ति।
13. जनाः उत्सवावसरे नृत्यन्ति गायन्ति च।
14. आबालवृद्धाः हास्यव्यंग्य संलापान् कुर्वन्ति।
15. अतः इदं पर्व मानवानां कृते अद्वितीयम् उपहारमस्ति।

(4) बीटा (क्रिकेट)

1. जीवने क्रीडायाः विशिष्टं स्थानम् अस्ति।
2. यथा जीवने भोजनम् आवश्यकं भवति तथैव क्रीडापि आवश्यकी अस्ति।
3. क्रीडासु बीटाकीडा प्रमुख महत्वपूर्णा चास्ति।
4. वर्तमाने बीटाक्रीडा विश्वस्य लोकप्रिया क्रीडा अस्ति।
5. बीटा क्रीडा प्रतियोगिता विश्वस्तरीया भवति।
6. बीटा क्रीडायाः जन्म आंग्लदेशे मन्यते।
7. बीटा महार्ह क्रीडा अस्ति।
8. बीटायाः प्राङ्ग्.णम् अति विशालं भवति।
9. बीटा प्राङ्ग्.णे त्रयः स्टम्पाः (दण्डाः) एकं कन्दुकं भवति।
10. बीटा क्रीडायाः क्रीडकानां द्वे दले भवतः।
11. प्रत्येके दले एकादशः क्रीडकाः भवन्ति।
12. यः समूहः अधिकान् धावनाङ्कान् प्राप्नोति सः विजयी भवति।
13. निर्णायकस्य निर्णयं सर्वे क्रीडकाः मन्यन्ते।
14. विजयी क्रीडकेभ्यः पुरस्कारः दीयते।
15. क्रीडया विश्वबन्धुत्वं संवर्धते।

(5) महाकविः कालिदासः

1. महाकविकालिदासस्य नाम अस्मिन् जगति को न जानाति।
2. इंग्लैण्डवासिनः तं शेक्सपीयर तुल्यं कथयन्ति।
3. कालिदासः विश्वस्य श्रेष्ठतमः कविः आसीत्।

4. सः कविकुलगुरुः कथ्यते।
5. सः महाराजस्य विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकः आसीत्।
6. अस्य विवाहः विद्योत्तमा नाम राजकन्यया सह अभवत्।
7. कालिदासेन रचिताः सप्तग्रन्थाः प्रसिद्धाः।
8. रघुवंशं कुमारसंभवं च द्वे महाकाव्ये स्तः।
9. त्रीणि नाटकानि मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च सन्ति।
10. द्वे खण्डकाव्येऽपि स्तः ऋतुसंहारं मेघदूतम् च।
11. शकुन्तलानाटकम् अनेकासु भाषासु अनूदितम्।
12. सर्वाः ग्रन्थाः अत्यन्ताः सरसाः सन्ति।
13. तस्य 'उपमा कालिदासस्य' इति उक्तिः प्रसिद्धा।
14. कालिदासः रससिद्धः कविरस्ति।
15. सत्यमेव कविरयं में परमप्रियः कविः अस्ति।

(6) मम प्रदेशः (छत्तीसगढः)

1. मम प्रदेशः छत्तीसगढः अस्ति।
2. छत्तीसगढ प्रदेशः 2000 तमे खीष्टाब्दे नवम्बर–मासस्य प्रथमदिनाङ्क सुघटितः।
3. भारतवर्षस्य मध्य दक्षिण भागे छत्तीसगढ प्रदेशः विराजते।
4. अस्मिन् प्रदेशे प्रभूतमन्नमुत्पन्नं भवति।
5. अतः छत्तीसगढप्रदेशः ' धान का कटोरा' इति उच्यते।
6. छत्तीसगढ़ प्रदेशः अरण्यानां प्रदेशोऽस्ति।
7. वनेभ्यः वयं काष्ठानि–फलानि–औषधयः च प्राप्नुमः।
8. वनेषु खगाः मृगाः व्याघ्राः च निवसन्ति।
9. छत्तीसगढप्रदेशस्य, प्रमुखासु नदीषु महानदी, शिवनाथ, हसदो, ईब, पैरी, केलो, उदन्ती, प्रभृतयः सन्ति।
10. छत्तीसगढप्रदेशस्य राजधानी रायपुरनगरम् अस्ति।
11. राजिमनगरं छत्तीसगढस्य प्रयागरुपेण शोभते।
12. कवर्धा क्षेत्रे भोरमदेवः छत्तीसगढ़स्य खजुराहो नाम्ना विख्यातः तथा च सिरपुरं छत्तीसगढस्य काशी इति अभिधीयते।
13. प्रदेशस्य बस्तरक्षेत्रे आदिवासिजनानां बाहुल्यमस्ति।
14. इस्पात–नगरी–भिलाई इति नगरं लौहादयः खनिजोद्योगानां कृते प्रसिद्धम्।
15. छत्तीसगढस्य लोकसंस्कृतिः अतीव समृद्धा।

(7) पर्यावरणम्

1. वयं वायुजलमृदाभिः आवृते वातावरणे निवसामः।
2. एतदेव वातावरणं पर्यावरण कथ्यते।
3. पर्यावरणेनैव वयं जीवनोपयोगिवस्तुनि प्राप्नुमः।
4. जलं वायुः च जीवने महत्त्वपूर्णौ स्तः।
5. साम्प्रतं शुद्ध–पेय–जलस्य समस्या वर्तते।
6. अधुना वायुरपि शुद्धं नास्ति।
7. एवमेव प्रदूषित–पर्यावरणेन विविधाः रोगाः जायन्ते।

8. पर्यावरणस्य रक्षायाः अति आवश्यकता वर्तते।
9. प्रदूषणस्य अनेकानि कारणानि सन्ति।
10. औद्योगिकापशिष्ट –पदार्थ–उच्च–ध्वनि–यानधूम्रादयः प्रमुखानि कारणानि सन्ति।
11. पर्यावरणरक्षायै वृक्षाः रोपणीयाः।
12. वयं नदीषु तडागेषु च दूषितं जलं न पतेम्।
13. तैल–रहितवाहनानां प्रयोगः करणीयः।
14. जनाः तरुणां रोपणम् अभिरक्षणं च कुर्युः।

(8) ग्राम्य जीवनम्

1. भारतवर्षः ग्रामप्रधानः देशः अस्ति।
2. अधिकाः जनाः ग्रामे एव निवसन्ति।
3. ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति।
4. ग्रामाणां जलवायुः स्वास्थ्यप्रदः भवति।
5. ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति।
6. ग्रामे प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति।
7. ग्रामान् परितः शस्यश्यामला धरित्री राजते।
8. परिश्रमशीलाः ग्रामीणाः धान्यादिकम् उत्पादयन्ति।
9. ग्रामे शुक–हंस–मयूर– कोकिलादयः पक्षिणः कूजन्ति।
10. हरिण–गो–महिष–मेषादयः पशवः च चरन्ति।
11. ग्राम्य–जीवनं सदाचार सम्पन्नं धार्मिकं च भवति।
12. ग्राम्य–जीवनं सुकरं सुखकरं च भवति।

(9) मम दिनचर्या

1. अहं प्रातः काले उत्तिष्ठामि।
2. ईश्वरं स्मरामि।
3. मातरं पितरं च नमामि।
4. दन्तधावनं कृत्वा मुख–प्रक्षालनं करोमि।
5. पश्चात् अध्ययनं करोमि।
6. प्रतिदिनं भ्रमणाय उद्यानं गच्छामि।
7. तत्र योगं व्यायामं च करोमि।
8. ततः गृहं आगत्य स्नानं करोमि।
9. भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छामि।
10. तत्र शिक्षकान् प्रणमामि।
11. विद्यालये विविध–विषयानां अध्ययनं करोमि।
12. अवकाशानन्तरं गृहं प्रति आगच्छामि।
13. क्रीडाङ्गणे मित्रैः सह खेलामि।
14. गृहं प्रति निवृत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य भोजनं करोमि।
15. अध्ययनं गृहकार्यं च कृत्वा शयनं करोमि।

R628EM

––––0000––––